जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

चूरू

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 वर्षः 17 संख्याः 135 प्रभात चूरू, गुरूवार 11 सितम्बर, 2025 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

सुप्रीम कोर्ट के मु. न्यायाधीश गवई ने चेताया राज्यपालों की भूमिका पर

मुख्य न्यायाधीश ने नेपाल का उदाहरण देकर कहा, अगर सरकार के दो स्तम्भों, विधायिका व प्रशासन में आपस में गतिरोध अनियंत्रित रहे तो उसका परिणाम अस्थिरता व अनिश्चितता होती है, जो पड़ोसी देश नेपाल में देखी जा रही है।

- जाल खंबात -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली 10 सितम्बर। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को एक दुर्लभ और कडी टिप्पणी करते हुए केन्द्र सरकार को चेतावनी दी है कि राज्यपालों द्वारा राज्य विधेयकों को मंजूरी देने में हो रही देरी पर विचार करते समय उसे भारत के पड़ोस, विशेष कर नेपाल, में हो रही घटनाओं को ध्यान में रखना चाहिए। भारत के मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई ने राष्ट्रपति से जुडे एक संदर्भ की सुनवाई के दौरान यह टिप्पणी की, जिसने राजनीतिक और क़ानूनी हलकों में हलचल मचा दी है। कहीं चिंता जताई जा रही है तो कहीं इसे सही ठहराया जा रहा है।

- **जैसा कि, विदित ही है, सुप्रीम कोर्ट के समक्ष यह मामला प्रस्तुत है, कि क्या राज्यपाल असीमित समय तक उनके सम्मुख विधानसभा से पारित विधेयक को पेंडिंग रख सकते हैं।**
- **मुख्य न्यायाधीश की इस मामले में चेतावनी जैसी टिप्पणी से विपक्ष काफी प्रसन्न है, तथा यह महसूस कर रहा है, जैसे कि सुप्रीम कोर्ट ने इस प्रकरण में उनके पक्ष व तर्क का मूक समर्थन किया है।**

यह मामला सुप्रीम कोर्ट के 12 अप्रैल के आदेश से जुड़ा है, जिसमें राज्यपालों और भारत के राष्ट्रपति के लिए राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों से निपटने की समय सीमा तय की गई थी। इस फ़ैसले का मक़सद था, ऐसे विधेयकों पर अनिश्चित काल तक कोई कार्रवाई नहीं होने की प्रवृत्ति को रोकना।

केन्द्र की ओर से पेश हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने राज्यपालों की विवेकाधिकार शक्तियों का ज़ोरदार बचाव किया। लेकिन मुख्य न्यायाधीश गवई की अध्यक्षता वाली पीठ ने सवाल उठाया कि राज्यपाल महीनों तक विधेयकों को रोकर क्यों रखते हैं, कभी-कभी तो संविधान में तय एक महीने की सीमा से भी अधिक समय तक।

इसी संदर्भ में अदालत ने यह नसीहत दी, "हमें यह देखना होगा कि हमारे पड़ोस में क्या हो रहा है"। क़ानून विशेषज्ञों ने इसे नेपाल की ओर इशारा माना, जहाँ कार्यपालिका और विधायिका के बीच बार-बार के टकराव ने राजनीतिक अस्थिरता पैदा की है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा नेपाल का हवाला देना, याद दिलाने और चेतावनी, दोनों के तौर पर देखा जा रहा है, कि भारत सरकार को भी ऐसे संस्थागत टकराव से बचना होगा।

इस टिप्पणी ने तीव्र राजनीतिक प्रतिक्रिया को जन्म दिया है। आम आदमी पार्टी के नेता संजय सिंह ने कोर्ट की बात का स्वागत करते हुए मोदी सरकार से अपील की कि संघीय ढाँचे को कमज़ोर करने के ख़तरे को गंभीरता से लें। उनका कहना था कि राज्यपालों को विपक्ष-शासित राज्यों में विधायी प्रक्रिया रोकने के लिए लगातार इस्तेमाल किया जा रहा है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नेपाल में 15,000 कैदी जेल से फरार

काठमांडू, 10 सितंबर। नेपाल में बीते दो दिनों में भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन की उग्र लहर के चलते जेलों में बंद करीब 15 हज़ार से ज्यादा कैदी फरार हो चुके हैं।

इसे विश्व इतिहास में जेल तोड़कर भागने की सबसे बड़ी घटना माना जा रहा है। गिनीज़ वर्ल्ड रिकार्ड के अनुसार इससे पहले 1979 में ईरान में हुए तख्ता पलट में करीब 11 हज़ार कैदी भाग गए थे।

- **हिंसक प्रदर्शनों के बीच आंदोलनकारियों ने जेलों पर धावा बोल दिया। इसमें 15,000 से ज्यादा कैदियों के भागने की खबर है। जेल से भागने की यह संभवतया इतिहास की सबसे बड़ी घटना है।**

जेलें तोड़ने की शुरुआत तब हुई जब युवा प्रदर्शनकारियों ने कई जेलों में धावा बोल दिया और उनके प्रशासनिक भवनों में आग लगा दी। इन लोगों ने जेल के दरवाज़े जबरन खोल दिए। बुधवार शाम तक, प्रारंभिक रिपोर्टों ने पुष्टि की कि 25 से ज़्यादा जेलों से 15,000 से ज़्यादा कैदी भाग गए थे, जिनमें से केवल कुछ ही स्वेच्छा से लौटे या उन्हें फिर से गिरफ़्तार किया गया।

पोलैण्ड ने रुस के ड्रोन को मार गिराने का दावा किया

रुस ने, जैसा कि विदित ही है, अब तक का सबसे बड़ा प्रहार किया यूक्रेन पर, ड्रोन व हवाईजहाजों की बमबारी से

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 सितंबर। हर गुज़रते दिन के साथ यूरोप में शांति कम होती जा रही है तथा एक गंभीर युद्ध छिडने की आशंकाएं बढ़ती जा रही हैं। प्रथम विश्व युद्ध की पूर्व संध्या पर ब्रिटेन के तत्कालीन विदेश सचिव अर्ल ग्रे ने भविष्यवाणी करते हुए शोक व्यक्त किया था, कि "यूरोप भर में रोशनी बुझ रही है। हो सकता है कि हम इन्हें अपनी ज़िंदगी में दोबारा जलते हुए न देखें।"

पोलैंड ने बुधवार को घोषणा की कि उसने रविवार को अपने आसमान में रूसी ड्रोन मार गिराए, जब रूस ने यूक्रेन पर अब तक का सबसे बड़ा हवाई हमला किया। शांति और समाधान की ओर कुछ छोटे कदम उठने के बजाय, हालात और अंधकारमय होते जा रहे हैं।

स्थिति और ख़तरनाक बनती जा रही है, क्योंकि एक पक्ष, पश्चिमी सहयोगी और अमेरिका, केवल रूस के खिलाफ कार्रवाई की धमकियाँ दे रहा है, वहीं दूसरी ओर रूस बिना किसी डर और रोक-टोक के अपनी स्थिति और सख़्त कर रहा है, मानो उसे पश्चिमी धमकियों की कोई परवाह ही नहीं।

सैन्य गतिविधियों में तेजी और व्यापक सक्रिय टकराव पूरे महाद्वीप में किसी बड़े संघर्ष की आशंका को और बढ़ा रहे हैं। रूस साफ़ तौर पर एक निर्णायक जीत दिखाने की बेचैनी में शत्रुता का स्तर बढा रहा है और यूक्रेन को नुक़सान पहुँचा रहा है। अब पड़ोसी देशों को भी इसका खामियाजा भुगतना पड रहा है।

- **पोलैण्ड के हवाई क्षेत्र (एयर स्पेस) में जो ड्रोन पहुंचे, वो रुस के यूक्रेन पर किये गये भारी ड्रोन आक्रमण के, बिखरे हुए ड्रोन ही हैं।**
- **पोलैण्ड, नाटो देशों का आव्हान कर रहा है, कि वे अपने नाटो के सदस्य के रुप में किये वादे को पूर्ण करने की दृष्टि से अब रुस पर आक्रामक कार्यवाही करें।**
- **रुस इन वादों की पूर्ति तथा और आक्रामक होने की धमकी को कतई गंभीरता से नहीं ले रहा है।**
- **ये सब संकेत हैं, तृतीय विश्वयुद्ध की तारीख नज़दीक होने के।**
- **अमेरिका, यूरोपीय देशों को प्रोत्साहित कर रहा है, कि चीन व भारत पर दंडात्मक टैरिफ लगाये।**
- **हालात, सभी देशों को युद्ध की ओर घसीट रहे हैं।**

पोलैंड अब शत्रुता के विस्तार में सबसे आगे खड़ा दिखाई दे रहा है, और पोलैण्ड के आसमान में अब तक हुई घुसपैठ, उत्तरी एटलांटिक संधि संगठन 'नाटो' को, अपने सामूहिक रक्षा समझौते को लागू करने की चुनौती दे रही है। नाटो सदस्य देशों ने संगठन में शामिल होते समय शपथ ली थी कि किसी एक सदस्य पर हमला सभी पर हमला माना जाएगा।

पुतिन यह संदेश दे रहे हैं कि वे किसी भी क़ीमत पर यूक्रेन में अपना लक्ष्य हासिल करने पर आमादा हैं। तीव्र होते संघर्ष से वे यह जताना चाहते हैं कि अगर यूरोपीय सहयोगी अपने सैनिक भेजते हैं या और सक्रिय हस्तक्षेप करते हैं, तो वे उनसे भी लड़ने को तैयार हैं।

पश्चिमी यूरोपीय देशों ने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्या नेपाल की पहली चीफ जस्टिस सुशीला कार्की अंतरिम सरकार की मुखिया होंगी?

जैनरेशन ज़ैड ने सुशीला कार्की का नाम प्रस्तावित किया है पर अभी चर्चा चल रही है

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 सितंबर। सरकार और राजनीतिक दलों के नेताओं के कथित भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद को लेकर हुए हिंसक विरोध प्रदर्शनों के बाद, नेपाल की पूर्व मुख्य न्यायाधीश सुशीला कार्की अब अंतरिम सरकार का नेतृत्व करने के लिए सबसे मजबूत उम्मीदवार के रूप में उभर रही हैं।

उनका नाम जेनरेशन ज़ैड द्वारा प्रस्तावित किया गया है और इस पर विचार-विमर्श अभी भी जारी है।

युवा पीढ़ी के हिंसक प्रदर्शनों ने नेपाल को अराजकता में डाल दिया, जिससे पूर्व प्रधानमंत्री के पी शर्मा ओली को कल इस्तीफा देना पड़ा। इसके बाद नेपाली सेना ने स्थिति को नियंत्रित करने के लिए हस्तक्षेप किया। प्रदर्शनकारियों ने संसद भवन, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और

- **प्रधानमंत्री ओली के भाग जाने के बाद यही चर्चा चल रही है कि अंतरिम सरकार का नेता कौन होगा। नेपाल के एक एनजीओ "हामी नेपाल" के सुदीप गुरूंग, जो कि जैनरेशन ज़ैड आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं, ने कार्की के नाम का प्रस्ताव रखा।**
- **भ्रष्ट नेताओं पर सख्त कार्यवाही के कारण उन पर महाभियोग तक चलाने का प्रयास किया गया था।**
- **अंतरिम सरकार के नेतृत्व के लिए काठमांडू के मेयर बालेन्द्र शाह, धरान के मेयर हरका सम्पर्ग, सागर धाकाल और राष्ट्र बिमोचन तिमलसेना का नाम भी चर्चा में है।**

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विधायक ऋतु बनावत कैलाश यात्रा में फंसी

भरतपुर, 10 सितम्बर। विधायक ऋतु बनावत कैलाश मानसरोवर यात्रा के दौरान चीन-नेपाल बॉर्डर के पुरांग क्षेत्र में फंस गई हैं।

3 से 11 सितंबर तक की इस यात्रा के अंतिम चरण में नेपाल में चल रहे विद्रोह और अस्थिर हालात के चलते, यात्रा दल को रोक दिया गया है। राहत की बात है कि सभी यात्री सुरक्षित हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, केन्द्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत और गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बैंढ म ने तुरंत एक्शन लिया है। सरकार ने भरोसा दिलाया है कि घबराएं नहीं, हर यात्री को सुरक्षित वापस लाया जाएगा। ऋतु बनावत भरतपुर जिले के बयाना रूपवास क्षेत्र से विधायक हैं।

- **नेपाल के अस्थिर हालात के कारण यात्रा दल को चीन - नेपाल बॉर्डर पर पुरांग क्षेत्र में रोक दिया गया।**

क्या मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना नीतीश का मास्टर स्ट्रोक साबित होगी?

महिला सशक्तिकरण की योजना का मूल संदेश है महिला वोट बैंक को साधना

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 10 सितम्बर। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की "मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना" को महिलाओं की आत्मनिर्भरता की दिशा में एक और कदम के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, लेकिन इसके पीछे छुपा बिहार चुनाव का संदेश भी साफ झलकता है।

यह वादा दिखने में भले ही सीधा-सादा लगे, लेकिन इसका असर बहुत गहरा हो सकता है, आज 10,000 रुपये और भविष्य में 2 लाख रुपये तक की सहायता। हर बिहारी परिवार की एक महिला, यदि वह और उसका पति आयकर दाता नहीं हैं, को स्व-रोजगार शुरू करने के लिए प्रारंभिक राशि (सीड मनी) दी जाएगी। छह महीने बाद, अगर व्यवसाय में संभावना दिखती है, तो सरकार 2 लाख रुपये की पूंजी निवेश सहायता देगी।

- **सरकार में आने के बाद से नीतीश ने नशाबंदी लागू करना, पंचायत व शहरी निकाय में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देना, पुलिस व सरकारी नौकरी में 35 प्रतिशत आरक्षण देना तथा छात्राओं को साइकिल व स्कॉलरशिप देने जैसी योजनाएं लागू कर अपना मजबूत महिला वोट बैंक खड़ा किया है, जो जातिवादी राजनीति की काट भी साबित हुआ है।**
- **इस वोट बैंक का नीतीश को लाभ भी मिला है। हर बार चुनावों में पोलिंग बूथ पर महिलाओं की लम्बी कतारें इस बात का प्रमाण हैं। बिहार में महिलाएं नीतीश के लिए किंगमेकर की भूमिका में नज़र आ रही हैं।**

7 सितंबर से शुरू हुई इस योजना के लिए आवेदन प्रक्रिया खुली है। इसे एक ऐसा प्रयास बताया जा रहा है, जो महिलाओं को स्वरोजगार, आत्मनिर्भरता और उद्यमिता की ओर बढ़ाएगा। लेकिन इसका राजनीतिक संदेश भी साफ है, उन विधानसभा क्षेत्रों की महिला मतदाताओं का सशक्तिकरण और समर्थन सुनिश्चित करना, जिन्होंने बीते दो दशकों से नीतीश कुमार का साथ दिया है।

नीतीश कुमार ने नवंबर 2005 में मुख्यमंत्री बनने के बाद से लगातार महिलाओं को अपनी स्थायी राजनीतिक आधारशिला बनाने की दिशा में काम किया है। सामाजिक कल्याण से लेकर शिक्षा तक, शराबबंदी से लेकर शासन में आरक्षण तक, नीतीश की राजनीति ने महिलाओं को बिहार की राजनीतिक कहानी के केन्द्र में ला खड़ा किया है।

जहां लंबे समय से चुनावी गणित का आधार जाति रही है, वहीं नीतीश ने इसके जवाब में लिंग आधारित वोट बैंक तैयार किया, जो भारतीय राजनीति में एक अनूठा मॉडल बन गया है।

यह नई योजना कोई अलग पहल नहीं है, बल्कि उस कल्याणकारी रणनीति का विस्तार है, जिसे नीतीश वर्षों से गढ़ते आ रहे है। पंचायतों और शहरी निकायों में महिलाओं को दिये गये 50 प्रतिशत आरक्षण ने जमीनी लोकतन्त्र का कायाकल्प कर दिया है। पुलिस भर्ती और सरकारी नौकरियों में 35 प्रतिशत आरक्षण से सरकारी नौकरियों और विभागों का स्वरुप ही बदल गया है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राजस्थान सरकार ने विशेष सैल बनाया व हैल्प लाइन नंबर जारी किये

जयपुर, 10 सितम्बर। नेपाल में हाल ही में हुई हिंसात्मक घटनाओं को गंभीरता से लेते हुए मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने वहां रह रहे प्रवासी राजस्थानियों की सुरक्षा को लेकर चिंता जताई है। मुख्यमंत्री ने काठमांडू स्थित भारतीय दूतावास से सीधे बातचीत कर मौजूदा हालात की जानकारी ली और आवश्यक निर्देश दिए। मुख्यमंत्री शर्मा ने कहा कि नेपाल में उत्पन्न हालात हृदय-विदारक हैं और राज्य सरकार वहां मौजूद हर राजस्थानी नागरिक की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है।

- **मुख्यमंत्री भजन लाल ने काठमांडू स्थित भारतीय दूतावास से बात कर निर्देश दिए।**

मुख्यमंत्री के निर्देश पर राजस्थान पुलिस मुख्यालय में एक विशेष सैल का गठन किया गया है, जो नेपाल में फंसे भारतीयों की सहायता के लिए कार्य

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अमेरिका भी पूरी रुचि ले रहा है, नेपाल में सत्ता परिवर्तन हो और, उसका "आदमी" प्र.मंत्री की कुर्सी पर बैठे

अमेरिका ने अपने पिछलग्गू राजनीतिज्ञों में से तीन को चुना है प्र.मंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 सितंबर। नेपाल में राजनीतिक नैतिकता की भारी कमी को लेकर लंबे समय से आक्रोश पनप रहा है। बीते 17 वर्षों में नेपाल में 14 प्रधानमंत्री बदले जा चुके हैं। आम धारणा यह है कि सभी दल सत्ता लोलुप, भ्रष्ट और भाई-भतीजावादी हैं।

हर साल औसतन 8 लाख युवा नेपाल छोड़ते हैं, न केवल उच्च वेतन और मध्यम दर्जे की नौकरियों के लिए बल्कि दिहाड़ी मजदूरी तक के लिए।

बेरोजगारी बहुत अधिक है और भआारी गरीबी है। यही कारण है कि देश में बड़े पैमाने पर असंतोष पनपा है। ओली सरकार द्वारा सोशल मीडिया पर लगाया गया प्रतिबंध, जो कि नेपाल के सुप्रीम कोर्ट के आदेश के एक साल बाद लागू किया गया, जैनरेशन ज़ैड को स्वीकार नहीं था,

यह आखिरी तिनका साबित हुआ-जिसने सब्र का बांध तोड़ दिया।

आज के उन्य देशों की तरह नेपाल में भी युवा अपनी भावना की अभिव्यक्ति, मनोरंजन और संवाद के लिए सोशल मीडिया निर्भर रहते हैं। ओली को नेपाल में एक अधिनायकवादी नेता के रूप में देखा जाता है। सोशल मीडिया को नियंत्रित करने के लिए उन्होंने उस पर बैन लगाया। जिससे युवा वर्ग भारी नाराज हो गया और उन्होंने इसे अलोकतांत्रिक कदम करार दिया।

इस पूरे घटनाक्रम में शासन परिवर्तन के ऑपरेशन के संकेत मिलते हैं।

एक है रवि लामिछाने जो दिसंबर 2022 से जनवरी 2023 तक उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री रहे। भ्रष्टाचार के आरोप में जेल भेजे गए थे। मंगलवार को भीड ने ललितपुर जिले के नक्खु जेल पर हमला कर 1500 कैदियों को छुड़ा लिया-इनमें रवि लामिछाने भी शामिल थे।

उन्हें अमेरिका का करीबी माना जाता है।

दूसरे है बालेन्द्र शाह उर्फ बालेन। ये काठमांडू के मेयर है, जिन्हें भारत विरोधी रवैये के लिए जाना जाता है। उनके कार्यालय में "अखंड नेपाल" का नक्शा लगा है, जिसमें हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के हिस्से शामिल हैं।

- **पहला नाम है राबी लामिछाने का, ने कुछ समय के लिये, दिसम्बर 2022 से जनवरी 2023 तक, नेपाल के उपप्रधानमंत्री व गृह मंत्री रह चुके हैं तथा भ्रष्टाचार के आरोप में गिरफ्तार थे, पर युवा आंदोलनकारियों ने नाखु जेल तोड़कर सभी कैदियों को रिहा करवाया था, उनमें राबी लामिछाने भी थे।**
- **दूसरा नाम काठमांडू के मेयर बालेन्द्र शाह का है। शाह घोर भारत विरोधी विचारों के व्यक्ति हैं, और उनके ऑफिस में अखण्ड नेपाल का नक्शा लटका हुआ है, जिसमें हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड का काफी हिस्सा प्रस्तावित अखण्ड नेपाल में दिखाया गया है।**
- **तीसरा नाम हरका समपंग का है, जो वर्तमान में धारन के मेयर हैं।**
- **अमेरिका के समर्थन में नेपाल में दो और ताकतें हैं। नेपाल के इसाई, जिनकी संख्या अनियंत्रित धर्मपरिवर्तन से बहुत बढ़ी है, पिछले कुछ सालों में, और दूसरी ताकत है, एनजीओ जिन्हें अमेरिका से भारी आर्थिक मदद व अनुदान मिलता है। ये दोनों ताकतें भी चाहेंगी कि कोई अमेरिका का समर्थक ही प्र.मंत्री बने।**

तीसरे हैं धरान के मेयर हर्का सम्पंग, जो अमेरिकी समर्थक माने जाते हैं। ये तीनों को "अमेरिकी पिट्ठू" हैं, जबकि ओली को चीन समर्थक नेता के रूप में देखा जाता है।

एक महत्वपूर्ण बात यह है कि नेपाल में 2015 के भूकंप के बाद से अमेरिका की भूमिका लगातार बढ़ती गई है। ईसाई मिशनरी संगठनों की नेपाल में घुसपैठ हुई है। बिना किसी रोक टोक के बड़े पैमाने पर धर्मांतरण कराए गए हैं। अब बड़ी आबादी ईसाई यहां तक कट्टर इवेन्जिकल बन गई है जो बाइबल को ही अंतिम सत्य मानते हैं। इन पर अमेरिकन बैपटिस्ट और ईवेंजेलिकल संगठनों का नियंत्रण है।

नेपाल में भारी संख्या में एनजीओ हैं, जिनका मुख्य वित्तपोषण अमेरिका से होता है। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर, जिनका जनमत निर्माण में बडा हाथ है,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नेपाल हिंसा में मृतकों की संख्या 30 पहुंची

काठमांडू, 10 सितंबर। नेपाल में भ्रष्टाचार और सोशल मीडिया पर प्रतिबंध को लेकर हुए उग्र प्रदर्शन में मृतकों की संख्या बुधवार को बढ़ कर 30 हो गयी, जबकि 1,033 लोग घायल हो गये, जिनका विभिन्न अस्पतालों में इलाज चल रहा है।

- **देश भर के 28 अस्पतालों में 1033 घायलों का इलाज चल रहा है।**

कांतिपुर समाचार पत्र ने स्वास्थ्य मंत्रालय के हवाले से देर शाम यह जानकारी दी। इसमें बताया गया है कि आंदोलन में कुल मरने वालों का आंकड़ा बढ़ कर 30 हो गया है। देश भर के 28 अस्पतालों में 1,033 घायलों का उपचार किया जा रहा है, जबकि 713 लोगों को अस्पताल से छुट्टी मिल चुकी है।

विचार बिन्दु

इस विश्व में स्वर्ण, गाय और पृथ्वी का दान देने वाले सुलभ है लेकिन प्राणियों को अभयदान देने वाले इन्सान दुर्लभ हैं। –भर्तृहरि

पंचग्रास में समाहित है संपूर्ण चराचर जगत का कल्याण

पूर्वजों के पुण्य स्मरण की परंपरा भले ही हमारे यहां श्राद्ध पक्ष के सोलह श्राद्धों के माध्यम से आदि काल से चली आ रही हो पर दुनिया के लगभग सभी धर्मावलंबियों और देशों में किसी ना किसी रुप में पूर्वजों के पुण्यस्मरण की परंपरा अनवरत काल से चली आ रही है। हालांकि हमारे देश के ही कुछ प्रतिक्रियावादी लोग श्राद्ध और श्राद्ध कर्म को लेकर मखौल उड़ाने में किसी तरह की कोई कमी नहीं छोड़ते, पर वह यह भूल जाते हैं कि धरती के साक्षात् देवता हमारे जन्मदाता माता–पिता है। यह साफ हो जाना चाहिए कि माता–पिता के अस्तित्व को लेकर कोई किसी तरह का प्रश्न चिन्ह नहीं उठा सकता। उनके अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता। माता–पिता की यह परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है और पीढ़ी दर पीढ़ी उनके स्मरण का हमारा दायित्व हो जाता है। पितृपक्ष और मातृपक्ष दोनों ही पीढ़ियों के स्मरण और श्रृद्धा या यों कहे कि श्राद्ध स्वरुप भोजन, वस्त्र, जल आदि आदि पत्र पुष्प के माध्यम से सम्मान स्वरुप स्मरण किया जाता है। श्राद्ध स्वरुप ब्राम्हणों को भोजन कराने और इसी तरह की अन्य व्यवस्थाओं के साथ जुडी पंच ग्रास की परंपरा का आलोचकों को ज्ञान ही नहीं होता। श्राद्ध निमित्त ब्राह्मण भोजन से पहले पंच ग्रास का विधान है। पंचग्रास के पीछे के रहस्य को समझना भी आवश्यक हो जाता है। पंचग्रास में गोग्रास, श्वान ग्रास, कोएं को ग्रास, चिंटी आदि को ग्रास और अभ्यागत ग्रास, इस तरह से पंच ग्रास का विधान है। अब इसी से समझ सकते हैं कि इस पंच ग्रास में प्रकृति का कोई पक्ष शेष नहीं रह जाता है। गो ग्रास में पशुधन आ जाता है तो श्वान ग्रास में पशु, कोएं के ग्रास से पक्षिगण, चिंटी पतंगा के ग्रास से चिंटी आदि जीव और अंतिम अभ्यागत ग्रास में भिखारी आदि आ जाते हैं। ब्राह्मण भोजन को ढकोसला कह कर समझने वालों को श्राद्ध के मूल की सभी विधानों को समझना होगा। एक बात और साफ हो जानी चाहिए कि पंच ग्रास से अर्थ मात्र औपचारिकता से नहीं लिया जाना चाहिए।

हमारी शाश्वत परंपरा में प्रत्येक व्यक्ति पर तीन ऋण होते हैं और उनमें से पहला ऋण देव ऋण है तो दूसरा ऋषि ऋण और तीसरा ऋण पितृ ऋण है। प्रत्येक जन्म लेने वाले व्यक्ति को इन तीनों ऋणों से उऋण होने की शिक्षा दी जाती है तो यह उसका दायित्व भी हो जाता है। देव ऋण में सृष्टि के नियंता का स्मरण और उसके प्रति आभार प्रकट करना है। इसके लिए भजन–पूजन, स्मरण, सदाचरण आदि की बात है। जो अपने आप को नास्तिक कहते हैं और किसी शक्ति में विश्वास नहीं करते तो भी उन्हें प्रकृति पर तो विश्वास करना ही होगा। प्रकृति को विकृति से बचाना हमारी जिम्मेदारी होती है और प्रकृति व मानवमात्र के कल्याण की बात करना ही देव ऋण से उऋण होने का एक तरीका है। इसी तरह से हमकों शिक्षा प्रदान करने वाले गुरु परंपरा का मान–सम्मान और ज्ञान की इस परंपरा को अगली पीढ़ी तक पहुचना ही गुरु ऋण से उऋण होने का एक तरीका हो सकता है। जहां तक पितृ ऋण से उऋण होने का प्रश्न है तो इससे उऋण होने का भी आसान रास्ता बताया गया है और वह बच्चे होते ही पूरी होना शुरु हो जाती है और इन बच्चों की शिक्षा और संस्कारित करना और शादी–विवाह आदि जिम्मेदारियों का निर्वहन तो आता ही है। यही कारण है कि पौत्र–प्रपौत्र या नाती–नातियों को देखना और पौत्र होने पर सोने की सीढ़ी चढ़ना आदि इसी और इशारा करता है कि हमारे कुल परंपरा में पूर्वजों के श्राद्ध यानी स्मरण करने वाली पीढ़ी हो गई है। कभी मृत्यु के बाद बारह दिन के संस्कारों को देखने का अवसर मिले या फिर बारहवें दिन की सपीण्डी क्रिया देखने को मिले तो कई बातें साफ हो जाती है। सपीण्डी में तीन पितृ पक्ष और तीन मातृ पक्ष के पूर्वजों के स्मरण, पूजा आदि के बाद जब सभी को एकाकार कर दिया जाता है तो उसे सपीण्डी कहा जाता है। हमारी परंपरा यहां तक ही सीमित नहीं रहती। विधान तो यहां तक है कि किसी भी यजन कार्य में पितृ पूजा अवश्य होती है और दोनों ही पक्षों की तीन–तीन पीढ़ी, यहां तक कि विवाह संस्कार में भी तीन–तीन पीढ़ियों का पुण्य स्मरण किया जाता है।

श्राद्ध स्वरुप ब्राम्हणों को भोजन कराने और इसी तरह की अन्य व्यवस्थाओं के साथ जुड़ी पंच ग्रास की परंपरा का आलोचकों को ज्ञान ही नहीं होता। श्राद्ध निमित्त ब्राह्मण भोजन से पहले पंच ग्रास का विधान है। पंचग्रास के पीछे के रहस्य को समझना भी आवश्यक हो जाता है। पंचग्रास में गोग्रास, श्वान ग्रास, कोएं को ग्रास, चिंटी आदि को ग्रास और अभ्यागत ग्रास, इस तरह से पंच ग्रास का विधान है। अब इसी से समझ सकते हैं कि इस पंच ग्रास में प्रकृति का कोई पक्ष शेष नहीं रह जाता है। गो ग्रास में पशुधन आ जाता है तो श्वान ग्रास में पशु, कोएं के ग्रास से पक्षिगण, चिंटी पतंगा के ग्रास से चिंटी आदि जीव और अंतिम अभ्यागत ग्रास में भिखारी आदि आ जाते हैं।

हमारी शाश्वत परंपरा में व महाभारत व अन्य पौराणिक ग्रन्थों में उल्लेख आता है कि महर्षि अत्रि ने सबसे पहले निमि को सबसे पहले श्राद्ध का उपदेश दिया और महर्षि निमि ने सबसे पहले अपने पूर्वजों के निमित्त श्राद्ध कर्म किया। श्राद्ध कर्म में अग्नि को भी खास महत्व दिया गया है और यह माना जाता है कि अग्नि देव के माध्यम से श्राद्ध पूर्वजों को अर्पित किया जाता है। हमारे यहां पूर्वजों के स्मरण या श्राद्ध के खासतौर से दो अवसर होते हैं। पहला अवसर तो जिस दिन दाग तिथि यानि अंतिम संस्कार या यों कहें कि देहावसान की तिथि को प्रतिवर्ष श्राद्ध का विधान है तो दूसरा महालय श्राद्ध यानि की कन्यागत सूर्य के समय के पन्द्रह दिवस। भाद्रपद मास की पूर्णिमा से लेकर आश्विन कृष्ण पक्ष की अमावश्या के कुल सोलह दिन सोलह श्राद्ध के दिन होते हैं। स्वर्गागमन किसी भी पक्ष में हो पर कन्यागत श्राद्ध जिसे हम बोलचाल की भाषा में कनागत कहते है उन सोलह दिनों की तिथि के अनुसार श्राद्ध निकाला जाता है। जैसे पूर्णिमा को पूर्णिका तो प्रतिपदा का प्रतिपदा को और इसी तरह से संबंधित तिथि को। यहां एक बात और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। शास्त्राचार व लोकाचार में एक बात पर अवश्य जोर दिया गया है कि हमारे पूर्वज श्राद्ध के दिन पुत्री प़क्ष की उपस्थिति से अधिक प्रसन्न होते हैं। इसमें श्राद्ध भोजन के निमित्त या अवसर पर दोयते–दोयती, भांजें–भांजी को भोजन कराना अत्यधिक फलदायक बताया गया है। परिवार की पुत्रियों का इस अवसर पर स्वागत और भी अधिक प्रसंसनीय हो जाता है। स्वागत का अर्थ उनकी उपस्थिति से हो जाता है। पुत्रि पक्ष में बहन, बुआ, बेटियां आदि आ जाती है। अब इसे सामाजिक और वैज्ञानिक तरीके से भी समझने का प्रयास करें तो श्राद्ध कर्म परिवार के जुड़ाव और कुल–कुटुंब में प्रेमाचार–भाईचारा बढ़ाने का अवसर है। इससे हमारे पितृगण प्रसन्न होते हैं। अब इसी से समझा जा सकता है कि श्राद्ध के माध्यम से परिवार को एकजुट होने, एक दूसरे से मिलने–मिलाने और प्रेम और स्नेह को बढ़ाने का अवसर मिल जाता है। यह सब मैं इसलिए लिख रहा हूं कि श्राद्ध के विधान को लेकर तो मर्मज्ञ विस्तार से चर्चा कर ही लेते हैं। यह भी सब जानते हैं कि श्राद्ध को जहां तक संभव हो विषम संख्या में भोजन कराना चाहिए। योग्यता एक अन्य शर्त कही जा सकती है तो शुद्धता भी आवश्यक होती है। इस सबके साथ ही विधान की लंबी फेहरिश्त हो जाती है और धर्म के आलोचक उसकों लेकर टीका–टिप्पणी करते ही रहते है। पर श्राद्ध कर्म से दो बातें साफ हो जानी चाहिए कि यह केवल और केवल हमारे यहां ही होता हो तो ऐसा है नहीं। चीन में छिंग–मिंग, जापान में ओबोन, फ्रांस में ला टेसेंट, योरापीय देशों में आल सेंट्स डे, बौद्धों में घोस्ट फेस्टिवल आदि पूर्वजों के स्मरण और पूजन आदि के अवसर है।

इसलिए यह साफ हो जाना चाहिए कि श्राद्ध, श्राद्ध पक्ष और श्राद्ध कर्म के पीछे हमारे पूर्वजों की गहन सोच है। यह मात्र औपचारिकता या ब्राह्मण भोजन तक सीमित नहीं है तो भोजन कराने से पूर्वजों तक भोजन पहुंचने को लेकर मजाक उड़ाने वालों को बहुत कुछ समझने और उसके मूल को समझना होगा। यदि यह ढकोसला होता तो चीन में छिंग–मिंग, जापान में ओबोन, बौद्ध देशों में घूस्ट फेस्टिवल या योरोपीय देशों में टेसेंट या आल सेंट्स डे आदि नहीं होते। इन सबसे भी इतर हमें हमारे जन्मदाताओं के प्रति कृतज्ञता तो व्यक्त करना हमारा दायित्व हो जाता है और यही तो हम श्राद्ध कर्म के माध्यम से करते हैं। बस श्राद्ध में श्रृद्धा का जो महत्व है उसकी पालना हमें करनी ही होगी।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

एक ही व्यक्ति का दो सीटों पर चुनाव लड़ना कहां तक जायज़ है?

सुनील दत्त गोयल

भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत यह है कि हर नागरिक को समान अधिकार के तहत वोट डालने और अपनी पसंद के प्रतिनिधि चुनने का हक़ मिला है। लेकिन समय–समय पर यह सवाल भी खड़ा होता है कि इस लोकतांत्रिक प्रक्रिया के नाम पर जनता से लिया गया टैक्स आखिर खर्च कहाँ होता है? हाल के वर्षों में जिस मुद्दे ने बार–बार सुर्खियाँ बटोरी हैं, वह है – एक ही व्यक्ति का दो सीटों से चुनाव लड़ना।

दरअसल, आज 'जनता की सेवा' शब्द नेताओं के लिए बदलकर 'सत्ता प्राप्ति' और 'कुर्सी बचाने' का खेल बन चुका है। नतीजा यह है कि कई बार सांसद या विधायक अपने वर्तमान पद या क्षेत्र को छोड़कर दूसरी जगह चुनाव लड़ने चले जाते हैं। अगर जीत गए तो वहाँ चले जाते हैं, और हार गए तो पुरानी कुर्सी पर लौट आते हैं। सवाल यह है कि तब उस खाली हुई सीट का क्या? उस पर जब उपचुनाव होता है, तो उसका पूरा खर्च किसकी जेब से जाता है? जवाब साफ है – जनता का पैसा।

दो सीटों से चुनाव लड़ने का खेल

भारत में दो सीटों से चुनाव लड़ने की परंपरा कोई नई राजनीतिक चाल नहीं, इसकी जड़ें नेहरू–गांधी युग तक जाती हैं–और स्वतंत्रता के बाद के शुरुआती दशकों से लेकर आज तक कई बड़े नेताओं ने इसे रणनीतिक ढाल की तरह प्रयोग किया है। भारतीय चुनावी प्रणाली में अभी यह प्रावधान है कि एक उम्मीदवार दो सीटों से चुनाव लड़ सकता है। इसे पहली बार 1951 के जनप्रतिनिधित्व कानून (Representation of People Act) में अनुमति दी गई थी। तब तर्क यह दिया गया था कि किसी उम्मीदवार को अगर दो जगह से जनता का समर्थन चाहिए, तो उसमें बुराई नहीं। लेकिन व्यावहारिक रूप से यह प्रावधान जनता के लिए मुसीबत और वित्तीय बोझ बन गया है। स्वतंत्र भारत के पहले आम चुनाव 1951–52 में कांठोस का वर्चस्व था, और चुनावी ढाँचा आरपीए 1951 के तहत स्थापित हुआ, जिसमें एक व्यक्ति को एक साथ एक से अधिक सीटों से नामांकन की अनुमति दी गई–यही प्रावधान आगे चलकर दो सीटों से लड़ने की वैधानिक आधारशिला बना।

इंदिरा-राजीव से सोनिया-राहुल तक

कांग्रेस व्यवस्था के लंबे दौर में विपक्ष कमजोर होने के कारण बड़े नेताओं का सुरक्षा के रूप में एकाधिक सीटों से लड़ना समय के साथ अधिक दिखाई देने लगा। इंदिरा गांधी दो सीटों से लोकसभा चुनाव लड़ चुकी थीं–साल 1980 में उन्होंने रायबरेली (उत्तर प्रदेश) और मेडक (तब आंध्र प्रदेश) दोनों जगह से चुनाव लड़ा और दोनों सीटें जीतीं; बाद में उन्होंने मेडक सीट छोड़ दी। 1999 में सोनिया गांधी ने बेल्लारी (कर्नाटक) और अमेठी (उत्तर प्रदेश) से चुनाव लड़ा और दोनों सीटें जीतकर एक सीट छोड़ी–यही पैटर्न बाद के दशकों में भी बना रहा और उपचुनाव की बाध्यता सामने आती रही। 2019 में राहुल गांधी वायनाड और अमेठी से लड़े, वायनाड में जीते और अमेठी हारे–यह बताता है कि डुअल कंटेस्ट एक राजनीतिक जोखिम प्रबंधन उपकरण बना रहा, जिसका प्रभाव स्थानीय मतदाता पर और सार्वजनिक धन पर अलग–अलग तरह से पड़ता है। यह भी देखा गया है कि कई बार मौजूदा जनप्रतिनिधि इस्तीफा दे देते हैं ताकि खाली हुई सीट पर उपचुनाव द्वारा किसी बड़े नेता को जितवा सकें. डी बी चंद्रे गौड़ा (D.B. Chandre Gowda) चिकमगलूर के मौजूदा कांग्रेसी सांसद थे, जो 1971 और 1977 में इस सीट से जीत चुके थे लेकिन 1978 में इंदिरा गांधी की राजनीतिक वापसी के लिए पार्टी को एक 'सुरक्षित सीट' की जरूरत थी इसीलिए उन्होंने अपनी सीट से इस्तीफा दे दिया, ताकि इंदिरा गांधी वहाँ से उपचुनाव लड़ सकें।

लोकतांत्रिक प्रक्रिया के दुरुपयोग का यह एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

कुछ अन्य उदाहरण

ममता बनर्जी और अरविंद केजरीवाल जैसी कई क्षेत्रीय पार्टियों के नेता भी इसका इस्तेमाल कर चुके हैं।

नवीन पटनायक ने ओडिशा विधानसभा में एकाधिक सीटों से नामांकन किए

वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी वाराणसी और वडोदरा, दोनों जगह से लड़े।

यानी यह एक आम राजनीतिक रणनीति बन चुकी है। यह रणनीति केवल नेता का 'सुरक्षा कवच' बनती है, मगर जनता की जेब और विश्वास पर भारी पड़ती है।

जनता का कितना पैसा डूबता है? (सरकारी आँकड़े)

भारत में चुनाव कराना बहुत महंगा कार्य है। चुनाव आयोग की रिपोर्ट के अनुसार:–2019 के लोकसभा चुनाव पर लगभग 60,000 करोड़ का खर्च हुआ था (जिसमें सरकारी और राजनीतिक पार्टियों का खर्च दोनों शामिल हैं)। भारत निर्वाचन आयोग (ECI) के अनुसार, एक लोकसभा उपचुनाव कराने का औसत खर्च 2–5 करोड़ रुपये होता है। वहीं राज्य विधानसभा के उपचुनाव पर औसतन 1–2 करोड़ रुपये का खर्च आता है। अब जरा सोचिए – सिर्फ इसलिए कि कोई बड़ा नेता दो सीटों पर चुनाव लड़कर एक सीट खाली कर दे, जनता के टैक्स का करोड़ों रुपया बर्बाद हो जाता है। यह पैसा शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क या रोजगार योजनाओं में खर्च हो सकता था।

जनता के साथ अन्याय

यह मुद्दा केवल आर्थिक नहीं, बल्कि नैतिक भी है। जब जनता वोट डालती है, तो वह उम्मीद करती है कि उसका प्रतिनिधि पूरे कार्यकाल तक उसकी सेवा करेगा। लेकिन जब प्रतिनिधि दूसरी जगह चला जाता है, तो उसी जनता को फिर से महीनों प्रचार, मतदान और चुनाव की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। यानी एक तरफ जनता पर आर्थिक बोझ, और दूसरी तरफ जनता की राजनीतिक भावनाओं से खिलवाड़। क्या यह सीधे–सीधे विश्वासघात नहीं है?

समाधान क्या हो सकता है?

अब सवाल यह उठता है कि इसका व्यावहारिक समाधान क्या है?

1. दूसरे नंबर वाले प्रत्याशी को विजयी घोषित करना

एक तर्क यह है कि अगर कोई नेता दो सीटों पर जीतता है और फिर एक सीट छोड़ देता है, तो उस सीट पर दोबारा चुनाव कराने के बजाय रनर–अप (दूसरे स्थान पर आने वाले) को विजयी घोषित कर दिया जाए।

इससे करोड़ों रुपये बचेंगे।

नेता सोच–समझकर ही कई सीटों से चुनाव लड़ेंगे, क्योंकि सीट छोड़ते ही उनका विरोधी मजबूत होगा।

2. उपचुनाव का खर्च पार्टी या उम्मीदवार से वसूलना

अगर कोई प्रत्याशी सीट छोड़ता है, तो उस सीट के उपचुनाव का पूरा खर्च उसके या उसकी पार्टी से वसूला जाए। इससे उन्हें जनता के टैक्स की कीमत पता चलेगी।

3. केवल एक सीट से चुनाव लड़ने का प्रावधान

वैसे एक सबसे सीधा हल यह है कि कानून में संशोधन करके उम्मीदवार को केवल एक ही सीट से चुनाव लड़ने की अनुमति दी जाए। 1996 में भारत निर्वाचन आयोग ने केंद्र सरकार को रिपोर्ट भेजकर सुझाव दिया था कि एक उम्मीदवार को केवल एक सीट से चुनाव लड़ने दिया जाए। लेकिन अब तक राजनीतिक दलों ने अपने हितों के चलते इस सिफारिश को लागू नहीं होने दिया।

अंतरराष्ट्रीय अनुभव

दुनिया के कई लोकतांत्रिक देशों ने पहले ही यह प्रथा खत्म कर दी है।

ब्रिटेन और यूनाइटेड स्टेट्स में उम्मीदवार एक समय में सिर्फ एक ही सीट से चुनाव लड़ सकता है। बांग्लादेश जैसे देशों ने भी इस पर रोक लगा रखी है। तो सवाल यह है कि भारत जैसे सबसे बड़े लोकतंत्र में जनता के टैक्स के पैसे को ऐसे व्यर्थ बर्बाद करने की इजाज़त क्यों हो?

लोकतंत्र में जनता सर्वोपरि

लोकतंत्र का मुख्य आधार यह है कि जनता सर्वोपरि है। नेताओं की व्यक्तिगत रणनीति या महत्वाकांक्षा जनता से बड़ी नहीं हो सकती। अगर एक सीट छोड़ने से करोड़ों रुपया बर्बाद होता है और जनता को दोबारा मतदान की मशक्कत करनी पड़ती है, तो यह साफ तौर पर अन्याय है। आज जब देश विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार जैसे असली मुद्दों से जूझ रहा है, तब चुनावी व्यवस्था को इतना महंगा और जटिल बनाने का कोई औचित्य नहीं है। यह वक्त है कि चुनाव आयोग और सरकार मिलकर इस पर सख्त सुधार लाएँ। अगर कोई व्यक्ति जेल में है तो वो अपना वोट नहीं डाल सकता लेकिन वही कैदी भले ही दो साल से जेल में है तो वो चुनाव लड़ कर सांसद या विधायक बन सकता है। तो क्या वो जीता हुआ प्रत्याशी अपने क्षेत्र के मतदाताओं के साथ न्याय कर रहा है? उदाहरण के लिए, कश्मीर के बारामूला से सांसद शेख़ अब्दुल रशीद, जो इंजीनियर रशीद के नाम से भी जाना जाता है और तिहाड़ जेल में दिल्ली में बंद हैं।

आम समझ से देखें तो जो व्यक्ति जनता की सेवा करने और मिलने–जुलने के लिए उपलब्ध ही नहीं है, वह कैसे इलाके की समस्याएँ सुनेगा, जनसुनवाई करेगा या कामकाज देखेगा–जेल की दीवारें उसे लोगों से अलग कर देती हैं, और जनता उससे मिल भी नहीं पाती।

इसी वजह से लोग कहते हैं कि यह लोकतंत्र का मज़ाक है: जनता तो वोट देने कतार में खड़ी रहती है, लेकिन लाखों लोग जो सिर्फ मुकदमे के चलते जेल में हैं, वोट नहीं डाल पाते, और दूसरी तरफ कोई बंदी कागज़ी औपचारिकताएँ पूरी करके चुनाव में उम्मीदवार बन सकता है। बहुत से संगठनों और कानूनी बहसों में यह मांग उठी है जेल में रहने के दौरान चुनाव लड़ने पर साफ–साफ रोक या सख्त शर्तें लगाई जाएँ, ताकि हक़ और ज़िम्मेदारी का संतुलन बना रहे और जनता का भरोसा कायम रहे।

निष्कर्ष– आज जब हर परिवार महँगाई, बेरोजगारी और टैक्स के बोझ से दबा हुआ है, तब जनता का पैसा नेताओं की महत्वाकांक्षाओं पर खर्च करना लोकतंत्र का मज़ाक है। अगर अनावश्यक उपचुनाव रोके जाएँ, तो करोड़ों रुपये का सदुपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढाँचे पर हो सकता है। इसलिए अब वक्त आ गया है कि चुनाव आयोग, संसद और सरकार इस मुद्दे पर गंभीर बहस करे।

लोकतंत्र मज़बूत तभी होगा जब जनता का सम्मान रहेगा और उसके हित के विपरीत कोई नियम नहीं होगा। दो सीटों पर चुनाव लड़ना राजनीति का खेल नहीं, बल्कि जनता के साथ मज़ाक है – और इसको कानून बनाकर खत्म करना ही लोकतांत्रिक ईमानदारी की पहली शर्त है।

–रोटेरियन सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री
पूर्व उपाध्यक्ष, जयपुर स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड
जयपुर, राजस्थान

''जल जीवन मिशन'' से बयाना के गांव पुरा बाइखेड़ा में आएगी खुशहाली

हर घर तक नल से पानी पहुंचाने का कार्य तेजी से पूरा किया जा रहा है

बयाना/भरतपुर, (निसं)। राजस्थान सरकार की महत्वाकांक्षी योजना ''जल जीवन मिशन'' के तहत बयाना उपखंड के गांव पुरा बाइखेड़ा में हर घर तक नल से पानी पहुंचाने का कार्य तेजी से पूरा किया जा रहा है। करीब 2 करोड़ 5 लाख रुपये की लागत से गांव में तीन ट्यूबवेल लगाए जा रहे हैं, जिससे ग्रामीणों को लंबे समय से चली आ रही पानी की समस्या से राहत मिलेगी।

जलदाय विभाग के कनिष्ठ अभियंता राजेश मीणा ने जानकारी देते हुए बताया कि गांव में निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है और उच्च जलाशय (ओवरहेड टैंक) का कार्य अंतिम चरण में है। साथ ही दो पानी की टंकियों का निर्माण किया जा रहा है और पूरे गांव में पाइपलाइन बिछाई जा रही है। योजना के तहत लगभग 782 घरों को कनेक्शन दिए जाएंगे, जिससे हर घर में नियमित जलापूर्ति सुनिश्चित हो सके।

■ करीब 2 करोड़ 5 लाख रुपये की लागत से गांव में तीन ट्यूबवेल लगाए जा रहे हैं

प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार का उद्देश्य है कि ग्रामीण इलाकों में भी हर घर तक स्वच्छ जल पहुंचे और लोग पानी की कमी जैसी समस्याओं से मुक्त हों। सरकार की प्राथमिकता है कि अंतिम व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचे और इसी दिशा में तेजी से कार्य किया जा रहा है।

गांववासियों में खुशी की लहर :–इस परियोजना को लेकर गांव में खुशी का माहौल है। ग्रामीणों का कहना है कि पहले उन्हें पानी के लिए काफी परेशान होना पड़ता था, लेकिन अब हर घर में नल से जल मिलेगा तो जीवन आसान हो जाएगा। ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री और सरकार की कार्यशैली की सराहना की और कहा कि अब गांवों में भी असली विकास दिखने लगा है। पुरा बाइखेड़ा गांव में जल जीवन मिशन के सफल क्रियान्वयन से यह साफ है कि सरकार की योजनाएं अब ज़मीनी स्तर पर असर दिखा रही हैं। यह पहल न केवल पानी की समस्या से निजात दिलाएगी, बल्कि स्वास्थ्य और स्वच्छता को भी बढ़ावा देगी।

लापरवाही पर एक टीचर सस्पेंड, चार को नोटिस

बीकानेर, (निसं)। माध्यमिक शिक्षा निदेशक सीताराम जाट ने स्कूलों के निरीक्षण के दौरान लापरवाही बरतने वाले एक शिक्षक को सस्पेंड कर दिया, वहीं चार अन्य को नोटिस दिया है। निदेशक जाट शिक्षा विभाग की ओर से चल रहे मौखिक प्रवाह पठन कार्यक्रम में लापरवाही पाए जाने पर ये कार्रवाई की है। इस कार्यक्रम के तहत बच्चों को पढ़ने की स्पीड बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। निदेशक जाट ने बीकानेर के 4 विद्यालयों में आयोजित गतिविधियों का औचक निरीक्षण किया। साथ ही विद्यालय में शिक्षण एवं अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

निरीक्षण के दौरान महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय, खारी चारणान में कक्षा 3 से 5 एवं कक्षा 6 से 8 के समूह बनाकर इस तरह की एक्टिविटी करवानी थी, ताकि बच्चे की पढ़ने की स्पीड बढ़ सके। ऐसी कोई एक्टिविटी स्कूल में नहीं करवाई गई। जाट ने संबंधित शिक्षकों को गम्भीरता पूर्वक कार्य करने की चेतावनी दी और योजनानुसार गतिविधियां आयोजन के निर्देश दिए। पीएमश्री राउमावि गौडू में कार्यक्रम प्रभारी और अध्यापक लेवल–2 चौथमल के कार्य में घोर लापरवाही बताते हुए सस्पेंड किया गया है। जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय माध्यमिक ने चौथमल को निलंबित किया है।

निदेशक ने खारी चारणान विद्यालय के की अध्यापिका लेवल–1 रेखा गर्ग और मनदीप कौर तथा वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक माणक चंद सुथार द्वारा गतिविधि आयोजन में बरती जा रही लापरवाही के लिए इनके खिलाफ सीसीए नियम–17 के तहत कार्यवाही प्रारंभ किये जाने के निर्देश दिये गए। इसी प्रकार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बज्जू में भी मौखिक प्रवाह पठन कार्यक्रम के तहत विद्यार्थियों को समूह अनुसार गतिविधियों का आयोजन नहीं करवाया जाना पाया गया। विद्यालय के संस्था प्रधान बगसा राम बिश्नोई द्वारा कार्यक्रम के संबंध में संतोषजनक जानकारी प्रदान नहीं की गई। कार्यक्रम के दिशा–निर्देश एवं गतिविधि आयोजन के संबंध में किसी भी प्रकार की कार्य योजना का भी नहीं पाई गई। इसके मद्देनजर संस्था प्रधान के खिलाफ सीसीए नियम–17 के तहत कार्यवाही प्रारंभ करने के निर्देश प्रदान किये गए। जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय (माध्यमिक) द्वारा इन शिक्षकों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्यवाही प्रारंभ करने के लिए नोटिस जारी कर दिया गया और 12 सितंबर तक स्पष्टीकरण चाहा गया है।

■ माध्यमिक शिक्षा निदेशक ने स्कूलों का औचक निरीक्षण किया

मुख्यमंत्री शिक्षित राजस्थान अभियान प्रखर राजस्थान 2.0 के तहत प्राइमरी क्लास में पढ़ने वाले बच्चों को किताब पढ़ते समय अटकने के बजाय स्पीड बनाने के लिए ये कार्यक्रम तय किया गया है, ताकि भाषायी कौशल के विकास, समझ के साथ पढ़ने, लिखने की आदत हो सके। राज्य सरकार ने इस कार्यक्रम को मिशन मोड पर लिया है।

निदेशक ने कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय, बज्जू के छात्रावास का भी निरीक्षण किया। यहां सहायक वार्डन अर्चना रावत उपस्थित रही। छात्रावास में साफ–सफाई एवं भोजन की गुणवत्ता सही पाई गई। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मोडायत में निरीक्षण के समय संतोषजनक शैक्षिक व्यवस्थाएं पायी गई। इस दौरान अतिरिक्त निदेशक गोपाल राम बिरदा और जिला शिक्षा अधिकारी (मुख्यालय) माध्यमिक किशन दान चारण साथ रहे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 11 सितम्बर, 2025

आश्विन मास, कृष्ण पक्ष, चतुर्थी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, अश्विनी नक्षत्र दिन 1:58 तक, धुव्र योग सायं 5:05 तक, बालव करण दिन 12:46 तक, चन्द्रमा मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–सिंह, चन्द्रमा–मेष, मंगल–कन्या, बुध–सिंह, गुरू–मिथुन, शुक्र–कर्क, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 1:58 तक है। ज्वालामुखी योग दिन 1:58 से आरम्भ होगा। आज पंचमी और भरणी का श्राद्ध है। आज विनोबा भावे जयन्ती और भूदान जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ सूर्योदय से 7:46 तक, चर 10:51 से 12:24 तक, लाभ–अमृत 12:24 से 3:28 तक, शुभ 5:01 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:14, सूर्यास्त 6:33

मेष
व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। मानसिक तनाव से राहत मिल सकती है। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

वृष
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मित्रों/भाई–बंधुओं के कारण समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव–प्रभुत्व बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

सिंह
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव बना रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

वृश्चिक
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। आपसी ईर्ष्या–वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मकर
घर–परिवार में शुभ–मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में चल रहे आपसी वाद–विवाद समाप्त होंगे।

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

सार-समाचार

भारत विकास परिषद् ने किया गुरु वंदन छात्र अभिनंदन कार्यक्रम

रतनगढ़(निसं)। भारत विकास परिषद् , शाखा - रतनगढ़ द्वारा स्थानीय टैगोर शिक्षण संस्था उच्च माध्यमिक विद्यालय , रतनगढ़ में गुरु वंदन छात्र अभिनंदन कार्यक्रम किया गया। मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से शुरू हुए कार्यक्रम में मंच पर स्थानीय शाखा के प्रांतीय उपाध्यक्ष (सेवा) वासुदेव चाकलान , शाखा सचिव परमेश्वर लाल आत्रेय, प्रकल्प प्रभारी राजेंद्र सिंह बिदावत, मदनदास स्वामी और संस्था प्रधान धर्मेंद्र कुमार कलाल मंचस्थ अतिथि के रूप में उपस्थित थे। विद्यालय परिवार द्वारा अतिथियों का शाब्दिक स्वागत् किया गया। श्री चाकलान ने भारत विकास परिषद् का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया वहीं राजेन्द्र सिंह बिदावत ने गुरु वंदन छात्र अभिनंदन कार्यक्रम पर विस्तृत प्रकाश डाला। शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने पर विद्यालय के अध्यापक मुकेश कुमार नायक, देवकीनंदन स्वामी व चंचल अग्रवाल को दुपट्टा ओढ़ाकर , कंठ हार पहनाकर प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया वहीं अपनी कक्षाओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थी दीपेन्द्रसिंह, आरती व दिव्या का दुपट्टा ओढ़ाकर प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मान किया गया । शाखा सचिव परमेश्वर लाल आत्रेय ने उपस्थित छात्रों को नशा न करने की शपथ दिलाई गई व विद्यालय परिवार का आभार व्यक्त किया एवं संस्था संचालक ओमप्रकाश नैण ने भारत विकास परिषद् का आभार प्रकट किया । कार्यक्रम का संचालन कोषाध्यक्ष शैलेश शर्मा ने किया। कार्यक्रम में सुशील गाडगिल, धर्मेंद्र शर्मा, राजीव प्रजापत, मनीषा दर्ज़ी सहित कई शिक्षक व विद्यार्थी उपस्थित थे।

रतनगढ़ में गूंजेगी डांडिया की थाप

रतनगढ़(निसं)। नगर का सांस्कृतिक परिदृश्य आगामी दिनों में उल्लास और उमंग से भरने वाला है। स्थानीय पिंजरापोल गोशाला ग्राउंड, चूरू रोड पर दिनांक 27 सितम्बर 2025, शनिवार को भव्य डांडिया महोत्सव आयोजित होगा। आयोजन का मुख्य आकर्षण होगा - पारंपरिक डांडिया-गरबा की प्रस्तुतियां, रंग-बिरंगी सजावट, संगीत की मधुर धुनें और भव्य आतिशबाजी।इस महोत्सव का आयोजन गैलेक्सी बिज़नेस ठ्रुप अहमदाबाद के सौजन्य से किया जा रहा है, जिसके निवेदक डॉ. जिजासा हेमन्त ताम्रायत हैं। आयोजकों ने बताया कि यह कार्यक्रम केवल कपल एवं बालिकाओं के लिए विशेष रूप से रखा गया है, ताकि महिलाओं और युवतियों को सुरक्षित एवं आनंददायी वातावरण मिल सके।महोत्सव की तैयारियों को लेकर पूरे शहर और आसपास के ठ्रामीण क्षेत्रों में उत्साह का माहौल है। आयोजन स्थल को आकर्षक लाइटिंग और पारंपरिक थीम से सजाया जाएगा। महिलाएं और युवतियां रंग-बिरंगी पोशाकों में गरबे की थाप पर थिरकेंगी और डांडिया की लय से पूरा वातावरण उल्लास से गूंज उठेगा।डॉ. हेमन्त ताम्रायत ने कहा कि डांडिया महोत्सव केवल एक सांस्कृतिक कार्यक्रम ही नहीं, बल्कि यह सामाजिक समरसता, भाईचारे और भारतीय परंपराओं को सहेजने का माध्यम भी है। गैलेक्सी सिक्योरिटी की विशेष टीम पूरे कार्यक्रम में सुरक्षा और व्यवस्था का ध्यान रखेगी।महोत्सव में भाग लेने वाले प्रतिभागियों के लिए यह अनुभव अविस्मरणीय रहेगा। आतिशबाजी और संगीत के बीच डांडिया महोत्सव की यह रात निश्चित ही रतनगढ़वासियों के लिए सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत करने वाला ऐतिहासिक पल साबित होगी।

श्री अनंतप्रकाशजी महाराज की पुण्यतिथि पर भव्य जागरण एवं विशाल भण्डारा

रतनगढ़(निसं) कर्म योगी संत श्री अनन्तप्रकाशजी महाराज की 19वीं पुण्यतिथि पर 13 व 14 सितम्बर को दादूद्वारा आश्रम, मेहाई माता मंदिर (अशोक स्तंभ के पास) में विशाल जागरण व भंडारे का आयोजन होगा। समाजसेवी सुनील कुमार चोटिया ने बताया कि 13 सितम्बर की रात्रि 9 बजे से प्रभु इच्छा तक भक्ति संध्या में शेखावाटी के संत-महात्मा प्रवचन व भजन-कीर्तन प्रस्तुत करेंगे। भजन गायक श्री प्रकाशदासजी महाराज अपनी प्रस्तुतियों से श्रद्धालुओं को भावविभोर करेंगे।14 सितम्बर को प्रातः 8 बजे से आरती, भोग, प्रसाद वितरण एवं संतों की विदाई का कार्यक्रम होगा। आयोजन महंत श्री देवादासजी महाराज के मार्गदर्शन और बाल साध्वी हेमलता बाई महाराज के संचालन में होगा।प्रचारक श्री राज राजेश्वरी गौशाला प्रांगण, नूंवा (रतनगढ़) की ओर से श्रद्धालुओं से अधिक से अधिक संख्या में पधारकर पुण्यलाभ अर्जित करने की अपील की गई ।

छात्र छात्राओं को टाई बेल्ट व बेज वितरण किये

तारानगर। तारानगर क्षेत्र के मोरथल गाँव की राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय की छात्र छात्राओ को भामाशाह प्रहलाद बुड़ानिया ने टाई बेल्ट व बेज वितरित किये एवं भविष्य में भी विद्यालय की आवश्यकताओं में पूर्ण सहयोग करने की घोषणा की। साथ ही जिला स्तरीय 17 वर्षीय छात्रा वॉलीबॉल प्रतियोगिता में उपविजेता रही टीम का सेवानिवृत अध्यापक व एसडीएमसी अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण फांडन एवं प्रधानाचार्य राकेश कुमार सहित स्टाफ सदस्यों ने स्वागत किया। सेवानिवृत अध्यापक फांडन ने 14 वर्ष वर्ग में विजेता होने वाली टीम के लिए ट्रैक सूट देने की घोषणा की। प्रहलाद बुडानिया ने विद्यालय की शैक्षिणक उपलब्धियों की प्रशंसा की एवं भविष्य में भी सहयोग का आश्वासन दिया। विद्यालय स्टाफ ने भामाशाहों का आभार व्यक्त किया। वरिष्ठ अध्यापक लक्ष्मीनारायण ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस मोके पर संदीप धुवां, रविप्रकाश स्वामी, महावीर प्रसाद राजपुरोहित, जयप्रकाश, महेंद्र सिंह, नरेंद्र कुमार शर्मा, सरला स्वामी सहित विद्यालय स्टाफ व बच्चे उपस्थित रहे।

उपराष्ट्रपति के निर्वाचन पर बांटी मिठाई

चिड़ावा। भारत के 15वें उपराष्ट्रपति सी.पी. राधा कृष्णन के निर्वाचन होने पर भाजपा ओबीसी मोर्चा जिला संयोजक डॉ. बीएल वर्मा के नेतृत्व में चिड़ावा में मिठाई खिलाकर एवं पटाखे फोड़कर खुशी मनाई गई। जिसमें पूर्व मंडल अध्यक्ष बाबूलाल वर्मा, चिड़ावा मंडल महामंत्री मदनलाल डारा ,भाजपा ओबीसी मोर्चा मंडल अध्यक्ष मोहनलाल जांगिड़, जिला उपाध्यक्ष संतोष सैनी, मंदरूप सिंह, भंवरलाल ,मनोहर लाल, भंवर लाल सैनी, संजय पुजारी, मनीष वर्मा, कमल खंडेलिया, अमित शर्मा, सुभाष चंद्र, सूर्य प्रकाश वर्मा, सत्यनारायण वर्मा आदि उपस्थित रहे।

खराब हुई फसल के बुंटे लेकर किसान पहुंचे उपखण्ड कार्यालय

- सरपंच यूनियन के अध्यक्ष रमेश सहारण के नेतृत्व में क्षेत्र के दर्जनों की किसान हाथों में खराब हुई मूंग मोठ की फसल के बुंटे लेकर पहुंचे
- अतिवृष्टि के कारण जहां मूंग में मोठ की फसल सड़ गल गई, वहीं बाजरी की फसल खड़े-खड़े खराब हो गई। जिस कारण किसानों को भारी आर्थिक व मानसिक क्षित पहुंची है
- खराब हुई फसल का शीघ्र सर्वे करवाकर मुआवजा दिलाने की पुरजोर मांग की।

नोहर (निसं.)। क्षेत्र में अतिवृष्टि से फसले लगभग तबाह हो गई है खासकर मूंग मोठ की फसल पर अतिवृष्टि का अधिक असर पड़ा है । जिसके चलते यह फैसले लगभग बर्बाद हो गई है । इसी कड़ी में क्षेत्र की ग्राम पंचायत श्योराणी व रातूसर के ग्रामीण अपनी खराब फसलों के साथ एसडीएम से मिले। सरपंच यूनियन के अध्यक्ष रमेश सहारण के नेतृत्व में क्षेत्र के दर्जनों की किसान हाथों में खराब हुई मूंग मोठ की फसल के बुंटे लेकर पहुंचे। किसानों ने एसडीएम को बताया कि उनके क्षेत्र में मूंग व मोठ की फसल कटाई पर थी। इसके अलावा बाजरी की फसल भी पूरी तरह से पक चुकी थी, लेकिन इसी दरमियान हुई अतिवृष्टि के कारण जहां मूंग में मोठ की फसल सड़ गल गई, वहीं बाजरी की फसल खड़े-खड़े खराब हो गई। जिस कारण किसानों को भारी आर्थिक व मानसिक क्षित पहुंची है। उन्होंने बताया की किसान अब कर्जदार होने के साथ-साथ भूखा मरने की कगार पर पहुंच चुका है। किसानों ने एसडीएम से मौके का मुआयना करने तथा खराब हुई फसल का शीघ्र सर्वे करवाकर मुआवजा दिलाने की पुरजोर मांग की। जिस पर एसडीएम राहुल श्रीवास्तव ने किसानों को शीघ्र राहत दिलाने का भरोसा दिलाया। इस दौरान पंच संतलाल नाई श्रवण मेघवाल, पूर्व सरपंच चानण राम, काशीराम सहारण, मंतूराम सुथार, हनुमान माहिया, चुन्नी राम बाना, हरपत सहारण, हंसराज, श्रवण सहारण, रामेश्वर गोदारा, दीवान गोदारा, लालचंद जाखड़, उपस्थित थे।

दिनदहाड़े दुकान से नगद रुपए चुराने का मामला दर्ज

- प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्रेनाइट एंड टाइल्स के प्रोपराइटर मूल सिंह राजपुत ने पुलिस को लिखित रिपोर्ट दी कि मेरी दूंकर रोड़ स्थित ग्रेनाइट एंड टाइल्स की दुकान है

बीदासर(निसं) । कस्बे में पूर्व में हुई चोरियों का खुलासा हुआ ही नही कि 6 सितंबर को चोर दिन दहाड़े दूंकर रोड़ स्थित करणी ग्रेनाइट एंड टाइल्स के आफिस में घुसकर गल्ले से 18 हजार रूपये नगद चुराकर ले जाने का मामला बीती रात को फर्म के प्रोपराइटर मूल सिंह राजपुत ने पुलिस थाना में दर्ज करवाया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार ठ्रेनाइट एंड टाइल्स के प्रोपराइटर मूल सिंह राजपुत ने पुलिस को लिखित रिपोर्ट दी कि मेरी दूंकर रोड़ स्थित ग्रेनाइट एंड टाइल्स की दुकान है। दिनांक 06.09.2025 को शाम 4 बजे के लगभग मैं अपने दुकान की गोदाम में था। उस वक्त दुकान के मुख्य काउंटर गल्ले पर कोई नही था। जब मैं गोदाम से आफिस में आया, तब दुकान का गल्ला खुला पड़ा था। मैंने गल्ले को चैक किया तो गल्ले में पड़े 18 हजार रूपयें गायब थे, जो किसी ने चोरी कर निकाल लिए। तब मैंने अपनी दुकान में लगे सीसीटीवी केमरे की रिर्काडिंग चैक की तो एक अज्ञात व्यक्ति ने दुकान के आफिस में घुसकर गल्ले से रूपये चुराकर दुपहिया वाहन से जाता दिखाई दिया। पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

एनसीसी कैडेट्स का रैंक सेरेमनी कार्यक्रम-2025

नोहर(निसं.)। श्रीमती नर्मदा देवी बिहानी राजकीय महाविद्यालय नोहर में 7वीं राज बटालियन बीकानेर द्वारा एनसीसी कैडेट्स की रैंक सेरेमनी कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्राचार्य प्रो. अमरसिंह मुनपरिया ने रैंक सेरेमनी कार्यक्रम की सराहना की और बताया कि यह पदोन्नित का प्रतीक है, जो कैडेटों को जिम्मेदारी और गौरव के साथ नेतृत्व करने के लिए प्रेरित करता है। डॉ. हरीश सबलानिया ने बताया कि एनसीसी देश सेवा, सामाजिक कार्यों और शिक्षा क्षेत्र में सराहनीय योगदान दे रही है। डॉ. बलदेवा राम ने बताया कि एनसीसी का मुख्य उद्देश्य युवा नागरिकों में अनुशासन, भाईचारा और निस्वार्थ सेवा जैसे आदर्शों का विकास करना है

रायपुर-पाटन डेम ओवरफ्लो से बना आकर्षक पर्यटन स्थल

- डेम के ओवरफ्लो के दृश्य इतने मनमोहक हैं कि स्थानीय ग्रामीणों से लेकर आसपास के इलाकों से लोग बड़ी संख्या में यहां पहुंच रहे हैं और प्राकृतिक सौंदर्य का लुत्फ उठा रहे है

पाटन। नीमकाथाना तहसील के रायपुर-पाटन डेम में हाल ही में हुई भारी बारिश के चलते डेम पूरी तरह भर गया है और इन दिनों ओवरफ्लो हो रहा है। डेम से बहता पानी अब रामपुरा बेगा की नांगल तक पहुंच चुका है, जिससे क्षेत्र में जलमग्न नज़ारे देखने को मिल रहे हैं। डेम के ओवरफ्लो के दृश्य इतने मनमोहक हैं कि स्थानीय ग्रामीणों से लेकर आसपास के इलाकों से लोग बड़ी संख्या में यहां पहुंच रहे हैं और प्राकृतिक सौंदर्य का लुत्फ उठा रहे हैं। बच्चे, युवा और परिवार के लोग बहाव क्षेत्र में नहाते और खेलते नजर आ रहे हैं। सोशल मीडिया पर भी यहां के वीडियो और तस्वीरें खूब वायरल हो रही हैं।हालांकि प्रशासन ने डेम के बहाव क्षेत्र में आमजन के प्रवेश पर रोक लगा रखी है, फिर भी लोग सुरक्षा नियमों की अनदेखी कर यहां पहुंच रहे हैं। पुलिस और प्रशासन द्वारा चेतावनी के बावजूद उत्साही भीड़ डेम पर मजे लेने से पीछे नहीं हट रही।

स्थानीय लोगों का कहना है कि वर्षों बाद डेम में इतना अधिक जलभराव हुआ है, जिससे यह स्थान अस्थायी पर्यटन स्थल जैसा प्रतीत हो रहा है। वहीं कुछ लोग प्रशासन से मांग कर रहे हैं कि भविष्य में इसे एक विकसित पर्यटन स्थल के रूप में भी देखा जाए।

प्रशासन ने आमजन से अपील की है कि वे डेम के बहाव क्षेत्र में जाने से बचें, क्योंकि अचानक जलस्तर बढ़ने से दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से एहतियात बरतना अति आवश्यक है।

जिला स्तरीय कपास कार्यशाला आयोजित

चूरू। बुधवार को जिला मुख्यालय स्थित कृषि उपज मंडी स्थित आत्मा सभागार में कृषि विभाग द्वारा एक दिवसीय जिला स्तरीय कपास कार्यशाला आयोजित की गई। कृषि विस्तार संयुक्त निदेशक डॉ राजकुमार कुलहरि ने कपास फसल के उत्पादन बढ़ाने सम्बन्धित जानकारी दी तथा डीएपी तथा यूरिया के स्थान पर एनपीके एवं एसएसपी उर्वरक के अधिक इस्तेमाल पर जोर दिया।

साथ ही कृषि कार्मिकों को अपने किसानों को वैज्ञानिक सिफारिश के अनुसार समय पर फसलों की बुवाई हेतु प्रचार-प्रसार करने की जानकारी दी। केवीके सरदारशहर के वैज्ञानिक डॉ मुकेश शर्मा ने कपास की फसलों में लगने वाले रोग व कीटों की पहचान तथा नियन्त्रण के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

टिड्डी सह एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन केंद्र के प्रभारी डॉ सूरजकरण चौधरी ने कपास फसल में समन्वित कीट प्रबंधन की जानकारी दी। सहायक निदेशक कुलदीप शर्मा ने कपास फसल उत्पादन बढ़ने हेतु चलाई जा रही योजना की जानकारी दी। केवीके चांदगोठी के विषय विशेषज्ञ डॉ शौकत अली ने कपास की फसलों में उर्वरक प्रबंधन एवं सिंचाई व्यवस्था की विस्तृत जानकारी दी। इस दौरान संगीता मीना, विजय पूरी, मोतीलाल सैनी, पूनम, नगेन्द्र नायक, पूनमचंद, कृषि अधिकारी, सहायक कृषि अधिकारी, कृषि पर्यवेक्षक एवं प्रगतिशील किसान उपस्थित थे।

जिला सीनियर फुटबाल प्रतियोगिता का उदघाटन

नोहर, (निसं.)। स्थानीय बिहानी स्टेडियम नोहर में जिला फुटबॉल संघ के तत्वाधान में जिला सीनियर फुटबाल प्रतियोगिता का उदघाटन समारोह पूर्वक हुआ। आईएएस उपखंड अधिकारी राहुल श्रीवास्तव ने प्रतियोगिता का उद्घाटन किया। इस अवसर पर आयोजित समारोह की अध्यक्षता पूर्व प्रधान उर्मिला बिजारणियां ने की।

विशिष्ट अतिथि प्रधानाचार्य महेंद्र कुमार मिश्रा, पुज सिंधी समाज के अध्यक्ष रमेश वाधवानी, पत्रकार मुकेश पारीक थे। इस अवसर पर विचार व्यक्त करते हुए एसडीएम राहुल श्रीवास्तव ने कहा कि खिलाड़ी टीम भावना के साथ खेलते हुए अपनी रुचि के अनुसार खेलों को खेले। उन्होंने कहा कि खेलने के अनेक फायदे हैं इससे मानसिक,शारीरिक व बौद्धिक विकास होता है। उन्होंने कहा कि खेल हमें तनाव से भी दूर रखता है। इस मौके पर उन्होंने बिहानी स्टेडियम की विभिन्न समस्याओं के समाधान के संबंध में आश्वासन दिया। पूर्व उप प्रधान उर्मिला बिजारणिया ने खिलाड़ियों से खेल को खेल की भावना से खेलने का आ ान करते हुए कहा कि नोहर और फुटबॉल एक दूसरे के पर्याय हैं। उन्होंने कहा कि बदलते परिवेश में बालिकाएं भी प्रत्येक खेल में अपना हुनर दिखा रही है जो की सुखद बात है।

जिला फुटबाल संघ के सचिव शशिकांत शर्मा ने खिलाड़ियों के सुविधाओं के मध्य नजर उपखंड अधिकारी को विभिन्न समस्याओं से अवगत कराया। शर्मा ने बिहानी स्टेडियम में चल रहे ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कार्यालय को अन्यत्र स्थानांतरित करने की मांग करते हुए कहा कि यहां खिलाड़ियों के लिए हॉस्टल की सुविधा होनी चाहिए। शशिकांत शर्मा ने बताया कि इस जिला स्तरीय फुटबॉल प्रतियोगिता में एक दर्जन से अधिक टीमें भाग ले रही है।

इस प्रतियोगिता के माध्यम से जिला फुटबॉल संघ हनुमानगढ़ की 18 सदस्यीय टीम का चयन किया जाएगा । जो कि 24 सितंबर से 28 सितंबर तक कोटा में होने वाली राजस्थान स्टेट सीनियर फुटबॉल चैंपियनशिप में भाग लेगी। समारोह में अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल खिलाड़ी रहे विजयकिशोर माहिया, रतन अरोड़ा, रामकुमार सैनी, जुल्फिकार पठान, बलबीर बिजारणियां, जे के वर्मा,प्रयाग सिंह,कोच गुलफान , लूनाराम, किशन सैनी, अशोक कंकर सहित अनेक फुटबॉल खिलाड़ी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मोहन सुथार ने किया।

स्वैच्छिक रक्तदान शिविर होगा आयोजित

नोहर, (निसं.)।स्व.प्रमोद कुमार पांडिया स्मृति संस्थान नोहर के तत्वावधान में एक स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह शिविर 17 सितम्बर 2025, बुधवार सुबह 8 बजे से पारीक धर्मशाला, नोहर में प्रारंभ होगा।इस शिविर में हॉस्पिटल जयपुर की टीम द्वारा रक्त संठाहण किया जायेगा।आयोजक सुरेश कुमार पांडिया ने क्षेत्र के सभी सामाजिक बंधुओं, युवाओं व जागरूक नागरिकों से अपील की है कि अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर रक्तदान करें और मानवता की सेवा में अपना अमूल्य योगदान दें।उन्होंने बताया कि रक्तदान महादान है और इससे किसी के जीवन को बचाया जा सकता है। इसी उद्देश्य को लेकर यह शिविर दिवंगत प्रमोद कुमार पांडिया की स्मृति में आयोजित किया जा रहा है।आयोजन समिति ने आमजन से इस पुनीत कार्य में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आग्रह किया है।

रतनगढ़ में नशा तस्करों पर पुलिस की बड़ी कार्रवाई

- इस कार्रवाई में पुलिस ने दो कारों से कुल7 किलो 445 ग्राम एमडी ड्रग्स बरामद की

रतनगढ़ (निसं) रतनगढ़ में पुलिस ने नाकाबंदी के दौरान बड़ी सफलता हासिल की है। बीकानेर रेंज आईजी हेमंत शर्मा के निर्देश पर चलाए जा रहे नशा विरोधी अभियान के तहत हनुमानगढ़ पुलिस से मिली सूचना पर रतनगढ़ पुलिस ने पड़िहारा और भोजासर के बीच नाकाबंदी की। इस कार्रवाई में पुलिस ने दो कारों से कुल7 किलो 445 ग्राम एमडी ड्रग्स बरामद की और चार तस्करों को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार आरोपियों मेंनागौर जिले के जैतपुरा कलां के नरसाराम (50), श्रवणराम (40), राजेश (22)औरजोधपुर के भोपालगढ़ निवासी स्वामी सत्यप्रकाश (50)शामिल हैं।पूछताछ में आरोपियों ने खुलासा किया कि वे एमडी ड्रग्स को नागौर से पंजाब ले जा रहे थे। इस कार्रवाई में हनुमानगढ़ और चूरू पुलिस की कई टीमें भी सहयोगी रही। हनुमानगढ़ केहेड कॉन्स्टेबल राकेश कुमार और कॉन्स्टेबल संदीप कुमारने सूचना जुटाने में अहम भूमिका निभाई। सरदारशहर थानाधिकारी मदनलाल बिश्नोईके अनुसार, सभी आरोपियों को कोर्ट में पेश कर8 दिन के पुलिस रिमांडपर लिया गया है।

श्रीमद् भागवत कथा का शुभारंभ, कलश यात्रा के साथ हुआ श्रीगणेश

चिड़ावा। शहर में पुराना पोस्ट ऑफिस के पास श्रीमद् भागवत कथा का आगाज बुधवार को कलश शोभायात्रा के साथ हुआ। शोभायात्रा से पूर्व नगर सेठ कल्याण राय मंदिर में भागवत का पूजन हुआ। इसके बाद गाजे बाजे के बीच कलश शोभा यात्रा शहर के कल्याण राय मंदिर से शुरू हुई।

शोभायात्रा मुख्य बाजार, विवेकानंद चौक, तिरंगा स्थल, पुरानी तहसील रोड, शिव मार्केट से होते हुए कथा स्थल पहुंची। यहां पर कथा वाचक दो राष्ट्रीय पुरस्कारों से विभूषित वाणीभूषण प्रभुशरण तिवाड़ी के सानिध्य में आचार्य आमोद शर्मा, आचार्य नरेश जोशी, आचार्य विक्रम शर्मा ने मुख्य यजमान रामोतार - कलावती देवी, अशोक- सीमा शर्मा, प्रमोद, अनिल, वेदप्रकाश, सुशील, विनोद शर्मा, संजय श्योपुरा, सौरभ, सिद्धार्थ शर्मा को मंत्रोच्चार के मध्य भागवत पूजन करवाया और विधिवत भागवत ग्रन्थ को व्यास पीठ के सामने विराजित करवाया गया।

इस मौके पर कथा वाचक तिवाड़ी ने पहले दिन कथा का माहात्म्य बताते हुए कहा कि भागवत कथा सबसे पवित्र धर्म ग्रन्थ है और इसका श्रवण मात्र ही पापों की मुक्ति का माध्यम बनता है। उन्होंने कहा कि पितृ पक्ष में भागवत कथा करवाने का सबसे अधिक पुण्य मिलता है यह ठाहस्थ धर्म का सबसे बड़ा महायज्ञ है जो श्रद्धा भाव से इस पुण्य कर्म को करता है अर्यमा आदि पितृ जन आशीर्वाद प्रदान करते हैं। भागवत कथा पितरों को मोक्षदायिनी है। भागवत महात्मय में धुंधकारी चरित्र एवं परीक्षित चरित्र का विशद वर्णन किया गया। राजेंद्र भगत एवं लाल राणा के मनमोहक भजनों पर श्रोता भाव विभोर हो गये सुरेश शेखावत के निर्देशन में भगवान विष्णु की सजीव झांकी सजाई गई। इस दौरान सज्जन ककरानियाँ, प्रदीप पुजारी, सुभाष पांडे ,अशोक शर्मा, प्रमोद शर्मा, अनिल शर्मा, वेद प्रकाश शर्मा, सुशील शर्मा, विनोद शर्मा, संजय शर्मा श्योपुरा, सौरभ - सिद्धार्थ शर्मा, ओम प्रकाश शर्मा, महेंद्र शर्मा, राकेश शर्मा, राजेश शर्मा, मिंटू मुकेश शर्मा, श्याम सुंदर शर्मा, ओमप्रकाश, राकेश शर्मा, राजेश शर्मा, पिंटू, मुकेश, श्यामसुंदर शर्मा, सुभाष धाबाई, अजय शर्मा, ग्यारसीलाल सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु महिला पुरुष मौजूद रहे।

होलसेल भण्डार की वार्षिक सभा की बैठक सम्पन्न

चूरू। सहकारी उपभोक्ता होलसेल भण्डार की वार्षिक साधारण सभा की बैठक बुधवार को जैन गेस्ट हाउस में चेयरमैन मोहनलाल गढ़वाल की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में उपाध्यक्ष राकेश कुमार ओझा, संचालक मंडल सदस्य अर्जुनराम कुल्हरी, भंवरलाल खीचड़, रणजीत सिंह, दीपिका सैनी, सहकारी बैंक के प्रबंध निदेशक मदनलाल शर्मा, उपरजिस्ट्रार सहकारिता सुनील मांडिया मंचस्थ अतिथि थे। वरिष्ठ सहायक राजेंद्र कुमार ठठेरा ने एजेंडे के अनुसार गत साधारण सभा की कार्यवाही का ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए वर्ष 2024-25 की ऑडिट रिपोर्ट व ऑडिट आक्षेप पूर्ति रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस दौरान उपस्थित सदस्यों ने विस्तृत विचार-विमर्श उपरांत ऑडिट रिपोर्ट जारी करते हुए ऑडिट आक्षेप पूर्ति का अनुमोदन सहित चालू वित्त वर्ष 2025-26 के अंतिम लेखों का लेखा परीक्षण करवाने हेतु ऑडिटर की नियुक्ति सहित एक कार्मिक के विरूद्ध तीन के गुणांक में अभ्यर्थी भिजवाए जाने तथा आगामी वित्त वर्ष में चयन हेतु विज्ञिप्त जारी करने और कार्मिक लिए जाने हेतु विचार-विमर्श उपरांत प्रस्ताव पारित किये गए। सहकारी बैंक के प्रबंध निदेशक व भंडार के पूर्व अध्यक्ष फतेहचंद सोती ने भी विचार व्यक्त किये। भंडार अध्यक्ष, मोहनलाल गढ़वाल व महाप्रबंधक हेमंत कुमार मीणा ने आगंतुक पदाधिकारियों व सदस्यों का आभार व्यक्त किया। विनोद शर्मा, अजयसिंह, सुदर्शन जोशी, राहुल शर्मा, दुलीचंद सैनी, इंदुबाला शर्मा व उपमा रक्षक ने कार्यक्रम में सहयोगी निभाई।

रतनगढ़ रोडवेज बस स्टैंड पर पुलिस की सख्ती

- चार टेंपो चालकों एवं चार मोटर साइकिल के चालान काटे
- अव्यवस्था और जाम से निजात दिलाने के लिए पुलिस की विशेष कार्रवाई, चालकों ने चेतावनी-नियम तोड़े तो होगी और सख्ती

रतनगढ़(निसं)रोडवेज बस स्टैंड क्षेत्र में आए दिन जाम और अव्यवस्था की स्थिति को देखते हुए मंगलवार को पुलिस ने विशेष अभियान चलाकर टेंपो चालकों पर सख्ती दिखाई। हाईवे पुलिस इंचार्ज ओम प्रकाश, रामनिवास ने बताया कि नियमों का पालन नहीं करने वाले चार टेंपो चालकों के व चार मोटरसाइकिलों के चालान भी काटे गए ।जानकारी के अनुसार बस स्टैंड क्षेत्र में कई बार देखा गया है कि टेंपो चालक यात्रियों की सुविधा की जगह मनमानी करते हुए अव्यवस्थित तरीके से वाहन खड़ा कर देते हैं। इससे न केवल यातायात जाम होता है बल्कि यात्रियों को भी भारी असुविधा का सामना करना पड़ता है। लगातार मिल रही शिकायतों को देखते हुए पुलिस ने मौके पर पहुँचकर कार्रवाई की।कार्रवाई के दौरान पुलिस अधिकारियों ने टेंपो चालकों को सख्त चेतावनी दी कि यदि आगे से यातायात नियमों का पालन नहीं किया गया तो और भी कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

ट्रैफिक इंचार्ज प्रभारी अमरचंद शर्मा व ओमप्रकाश ने बताया कि यह अभियान आगे भी जारी रहेगा, ताकि बस स्टैंड क्षेत्र में अनुशासन और व्यवस्था बनी रहे।स्थानीय नागरिकों और यात्रियों ने पुलिस की इस कार्रवाई का स्वागत करते हुए कहा कि लंबे समय से इस तरह की सख्त कार्रवाई की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। लोगों का कहना है कि बस स्टैंड पर जाम और अव्यवस्था से उन्हें आए दिन परेशानी झेलनी पड़ती थी। यदि ऐसे अभियान नियमित रूप से चलाए जाएँ तो यातायात व्यवस्था सुधरने के साथ-साथ यात्रियों को राहत मिलेगी।

युवक को अविलम्ब गिरफ्तार करने की मांग को लेकर दिया ज्ञापन

- न्यायालय परिसर में बीदासर पुलिस उपाधीक्षक प्रहलाद राय ने मिलकर नामजद आरोपी को गिरफ्तार करने का आश्वासन दिया और अधिवक्ताओं से डीएसपी की सकारात्मक वार्ता हुई

बीदासर (निसं) । एक युवक द्वारा फेसबुक पेज पर कस्बे के वरिष्ठ अधिवक्ता किशन लाल भादू के कार्यालय में चोरी छिपे वीडियो बनाकर वायरल करने, वकील समुदाय की छवि धूमिल करने के मामले को लेकर अभिभाषक संघ के अधिवक्ताओं से बुधवार को न्यायालय परिसर में बीदासर पुलिस उपाधीक्षक प्रहलाद राय ने मिलकर नामजद आरोपी को गिरफ्तार करने का आश्वासन दिया और अधिवक्ताओं से डीएसपी की सकारात्मक वार्ता हुई।

इस दौरान डीएसपी ने अधिवक्ताओं से लोक अदालत को देखतें हुए न्यायिक काम पर लौटने का आठाह किया। जिस पर बार संघ के अध्यक्ष अरविंद चौधरी सहित अधिवक्ताओं ने वृताधिकारी के आश्वासन के बाद सहमति जाहिर करते हुए कार्य स्थगन को वापस लिया। वार्ता के दौरान अभिभाषक संघ के संरक्षक एडवोकेट दीन दयाल प्रजापत के नेतृत्व में अधिवक्ताओं ने पुलिस महानिदेशक जयपुर और पुलिस महानिरीक्षक बीकानेर के नाम का ज्ञापन भी सौंपा। ज्ञापन देकर वीडियो वायरल करने वाले युवक को अविलम्ब गिरफ्तार करने की मांग की है। अभिभाषक संघ द्वारा डीजीपी और आईजी के नाम लिखे गए ज्ञापन में लिखा कि अभिभाषक संघ बीदासर के सदस्य एवं वरिष्ठ अधिवक्ता किशन लाल भादू के साथ एक व्यक्ति रमाकान्त जिसने फेसबुक पर "फैक्ट तंत्र" के नाम से एक फर्जी न्यूज चैनल बना रखा है उक्त व्यक्ति द्वारा दिनांक 05.09.2025 को उद्यापन के उद्देश्य से कारित की गई घटना एवं सोशल मीडिया का दुरुपयोग कर उसे वायरल कर पूरे वकील समुदाय को बदनाम करने का दुष्प्रयास किया है। जिसकी एफआईआर पुलिस थाना बीदासर में दर्ज है। एफआईआर दर्ज होने के बावजूद उक्त व्यक्ति द्वारा अपने फेसबुक पेज "फैक्ट तंत्र" दिनांक 07.09.2025 को उकसाने व धमकी भरी पोस्ट डाली गई, जिसमें उस व्यक्ति द्वारा कानून को धत्ता बताने का प्रयास किया गया है। जिसमें उक्त आरोपी द्वारा वकील समुदाय की छवि धूमिल करने के उद्देश्य से उस व्यक्ति द्वारा किये गये प्रयासों की अभिभाषक संघ बीदासर कड़े शब्दों में निन्दा करता है। असामाजिक तत्व द्वारा एक सम्मानित अधिवक्ता के विरूद्ध किये गये इस प्रकार के षड्यंत्र से सम्पूर्ण समाज एवं आमजन में अधिवक्ताओं के प्रति गलत संदेश गया है और अधिवक्ताओं की छवि धूमिल हुई है और कानून के प्रति विश्वास कमजोर हुआ है। ऐसे असामाजिक तत्वों के विरूद्ध सख्त से सख्त कार्यवाही होनी आवश्यक है। जिससे भविष्य में इस प्रकार की गतिविधियों की पुनरावृत्ति नहीं हो। संघ ने इस मामले की गम्भीरता, संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए यथाशीघ्र त्वरित कार्यवाही कर मामले के आरोपी की यथाशीघ्र गिरफ्तारी की मांग की है। ज्ञापन देने वालों में संघ के संरक्षक एडवोकेट दीनदयाल प्रजापत, वरिष्ठ अधिवक्ता किशन लाल भादू, रघुवीर भांभू, परमानंद बिजारणियां, शाहिद सोलंकी, हनुमान गोयल, ईरफान सोलंकी, सलमान भुट्टा, गोविंद जाखड़, लालचंद जाट, आमीन शेख, वसीम कानूनीया, अख्तर सोलंकी, तिलोक पिलानियां, प्रेम सैनी, राधाकिशन धेडू सहित कई अधिवक्तागण मौजूद थे।

केपीएस स्कूल रतनगढ़ का जिला स्तरीय हैंडबॉल में दबदबा

रतनगढ़(निसं)सेठ जवाहरमल सेठिया राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चाहड़वास में आयोजित 69 वीं जिला स्तरीय हैंडबॉल प्रतियोगिता में केपीएस उच्च माध्यमिक विद्यालय रतनगढ़ की टीम ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बिल्लु बास रामपुरा की टीम को फाईनल में 17-25 से हराकर 19 वर्ष में विजेता रही। टीम के स्कूल पहुंचने पर संस्था निदेशक डॉ ओमप्रकाश गोदारा,प्रबंधन निदेशक विजय गोदारा, प्रधानाचार्य रेवंताराम, परिसर प्रशासक नरेश, रामनिवास धायल, राजकुमार धेतरवाल, सुखदेव,उम्मेद, पूनम, किरण और समस्त स्टाफ सदस्य मौजूद रहे,इस अवसर पर विद्यालय परिवार में खुशी का माहौल छाया रहा। डॉ गोदारा ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में चयनित सभी खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की और साथ ही राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भी अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया।

तालाब गांव के लोकेन्द्र सिंह हत्याकांड का फरार इनामी आरोपी कोटा से गिरफ्तार

पांच हजार का इनामी अपराधी जाकिर उर्फ रिंकू पिछले 10 साल से फरार चल रहा था

बूंदी, (निसं)। जिले में हिण्डोली थाना क्षेत्र के तालाब गांव के बहुचर्चित लोकेन्द्र सिंह हत्याकांड के फरार इनामी आरोपी को कोतवाली थाना पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। महावीर कॉलोनी बूंदी निवासी पांच हजार का इनामी अपराधी जाकिर उर्फ रिंकू पुत्र हुसैन मोहम्मद पिछले 10 साल से फरार चल रहा था, जिसे कोतवाली थाना पुलिस ने कोटा से गिरफ्तार किया है।

जिला पुलिस अधीक्षक राजेंद्र कुमार मीणा ने बताया कि फरार और वांछित अपराधियों की धरपकड़ के लिए सभी थानाधिकारियों को विशेष निर्देश दिए थे, जिनकी की पालना में कोतवाली थाना प्रभारी भंवर सिंह के नेतृत्व में गठित पुलिस टीम ने कार्यवाही की। कोतवाली थाना प्रभारी भंवर सिंह ने बताया कि हिण्डोली थाना क्षेत्र के तालाब गांव में वर्ष 2015 में चर्चित लोकेन्द्र सिंह हत्याकांड हुआ था। इस प्रकरण में हिण्डोली पुलिस ने आरोपी जाकिर उर्फ रिंकू के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई करते हुए उसे गिरफ्तार कर अदालत में चार्जशीट पेश की थी। जमानत पर बाहर आने के बाद आरोपी ने न्यायालय में हाजिरी देना बंद कर दिया और फरार हो गया।

कोतवाली थाना पुलिस ने लोकेन्द्र सिंह हत्याकांड के फरार इनामी आरोपी को गिरफ्तार किया।

- आरोपी न तो मोबाइल का इस्तेमाल करता था और न ही सोशल मीडिया पर सक्रिय था, जिससे उसकी तलाश और मुश्किल हो गई थी

थाना प्रभारी ने बताया कि विशिष्ट न्यायालय, एससी, एसटी अत्याचार निवारण प्रकरण बूंदी ने आरोपी को स्थाई वारंटी घोषित कर दिया था। पुलिस की लगातार तलाशी के बावजूद पुलिस गिरफ्त से दूर रहे आरोपी जाकिर ने बूंदी स्थित अपना मकान तक बेच दिया और लंबे समय तक गुमनामी में रहा। आरोपी न तो मोबाइल का इस्तेमाल करता था और न ही सोशल मीडिया पर सक्रिय था, जिससे उसकी तलाश और मुश्किल हो गई। इसी बीच पुलिस अधीक्षक ने उस पर पांच हजार रुपये का इनाम घोषित कर दिया। थाना प्रभारी भंवर सिंह ने बताया कि 9 सितंबर को पुलिस को आरोपी के कोटा में छिपे होने की सूचना मिली। इसके बाद तुरंत टीम गठित कर कोटा भेजा गया। पुलिस ने तकनीकी साधनों और गुप्त सूत्रों की मदद से जाकिर को ट्रेस कर धर दबोचा। आरोपी को अब अदालत में पेश किया जाएगा।

ऑयल गोदाम में आग लगी

कोटा, (निसं)। उद्योग नगर इलाके के शिवसागर कॉलोनी में स्थित ऑयल गोदाम में आग लग गई। आग की सूचना पाकर नगर निगम की तीन दमकलें मौके पर पहुंची और काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया।

अगिनशमन अधिकारी राकेश व्यास ने बताया कि कैथून रोड़ शिवसागर कॉलोनी में एक मकान के अंदर ऑयल गोदाम में बुधवार तड़के आग की सूचना मिलते ही सब्जीमंडी फॉयर स्टेशन से दमकल को मौके के लिये रवाना किया गया। अग्निशमन अधिकारी राकेश व्यास ने बताया कि उस मकान के आस-पड़ोस में कई मकान होने से स्थिति गंभीर थी। टीम ने वहां जाकर देखा तो अंदर से बाहर तक ऑयल फैला हुआ था और आग अंदर लगी हुई थी। आग की गंभीरता को देखते हुए और दमकलें मौके पर बुलाई गई। टीम ने छत से चद्दर काटकर फोम की सहायता से आग पर कंट्रोल करते हुए अंदर पहुंचकर आग पर काबू पाया, लेकिन जब तक आग पर काबू पाया गया आग की चपेट में आने से एक कमरा पूरी तरह जलकर खाक हो गया। अगिनशमन अधिकारी ने बताया कि वहीं एक खुली रसोई थी, जहां से एक सिलेंडर को बाहर सुरक्षित निकाला गया, अगर सिलेंडर ब्लास्ट हो जाता तो बड़ा हादसा हो सकता था। दो कमरो में किये गये ऑयल भण्डारण को भी सुरक्षित बचाया गया।

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER PWD DIVISION BASERI

File No. 906 Date-03.09.2025

Notice Inviting Bid

Bids For NIT No. 10/2025-26 Rate contract Patch repair and Restoration work scheme SDRF under PWD Division Baseri of Subject matter(s) of Procurement are Invited from interested bidders date 04.09.2025 09.30 AM to Date 11.09.2025 upto 6.00 Noon. Other Particulars of the id may be visited on the Procurementportel (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppps.raj.nic.in) of the state: and PWD Departmental website. The approximate value of the Procurement is Rs. 45.19 Lacs.

NIB - PWD2526 A3081

UBN - PWD 2526 WSRC 11517

(Deepu Singh)
Executive Engineer
PWD Division Baseri

DIPR/C/13137/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड सरदारशहर

क्रमांकः 1432-39 दिनांकः 27/08/2025

ई-निविदा सूचना सं. 13/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से सरदारशहर खण्ड के अन्तर्गत मिसिंग लिंक सड़क निर्माण कार्य हेतु कुल 01 कार्य के लिए उपयुक्त श्रेणी के सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेलवे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हों, से निर्धारित प्रपत्र में ई-टेन्डिरिंग प्रक्रिया द्वारा ऑन-लाईन ई-निविदाएँ आमन्त्रित की जाती है। आर.पी.डब्ल्यू.ए.-100 की शर्त लागू होगी। ई-निविदा से सम्बन्धित विवरण वेबसाईट dipr.rajasthan.gov.in एवं विभागीय वेबसाईट eproc.rajasthan.gov.in तथा sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है। SPPP पर अपलोड NIB No. PWD2526A2939 के UBN No. निम्न प्रकार है-

UBN No. - 1. PWD2526WSOB11021

(राजेन्द्र कुमार सैनी)
अधिशाषी अभियन्ता,
सा.नि.वि. खण्ड सरदारशहर

DIPR/C/12771/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड चूरू

क्रमांक :- 2911-2925 दिनांक :- 26-08-2025

ई-निविदा सूचना संख्याः 35/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से तहसील व जिला चूरू में निर्माण कार्यों के लिए उपयुक्त श्रेणी के सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवम् दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई- टेन्डरिंग प्रक्रिया द्वारा ऑन लाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है। आर.पी डब्लयू.ए 100 की शर्त लागू होगी। निविदा से संबंधित विवरण बेबसाईट http://dipr.rajasthan.gov.in/tendrs.asp एंव विभागीय वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in http://www.pwd.rajajasthan.gov.in तथा http://sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है।

NIB No. - PWD2526A2888

UBN No.- 1. PWD2526WSOB10859, 2. PWD2526WSOB10861
3. PWD2526WSOB10863, 4. PWD2526WSOB10864

अधिशाषी अभियन्ता,
सा.नि.वि. खण्ड चूरू

DIPR/C/13114/2025

'नेपाल में रह रहे सभी भारतीय पूरी तरह सुरक्षित'

जोधपुर, (कासं)। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा कि नेपाल में रह रहे सभी भारतीय पूरी तरह से सुरक्षित हैं। पर्यटन और दर्शनार्थ की दृष्टि से वहां गए लोगों से लगातार संपर्क जारी है और उन्हें सुरक्षित लाने की व्यवस्था पूरी तरह सुनिश्चित की गई है। बुधवार को गृह नगर जोधपुर पहुंचे शेखावत ने एयरपोर्ट पर मीडिया से बातचीत की। उन्होंने कहा कि नेपाल में नोटम लगने के कारण किसी तरह के एयरपोर्ट ऑपरेशन नहीं हो रहा है और उनके इवेक्युएशन का कार्य आज से ही शुरू हो जाएगा। इसके लिए पहले से हमारे हवाई जहाज वहां खड़े हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भारत और नेपाल के बीच में सड़क मार्ग का रास्ता सबसे सुलभ मार्ग है। वह अब भी खुला है, लेकिन अभी एहतियात के मद्देनजर किसी भी भारतीय को कर्फ्यू के दौरान किसी भी तरह के ट्रैवल नहीं करने की हिदायत दी गई है। शेखावत ने कहा कि भारत सरकार इस पूरे घटनाक्रम को लेकर पूरी तरह संवेदनशील है।

आलापुर में जाति बदलकर जमीन खरीदने का मामला सी.एम.ओ. पहुंचा

- छह महीने से जांच दबाकर बैठे राजस्व कर्मचारी, परेशान होकर पीड़ित ने कदम उठाया
- समाज के लोगों के साथ जल्दी ही सीएम और मुख्य सचिव से मिलेगा पीड़ित परिवार

अलवर, (निसं)। अलवर और खैरथल राजस्व विभाग के कर्मचारियों द्वारा जांच रिपोर्ट देने में देरी करने से परेशान पीड़ित आलापुर निवासी दिनेश जाटव ने अब मामले को लेकर सीएमओ आफिस में गुहार लगाई है। वह जल्दी ही समाज के लोगों के साथ मुख्यमंत्री सहित मुख्य सचिव से मिलकर भ्रष्ट और नकारा कर्मचारियों के खिलाफ कार्यवाही और न्याय की गुहार करेगा।

अलापुर निवासी दिनेश जाटव ने बताया कि पिछले करीब छह महिने से तहसीलदार और पटवारी सहित विभागीय बाबू जाति प्रमाण की जांच को अटका कर बैठे हैं, जब भी उनसे जांच के बारे में बात की जाती है तो वे कह देते हैं कि भेज दी, लेकिन संबंधित तहसील में या तो लेटर पहुंचा ही नहीं या जहां पहुंच गया वहां उस पर कार्यवाही नहीं की जा रही, जबकि तहसीलदार लगातार उसे मार्क कर जांच के लिए भेज देते हैं, लेकिन संबधित बाबू लेटर को दबाने में लगे हैं।

मामले के अनुसार 12 मई को अलापुर निवासी दिनेश कुमार पुत्र किशोरी लाल जाटव ने एक प्रार्थना पत्र अलवर एसडीएम को पेश किया था जिसमें लिखा कि उसकी जमीन खसरा नम्बर 22-24 को पीपली का बास तहसील किशनगढ़ बास निवासी जीत सिंह पुत्र बंजार सिंह राय सिख और रणजीत पुत्र नत्था सिंह निवासी अलधाना तहसील लक्ष्मणगढ़ ने धोखाधड़ी से एससी बनकर खरीद कर ली जो कि नियम विरुद्ध है। जमीन खरीदने के बाद खरीददारों ने वापस अपनी जाति बदल ओबीसी कर ली, जिसमें तत्कालीन तहसीलदार और पटवारी ने उनकी पूरी मदद करने का आरोप लगाया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए एसडीएम ने इसकी जांच के लिए आदेश जारी कर दिये, लेकिन अलवर राजस्व विभाग के विभागीय बाबू ने काफी समय तक उक्त पत्र को डिस्पैच रजिस्टर में क्रमांक संख्या 1167-1168 दिनांक 2 जून 25 अंकित कर अपने पास रख लिया।

पंचायतों के बदले समीकरण की नही विभाग को जानकारी :-यहां पर उल्लेखनीय है कि अलवर एसडीएम कार्यालय में तैनात कर्मचारियों को इस बारे में जानकारी नहीं है कि अब अलवर के जिलों का बंटवारा हो चुका है और तहसील बदल चुकी है। उन्होंने यह जांच पत्र किशनगढ़बास तहसीलदार के नाम जारी कर दिया जहां वह रद्दी की टोकरी मे पड़ा रहा। आखिर शिकायतकर्ता ने जब किशनगढ़बास तहसीलदार के पास जाकर जांच की तो मामला सामने आया कि अब खैरथल तिजारा जिले की जगता वसई गांव में चला गया है। शिकायतकर्ता के प्रयासों के बाद उक्त पत्र को खंगाला गया तो पता चला कि यह पत्र 18 जून को किशनगढ़ बास पहुंचा और तहसीलदार ने उस पर नियमानुसार कार्यवाही के आदेश 19 जून को कर दिए थे, लेकिन विभागीय बाबूओ ने इस मामले को लटकाए रखा और 25 जुलाई को एक पत्र क्रमांक आरए-25-612 खैरथल तहसीलदार के नाम पर जारी किया कि पीपली का बास जगता बसई के अंतर्गत आता है और जीत सिंह पुत्र बंजार सिंह की जाति का सत्यापन कर भिजवाया जाए। आज इस पत्र को भी दो महीने से ज्यादा का समय हो गया है लेकिन विभागीय कर्मचारियों की लापरवाही के कारण इस पत्र का जवाब पिछले दो माह से नहीं आया है।

वहीं जगता बसई के पटवारी प्रेम पाल सिंह राठौड़ ने जांच के आदेश नहीं मिलने की बात कह कर पल्ला झाड़ लिया।

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग खण्ड-फागी

क्रमांक-505 दिनांक-01.09.2025

ई-टेन्डिरिंग सूचना संख्या 09/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्नलिखित कार्यो के लिये उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार क अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के विभिन्न श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से कार्य हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में प्राप्त की जावेगी। निविदा से सम्बन्धित विवरण वेबसाईट http://dipr.rajasthan.gov.in/tenders.asp व www.sppp.rajasthan.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। FINANCE (G&T) DEPARTMENT NOTIFICATION Jaipur, October 22, 2021 (75A, Additional Performance Security-(1) In addition to Performance Security as specified in rule 75, an Additional Performance Security shall also be taken from the successful bidder in case of unbalanced bid. The Additional Performance Security shall be equal to fifty percent of Unbalanced Bid Amount. The Additional Performance Security shall be deposited in lump sum by the successful bidder before execution of Agreement. The Additional Performance Security shall be deposited through e-Grass. Demand Draft, Bnker's Cheque, Government Securities of Bank Guarantee.)

निविदा का कार्य	-	Various Work in PWD Division-Dudu, Jaipur (2Nos)
कुल राशि (रूपयो में)	-	रूपये 143.84 लाख
कुल धरोहर राशि (रू.में)	-	अनुमानित लागत का 2 प्रतिशत
निविदा आवेदन/डाउनलोड करने की तारीख	-	गुरूवार, 04 सितम्बर, 2025 प्रात 9.30 बजे से शनिवार 13 सितम्बर 2025 सायं 6.00 बजे तक
निविदा जमा कराने की तारीख	-	गुरूवार, 04 सितम्बर, 2025 प्रात 9.30 बजे से शनिवार 13 सितम्बर 2025 सायं 6.00 बजे तक
निविदा खोलने की तारीख	-	सोमवार, 15 सितम्बर, 2025 को सायं- 3.00 बजे
प्रोसेसिंग शुल्क एवं निविदा शुल्क जमा कराने की प्रक्रिया	-	वित्त विभाग द्वारा जारी परिपत्र प.6(5)/वित्त/साविलेनि/2018 दिनांक 27.04.2020 के अनुसार ई ग्रास पर आन लाईन के माध्यम से चालान द्वारा (परिपत्र संलग्न) 1. प्रोसेसिंग शुल्क-8658-00-102-16-02 निर्माण विभाग 2. निविदा शुल्क- 0075-00-800-52-01 3. धरोहर राशि- 8443-00-108-00-00 ऑफिस आई.डी. 8346

UBN NO.:

(संदीप टाटीवाल)
अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. फागी (जयपुर

DIPR/C/13078/2025

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER, P.W.D. DN. KOTRA

क्रमांक-449 दिनांक-20.08.2025

Notice Invision Bid No. 09/2025-26

NIB No.: PWD2526A2907

Bids for Various works are invited from interested bidders upto29.08.2025 10.00 AM to 11.09.2025 06.00 PM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal ("http://eproc.rajasthan.gov.in" and "http://sppp.rajasthan.gov.in") of the state, and department website. The approximate value of procurement of 14 Works is Rs. 287.00 Lacs.

UBN No - 1. PWD2526WSOB10965, 2. PWD2526WSOB10966, 3. PWD2526WSOB10967
4. PWD2526WSOB10968, 5. PWD2526WSOB10969, 6. PWD2526WSOB10970
7. PWD2526WSOB10961, 8. PWD2526WSOB10972, 9. PWD2526WSOB10973
10. PWD2526WSOB10974, 11. PWD2526WSOB10975, 12. PWD2526WSOB10976
13. PWD2526WSOB10977, 14. PWD2526WSOB10978

(KAPIL KUMAR AWASTHY)
EXECUTIVE ENGINEER
P.W.D. Dn. KOTRA

DIPR/C/12709/2025

Office of the Executive Engineer, PHED, Distt Rural Div I Bikaner

Email ID-eepheddn1bkn@gmail.com, Contact No. 0151-2941473

No. 1642-62 Date:03/09/25

Notice Inviting Bid : 54-60/2025-26

Bid for various works are invited to registered interested bidder upto 15.09.2025 upto 02.00 PM. Other particulars of bid may be visited on the Procurement Portal http://eproc.rajasthan.gov.in and http://sppp.raj.nic.in of the state. The approximate value of the procurement of Rs. 207.50 Lacs.

UBN No. PHE2526WSRC06060, PHE2526WSRC06066, PHE2526WSRC06067, PHE2526WSRC06068, PHE2526WSRC06069, PHE2526WSRC06070, PHE2526WSRC06071

जल सीमित है, इसकी बचत करें।

(Dharmendra Kumawat)
Executive Engineer
PHED, Distt (R) Div I Bikaner

DIPR/C/12765/2025

नीमराणा में किन्नर की दिनदहाड़े गोली मारकर हत्या

अलवर, (निसं)। नीमराणा क्षेत्र में बुधवार को एक सनसनीखेज वारदात सामने आई है। अज्ञात बाइक सवार दो बदमाशों ने किन्नर मधु को दिनदहाड़े गोली मार दी। घटना बिचपुरी रोड की बताई जा रही है। गंभीर हालत में मधु को तुरंत अस्पताल के ट्रॉमा सेंटर ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। बदमाशों ने किन्नर मधु को उस वक्त गोली मारी जब वह गाड़ी में बैठी थी।

प्राथमिक जांच में सामने आया है कि वारदात किन्नरों के बीच आपसी क्षेत्रीय विवाद और रुपए के लेनदेन से जुड़ी हो सकती है। फिलहाल पुलिस इस पूरे मामले की गहन जांच कर रही है। घटना की सूचना मिलते ही नीमराणा सचखंड अस्पताल के बाहर भारी संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया। इलाके में तनावपूर्ण माहौल बना हुआ है। जानकारी के अनुसार गोली मारने वाले बदमाश बाइक पर सवार थे। उन्हें पकड़ने के लिए इंटर स्टेट नाकाबंदी करवाई गई है। दोनों की तलाश में पुलिस की टीमें लगी हुई हैं। इस घटना से नीमराणा और आसपास के क्षेत्र में दहशत का माहौल है।

किन्नर मधु (फाइल फोटो)।

- बाइक सवार दो बदमाशों ने किन्नर मधु को उस वक्त गोली मारी, जब वह गाड़ी में बैठी थी
- प्राथमिक जांच में सामने आया है कि वारदात किन्नरों के बीच आपसी क्षेत्रीय विवाद और रुपए के लेनदेन से जुड़ी हो सकती है

चोरी की घटना का खुलासा

पावटा, (निसं)। रात में घर में घुसकर जेवरात व नकदी चोरी की वारदात को अंजाम देने वाले चोर को प्रागपुरा थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है। प्रागपुरा थाना प्रभारी किरण सिंह ने बताया कि 27 मई को शेरसिंह निवासी भिवाजी राजनौता ने प्रागपुरा थाना पुलिस थाना में मामला दर्ज करवाया था कि 16 से 19 मई तक परिवादी व परिवादी के घर का कोई सदस्य घर पर नहीं थे। रात्रि में अज्ञात व्यक्ति घर में घुसकर घर से जेवरात व नकदी चोरी कर ले गए, जिस पर अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ सक्षम धाराओं में मुकदमा दर्ज कर अनुसंधान करते हुए तलाश शुरू की। प्रागपुरा थाना प्रभारी किरण सिंह के नेतृत्व में गठित टीम ने अभियुक्त लीलू सिंह पुत्र सुरजन सिंह निवासी नांगल सालिया पुलिस थाना कोटकासिम को गिरफ्तार कर लिया।

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग खण्ड-फागी

क्रमांक-335 दिनांक-01.09.2025

ई-टेन्डिरिंग सूचना संख्या 10/2025-26

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्नलिखित कार्यो के लिये उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार क अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के विभिन्न श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से कार्य हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में प्राप्त की जावेगी। निविदा से सम्बन्धित विवरण वेबसाईट http://dipr.rajasthan.gov.in/tenders.asp व www.sppp.rajasthan.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। FINANCE (G&T) DEPARTMENT NOTIFICATION Jaipur, October 22, 2021 (75A, Additional Performance Security-(1) In addition to Performance Security as specified in rule 75, an Additional Performance Security shall also be taken from the successful bidder in case of unbalanced bid. The Additional Performance Security shall be equal to fifty percent of Unbalanced Bid Amount. The Additional Performance Security shall be deposited in lump sum by the successful bidder before execution of Agreement. The Additional Performance Security shall be deposited through e-Grass. Demand Draft, Bnker's Cheque, Government Securities of Bank Guarantee.)

निविदा का कार्य	-	Various Work in PWD Division-Phagi, Jaipur (2Nos)
कुल राशि (रूपयो में)	-	रूपये 162.82 लाख
कुल धरोहर राशि (रू.में)	-	अनुमानित लागत का 2 प्रतिशत
निविदा आवेदन/डाउनलोड करने की तारीख	-	गुरूवार, 04 सितम्बर, 2025 प्रात 9.30 बजे से शनिवार 13 सितम्बर 2025 सायं 6.00 बजे तक
निविदा जमा कराने की तारीख	-	गुरूवार, 04 सितम्बर, 2025 प्रात 9.30 बजे से शनिवार 13 सितम्बर 2025 सायं 6.00 बजे तक
निविदा खोलने की तारीख	-	सोमवार, 15 सितम्बर, 2025 को सायं- 3.00 बजे
प्रोसेसिंग शुल्क एवं निविदा शुल्क जमा कराने की प्रक्रिया	-	वित्त विभाग द्वारा जारी परिपत्र प.6(5)/वित्त/साविलेनि/2018 दिनांक 27.04.2020 के अनुसार ई ग्रास पर आन लाईन के माध्यम से चालान द्वारा (परिपत्र संलग्न) 1. प्रोसेसिंग शुल्क-8658-00-102-16-02 निर्माण विभाग 2. निविदा शुल्क- 0075-00-800-52-01 3. धरोहर राशि- 8443-00-108-00-00 ऑफिस आई.डी. 42219

UBN NO.: PWD2526WSOB11474, PWD2526WSOB11475

(संदीप टाटीवाल)
अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. फागी (जयपुर

DIPR/C/13085/2025

राजस्थान सरकार

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, खण्ड चूरू

ई-44, अग्रसेन नगर, चूरू, E-mail: eemhchuru@yahoo.com, Ph. No. 01562-254670

क्रमांक- प.01()/चि.स्वा./खण्ड-चूरू/2025-26/411 दिनांक-20.08.2025

निविदा सूचना संख्या- 09/2025-26

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, खण्ड चूरू के अन्तर्गत जिला चूरू के उप जिला अस्पताल राजगढ में फायर सिस्टम, लिफ्ट एवं एयर कंडिशनिंग एवं प्रा.स्वा. केन्द्रों पर आन्तरिक विद्युतीकरण कार्य का कार्य राशि रू. 243.11 लाख तक के कार्य के लिए निविदा से सम्बन्धित विवरण DIPR की वेब साईट www.dipronline.org, http://sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है।

UBN NO. NRH2526WSOB00920

अधिषाशी अभियन्ता
चिकित्सा एवं स्वास्थ्य
खण्ड चूरू

DIPR/C/13096/2025

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF POLICE RAJ JAIPUR

V-15(3)PS/SAMGRI/New Item/2025-26/12465 DATED-01-09-2025

NOTICE INVITING BIDS

NIB NO. POL2526A0026

Bids for Many Item's of estimated value INR 70,00,000/- are invited from interested bidders up to dated 12.09.2025 at 11.00 am. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (https://eproc.rajasthan.gov.in) (https://sppp.rajasthan.gov.in/) of the state, and https://www.police.rajasthan. gov.in

UBN.

GPS DEVICE	POL2526GLOB00081
AUDIO VEDIO PHOTOGRAPHY DEVICE	POL2526GSOB00082
NON-LINEAR JUNCTION DETECTOR	POL2526GLOB00083

Supdt. of Police
Central Stores, PHQ Raj. Jaipur
Tel-0141-2744289
Mail ID-sp.cstore.pmw@rajpolice.gov.in

DIPR/C/13036/2025

रास्ते के विवाद को लेकर मारपीट मामले में चार आरोपी गिरफ्तार

पावटा, (निसं)। भाबरू थाना क्षेत्र में रास्ते के विवाद संबंधित रंजिश पर एकराय होकर घर के अंदर घुसकर मारपीट करने वाले चार आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। भाबरू थाना प्रभारी अंकित सामरिया ने बताया कि 4 नवंबर 2024 को प्रार्थी रुड़मल ने मामला दर्ज करवाया था कि रास्ते सबंधी विवाद को लेकर आरोपियों ने घर में घुसकर मारपीट की घटना को अंजाम दिया है, जिसमें उनके चोटें भी आई हैं, जिस पर भाबरू थाना पुलिस द्वारा मामला दर्ज कर अनुसंधान प्रारंभ किया।

जिला पुलिस अधीक्षक कोटपूतली बहरोड देवेंद्र कुमार विश्नोई द्वारा पुलिस मुख्यालय द्वारा वर्तमान में वांछित अपराधियों की धरपकड़ अभियान के तहत त्वरित कार्यवाही करने के निर्देशों की पालना में अभियान के तहत अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोटपूतली वैभव शर्मा के निर्देशन व वृत्ताधिकारी वृत्त विराटनगर शिप्रा राजावत के सुपरविजन एवं भाबरू थाना प्रभारी अंकित सामरिया के नेतृत्व में गठित टीम ने बाबूलाल पुत्र गिरधारी निवासी, जगदीश पुत्र गिरधारी, रमेश पुत्र चंदाराम, योगेश उर्फ लोकेश पुत्र बाबूलाल सभी निवासी ढाणी कोठाला तन बजरंगपुरा थाना भाबरु को गिरफ्तार किया गया।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

पूरक परीक्षा 2025 में उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियों हेतु ऑनलाईन आवेदन करने एवं शुल्क जमा कराने की तिथि एवं मुख्य परीक्षा-2026 हेतु एक अतिरिक्त परीक्षा शुल्क सहित आवेदन करने की अन्तिम तिथि में संशोधन की सूचना

(A) बोर्ड की 2025 की पूरक परीक्षाओं मे उत्तीर्ण / अनुत्तीर्ण परीक्षार्थियों हेतु मुख्य परीक्षा 2026 के लिए ऑनलाईन आवदेन करने एवं शुल्क जमा कराने की अन्तिम तिथियां निम्नानुसार हैं :-

परीक्षा शुल्क	आवेदन पत्र भरने एवं चालान मुद्रण की आरम्भ तिथि	आवेदन पत्र भरने एवं चालान मुद्रण की अन्तिम तिथि	परीक्षा शुल्क बैंक में जमा कराने की अन्तिम तिथि	आवेदन पत्र एवं चालान नोडल केन्द्र पर जमा कराने की अन्तिम तिथि
1. सामान्य परीक्षा शुल्क	11.09.2025	17.09.2025	19.09.2025	01.10.2025
2 एक अतिरिक्त परीक्षा शुल्क सहित	18.09.2025	25.09.2025	29.09.2025	01.10.2025
3. मुख्य परीक्षा, 2026 हेतु भरे गये आवेदन पत्रों में ऑनलाईन संशोधन की तिथि	01.10.2025 से 11.10.2025 तक			

विद्यालय एवं परीक्षार्थी मूल अंकतालिकाओं का इन्तजार नहीं करें एवं परीक्षा शुल्क जमा कराने की कार्यवाही शीघ्र करें। परीक्षा शुल्क नियमित परीक्षार्थियों के लिये रू. 600/- तथा स्वयंपाठी परीक्षार्थियों के लिये रू. 650/- निर्धारित है। प्रायोगिक परीक्षा शुल्क रू. 100/- प्रति विषय पृथक से देना होगा। विशेष योग्यजन (CWSN) तथा युद्ध में वीरगति को प्राप्त अथवा अपाहिज सैनिकों के पुत्र/पुत्रियों/ पुलवामा हमले में शहीद हुए सैनिकों के आश्रितों को परीक्षा शुल्क से मुक्त रखा गया है, किन्तु इन्हें टोकन शुल्क रू. 50/- जमा कराना होगा। अधिक जानकारी बोर्ड वेबसाईट http://rajeduboard.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है। बोर्ड कन्ट्रोल रूम फोन नम्बर 0145-2632866, 2632867, 2632868 पर सम्पर्क किया जा सकता है। Email ID ddexamfirst@gmail.com

(B) वर्ष 2026 की परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले समस्त नियमित परीक्षार्थियों के ऑनलाईन परीक्षा आवेदन-पत्र मरने एवं शुल्क जमा कराने की अन्तिम तिथियों में निम्नानुसार संशोधन किया गया हैं :-

परीक्षा शुल्क	आवेदन पत्र भरने एवं चालान मुद्रण की आरम्भ तिथि	आवेदन पत्र भरने एवं चालान मुद्रण की अन्तिम तिथि	परीक्षा शुल्क बैंक में जमा कराने की अन्तिम तिथि	आवेदन पत्र एवं चालान नोडल केन्द्र पर जमा कराने की अन्तिम तिथि
एक अतिरिक्त परीक्षा शुल्क सहित	04.09.2025	16.09.2025	19.09.2025	01.10.2025

नोट :- समस्त विद्यालयों को नियमित एवं स्वयंपाठी परीक्षार्थियों के माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, प्रवेशिका, वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा के आवेदन-पत्र नोडल केन्द्रों पर निर्धारित दिनांक 01.10.2025 तक अनिवार्यतः जमा कराने होंगे।

सचिव

कार्यालय उप वन संरक्षक (वन्यजीव) राष्ट्रीय चम्बल घडियाल अभ्यारण, धौलपुर

महिला पुलिस थाने के पास, हाउसिंग बोर्ड, पुरानी छावनी, धौलपुर, पिन कोड-328001

Email ID : dcfwlghariyalswm@gmail.com

क्रमांक-एफ( )उपसं/वजीधौ./राचघअ./2025-26/2339 दिनांक-4/9/25

Notice Inviting Bid

Bid for providing Construction of Choki at Forest Block of Wildlife Range Vanvihar of DCF WL NCS Dholpur are invited from interested bidders upto 11:00 AM, 12.09.2025, other particulars of bid may be visited on the procurement portal http://sppp.rajasthan.gov.in, http://eproc.rajasthan.gov.in of the state. The approximate value of the procurement is 63.94 lakhs.

UBN No. FOR2526WSOB01731

(डा. आशीष व्यास)
उप वन संरक्षक (वन्यजीव)
राष्ट्रीय चम्बल घडियाल अभ्यारण,
धौलपुर

DIPR/C/13166/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड जालोर

क्रमांक-अअ/जा/2025-26/1708 दिनांक-26.08.2025

ई-निविदा सूचना संख्याः 12 वर्ष 2025-2026

NIB NO. PWD2526A2934

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से भवन व सडक कार्य के आधार पर उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जा कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो से निर्धारित प्रपत्र में कार्य जिनकी लागत राशि रू. 46.45 लाख हैं के लिए ईटेण्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है।

ऑनलाईन निविदा आवेदन डाउनलोड एवं अपलोड करने की तारीख	03 सितम्बर 2025, 9.30 बजे से 25 सितम्बर 2025, सायं 06.00 बजे तक

निविदा से सम्बन्धित विवरण वेब साईट http://dipr.rajasthan.gov.in व http://sppp.rajasthan.gov.in व http://eproc.rajasthan.gov.in पर देख जा सकता है। सम्पूर्ण निविदा प्रक्रिया http://eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन सम्पादित की जायेगी। इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट पर http://eproc.rajasthan.gov.in पर रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है। कार्यवार यू.बी.एन. संख्या निम्नानुसार है।

UBN NO. 1. PWD2526WSOB11009, 2. PWD2526WSOB11010, 3. PWD2526WSOB11011, 4. PWD2526WSOB11012, 5. PWD2526WSOB11013

(शंकर लाल)
अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड जालोर

DIPR/C/12809/2025

हमला व तोड़फोड़ करने के 10 आरोपी गिरफ्तार

डूंगरपुर, (निसं)। धम्बोला थाना पुलिस ने एक युवक के घर पर उसकी प्रेमिका के परिजनों द्वारा हमला कर तोड़फोड़ और आगजनी के मामले में 10 हमलावरों को गिरफ्तार किया है।

सीमलवाड़ा पुलिस उपाधीक्षक ने बताया कि एक युवक नाबालिग प्रेमिका को 18 दिन पहले भगा ले गया था, जिस पर प्रेमिका के परिजनों ने प्रेमी के घर वालों को उसे वापस लाकर सौंपने की बात कही थी। वहीं नहीं लाने पर परिणाम भुगतने की चेतावनी दी थी। नाबालिग के नहीं आने पर उसके परिवार के लोगों ने 8 सितम्बर को युवक के घर और उसके परिवार के घरों पर हमला बोल दिया। हमला होने पर प्रेमी के घर वाले अपनी जान बचाकर घर छोड़कर भाग गए। पीछे से हमलावरों ने घरों में घुसकर जमकर तोड़फोड़ की थी। वहीं एक घर में रखी घास को आग के हवाले कर दिया था। पीड़ित पक्ष ने थाने में मामला दर्ज करवाया था।

कार्यालय उप वन संरक्षक एवं उप क्षेत्र निदेशक (द्वितीय) रणथम्भौर टाईगर रिजर्व करौली

Mail ID-dcfb kroli.forest@rajasthan.gov.in Phone No. 07454-297007

क्रमांक-एफ()स्टोर/उवसं.(द्वितीय)/2025-26/ दिनांक

ई-निविदा सूचना संख्या 04/2025-26

क्र. सं.	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत लाखों में (लगभग)	अमानत राशि	निविदा शुल्क	ऑन लाइन लाइन प्रक्रिया शुल्क RISL	निविदा डाउनलोड/ अपलोड करने की तिथि व समय	कार्य पूर्ण करने की अवधि	ऑन लाईन तकनीकी बिड खोलने की तिथि व समय	वित्तीय निविदा खोलने का समय
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	वनरक्षक चौकी निर्माण कार्य सॉफ्ट एन्कलोजर लखरूकी के पास रेंज कैलादेवी	12.56	कुल लागत का 02 प्रतिशत राशि रू. 45540/-	1000/-रू.	500/-रू	दिनांक 26.08.2025 सायं 3 बजे से दिनांक 09.09.2025 (सायं 6 बजे तक)	120 दिवस	10.09.2025 को दोपहर 12 बजे	तकनीकी बिड में पात्र पाये जाने के उपरान्त
2	रेंज कैम्पस करणपुर में रेंज कम रेजीडेंस भवन निर्माण कार्य	22.77	कुल लागत का 02 प्रतिशत राशि रू. 25120/-	1000/-रू.	500/-रू	दिनांक 26.08.2025 साय 3 बजे से दिनांक 09.09.2025 (सायं 6 बजे तक)	120 दिवस	10.09.2025 को दोपहर 12 बजे	तकनीकी बिड में पात्र पाये जाने के उपरान्त
3	वनरक्षक चौकी निर्माण कार्य टिखुटी, नाका मांतोरियाकी रेंज नैनियाकी	12.56	कुल लागत का 02 प्रतिशत राशि रू. 25120/-	1000/-रू.	500/-रू	दिनांक 26.08.2025 सायं 3 बजे से दिनांक 09.09.2025 (सायं 6 बजे तक)	120 दिवस	10.09.2025 को दोपहर 12 बजे	तकनीकी बिड में पात्र पाये जाने के उपरान्त

NIB Code - FOR2526A1204, UBN No.- FOR2526WSOB01511, FOR2526WSOB01512, FOR2526WSOB01513

(पीयूष कुमार शर्मा)
उप वन संरक्षक एवं उप क्षेत्र निदेशक (द्वितीय) रणथम्भौर टाईगर रिजर्व करौली

जयपुर में विरासत और विकास का अद्भुत संगम बनेगा राजस्थान मंडपम

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की उपस्थिति में रीको और एनबीसीसी के बीच हुआ समझौता

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। राजधानी जयपुर में अब ऐसा भव्य स्थल तैयार होगा, जो प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान को संजोते हुए आधुनिक सुविधाओं से युक्त होगा। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की उपस्थिति में बुधवार को राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं निवेश निगम (रीको) तथा राष्ट्रीय भवन निर्माण निगम (एनबीसीसी) के बीच "राजस्थान मंडपम" और उससे जुड़ी परियोजनाओं के निर्माण के लिए समझौता किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि जयपुर में प्रस्तावित यह विशाल परिसर राजस्थान की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत के साथ-साथ आधुनिक आवश्यकताओं को भी पूर्ण करेगा। इसमें सम्मेलन भवन, प्रदर्शनी कक्ष, राजस्थानी शिल्पकला को दर्शाने वाले मंच, आवासीय व्यवस्था, भोजनालय, व्यावसायिक उपयोग की इमारतें, तथा आकर्षक उद्यान शामिल होंगे।

मुख्यमंत्री शर्मा ने कहा कि यह परियोजना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकास के साथ विरासत भी के संकल्प को साकार करेगी। उन्होंने कहा कि राजस्थान मंडपम केवल ईंट और पत्थरों की इमारत नहीं होगी, बल्कि यह राजस्थान की आत्मा, उसकी संस्कृति, परंपरा, कला, और लोक जीवन को नई पहचान देगी। यह स्थल आने वाले समय में राजस्थान की सांस्कृतिक गरिमा का प्रतीक बन जाएगा। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि जयपुर अब सम्मेलन पर्यटन का प्रमुख केन्द्र बनेगा। देश-विदेश से लोग यहां आयोजनों के लिए आएंगे, जिससे पर्यटन, रोज़गार, और स्थानीय शिल्पकारों को भी लाभ मिलेगा।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की उपस्थिति में बुधवार को रीको तथा एन.बी.सी.सी. के बीच "राजस्थान मंडपम" और उससे जुड़ी परियोजनाओं के निर्माण के लिए समझौता किया गया। इस मौके पर मंत्री कर्नल राज्यवर्द्धन सिंह राठौड़, मुख्य सचिव सुधांश पंत, मुख्यमंत्री के अतिरिक्त मुख्य सचिव एवं रीको अध्यक्ष शिखर अग्रवाल, एनबीसीसी के अध्यक्ष के.पी. महादेवस्वामी मौजूद थे।

इस बैठक में मुख्यमंत्री शर्मा ने परियोजना की रूपरेखा की विस्तार से समीक्षा की। उन्होंने निर्देश दिए कि भवन निर्माण में राजस्थान की स्थापत्य शैली, लोक कलाओं, और परंपरागत रंग-रूप का विशेष ध्यान रखा जाए। साथ ही, निर्माण के बाद इसकी देखरेख, साफ-सफाई, तथा सुरक्षा व्यवस्था भी सर्वोच्च स्तर की होनी चाहिए।

'राजस्थान मंडपम' का निर्माण जयपुर के बी-2 बाईपास क्षेत्र में रीको की भूमि पर किया जाएगा। परियोजना में राजस्थान की पारंपरिक वास्तुकला

■ **सम्मेलनों, सांस्कृतिक आयोजनों और पर्यटन को मिलेगा नया आयाम**

के साथ-साथ नवीनतम तकनीकी सुविधाएं भी उपलब्ध रहेंगी। इसके साथ ही पाँच सितारा और चार सितारा होटल, सूचना तकनीकी से जुड़ी इमारतें, तथा निवासीय और व्यवसायिक परिसर भी बनाए जाएंगे। इस अवसर पर उद्योग मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड ने कहा कि यह परियोजना न केवल जयपुर को बल्कि पूरे राजस्थान को एक नया सांस्कृतिक और आर्थिक आयाम प्रदान करेगी। उन्होंने कहा कि यह स्थल प्रदेश की कला, संस्कृति, और पर्यटन को नई पहचान देगा।

समारोह में मुख्य सचिव सुधांश पंत, मुख्यमंत्री के अतिरिक्त मुख्य सचिव एवं रीको अध्यक्ष शिखर अग्रवाल, एनबीसीसी के अध्यक्ष के.पी. महादेवस्वामी, तथा संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

जहाजपुर से कांग्रेस के 35 जनप्रतिनिधि भाजपा में शामिल

जयपुर। भारतीय जनता पार्टी का जनाधार लगातार विस्तार पा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की राष्ट्रवादी सोच और विकासोन्मुखी नेतृत्व से प्रभावित होकर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से लोग भाजपा से जुड़ रहे हैं। इसी क्रम में भीलवाड़ा जिले के जहाजपुर विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के 35 से अधिक प्रमुख जनप्रतिनिधियों ने बुधवार को भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। भाजपा प्रदेश कार्यालय में आयोजित एक कार्यक्रम में इन सभी जनप्रतिनिधियों को पार्टी की सदस्यता दिलाई गई। भाजपा प्रदेश कार्यालय प्रभारी मुकेश पारीक ने सभी को पार्टी का दुपट्टा पहनाकर भाजपा परिवार में

■ **भाजपा नेता मुकेश पारीक ने दिलाई सदस्यता**

उनका स्वागत किया। इस दौरान जहाजपुर-कोटड़ी विधानसभा क्षेत्र से सरपंच भैरूलाल गुर्जर, प्रेमशंकर गुर्जर, उदयलाल गुर्जर, भंवरलाल गुर्जर, सीताराम गुर्जर, जमनालाल गुर्जर सहित अनेक प्रमुख जनप्रतिनिधि मौजूद रहे। इस अवसर पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड ने सभी नवदिक्षित सदस्यों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भाजपा में उनका स्वागत है, और उन्हें आशा है कि सभी नेता पार्टी की विचारधारा के अनुरूप जनसेवा को सर्वोपरि रखकर कार्य करेंगे।

प्रदेश कार्यालय प्रभारी मुकेश पारीक ने कहा कि यह भाजपा की मजबूत नीति, संगठनात्मक कार्यशैली और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व पर जनता के विश्वास का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल होने वाले यह जनप्रतिनिधि न केवल संगठन को और मजबूती देंगे, बल्कि अपने क्षेत्रों में पार्टी की नीति और कार्यक्रमों को भी प्रभावी ढंग से जन-जन तक पहुंचाएंगे।इस अवसर पर भाजपा प्रदेश प्रवक्ता सुरेश गर्ग, विक्रम सिंह गुर्जर, एस.के. शर्मा सहित कई वरिष्ठ कार्यकर्ता और पदाधिकारी उपस्थित रहे।

कंगला गैंग के तीन बदमाश गिरफ्तार

जयपुर। प्रताप नगर थाना पुलिस ने कंगला गैंग के तीन शातिर बदमाशों को गिरफ्तार किया हैं।

पुलिस ने बदमाशों के पास से छह मोबाइल फोन सहित वारदात में प्रयुक्त एक दुपहिया वाहन बरामद भी जब्त किया है। फिलहाल आरोपितों से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व संजीव नैन ने बताया कि प्रताप नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए कंगला गैंग के तीन शातिर मोबाइल स्नेचर नरेन्द्र सिंह (20) निवासी कोटखावदा जयपुर, पुष्पेंद्र मीणा (21) निवासी कोटखावदा जयपुर और शंकर बणजारा (20) निवासी पिचौर जिला ग्वालियर हाल प्रताप नगर जयपुर को गिरफ्तार किया गया है। जिनके खिलाफ जयपुर शहर में कई वारदात करने के मामले दर्ज है।

सांसद सी.पी. जोशी की उपराष्ट्रपति से भेंट

नई दिल्ली/जयपुर (कासं)। भाजपा के वरिष्ठ नेता, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और चित्तौड़गढ़ से सांसद सीपी जोशी ने बुधवार को नई दिल्ली स्थित न्यू महाराष्ट्र सदन में भारत के नवनिर्वाचित उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन से शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर उन्होंने राधाकृष्णन को उनकी ऐतिहासिक जीत पर हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं। सांसद जोशी ने कहा कि उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन का राजनीतिक अनुभव, दूरदर्शिता और नेतृत्व क्षमता लोकतांत्रिक संस्थाओं को नई दिशा और ऊर्जा प्रदान करेगी। उन्होंने विश्वास जताया कि उनके मार्गदर्शन में संसद की गरिमा और कार्यवाही की सुचारुता को और अधिक मजबूती मिलेगी।

सीपी जोशी ने कहा, उपराष्ट्रपति के नेतृत्व में संसद और लोकतंत्र की संस्थाएं और अधिक सशक्त होंगी। उनके अनुभव का लाभ पूरे देश को मिलेगा। यह भेंट एक सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुई, जिसमें लोकतंत्र की मजबूती, संसद की कार्यप्रणाली और जनहित से जुड़े विषयों पर सकारात्मक संवाद हुआ।

सांस्कृतिक सेवा पखवाड़ा 17 सितंबर से

जयपुर। उप मुख्यमंत्री तथा पर्यटन, कला एवं संस्कृति मंत्री दिया कुमारी ने 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक आयोजित होने वाले सांस्कृतिक सेवा पखवाड़े को भव्य, सार्थक और यादगार बनाने के निर्देश दिए हैं।

यह आयोजन पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग द्वारा शिक्षा एवं उच्च शिक्षा विभाग के सहयोग से पूरे प्रदेश में आयोजित किया जाएगा।

बुधवार को शासन सचिवालय में आयोजित एक उच्च स्तरीय बैठक में उप मुख्यमंत्री ने अधिकारियों से कहा कि यह पखवाड़ा केवल आयोजनों तक सीमित न रहे, बल्कि इसका मूल उद्देश्य युवाओं और विद्यार्थियों को भारतीय कला, संस्कृति और परंपराओं से जोड़ना होना चाहिए।

दाने-दाने में केसर का दम का दावा करने वाले शाहरुख, अजय देवगन और टाइगर श्रॉफ से जवाब मांगा

जयपुर (कासं)। राज्य उपभोक्ता आयोग ने विमल पान मसाले के दाने-दाने में केसर का दम बताकर इसका भ्रामक विज्ञापन करने के मामले में फिल्म अभिनेता शाहरुख खान, अजय देवगन और टाइगर श्रॉफ सहित विमल पान मसाला ब्रांड के निर्माता जेबी इंडस्ट्रीज से 8 अक्टूबर तक जवाब तलब किया है। आयोग अध्यक्ष जस्टिस देवेन्द्र कच्छावा और सदस्य करुणा जैन ने यह आदेश गजेन्द्र सिंह ठाकुर की अपील पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए। अपील में जिला उपभोक्ता आयोग क्रम-2 के परिवाद खारिज करने के गत 12 अगस्त को दिए आदेश को चुनौती दी गई है।अपील में अधिवक्ता सुमन शेखावत ने बताया कि जेबी इंडस्ट्रीज विमल पान मसाले का निर्माण कर उसे देशभर में विक्रय करने के लिए सप्लाई करती है। वहीं तीनों अभिनेता इसकी बिक्री बढाने के लिए इसका विज्ञापन करते हैं। परिवाद में कहा गया कि विज्ञापन में बताया जाता है कि इसमें केसर का मिश्रण है। जबकि सच्चाई यह है कि केसर की कीमत करीब चार लाख रुपए प्रति किलोग्राम है और यह पान मसाला पांच रुपए में आता है। ऐसे में इसमें केसर मिलाने का दावा भ्रामक है। यह भ्रामक विज्ञापन इसलिए दिखाया जाता है कि अधिक से अधिक लोग ज्यादा से ज्यादा यह पान मसाला खरीदें और इसके निर्माता को लाभ मिले। परिवाद में बताया गया कि इन अभिनेताओं द्वारा इस पान मसाले में दाने-दाने में केसर का दम दिखाकर दुष्प्रचार किया जा रहा है। जिससे एक ओर निर्माता कंपनी करोड़ों रुपए का व्यापार कर रही है और दूसरी ओर आमजन हानिकारक और स्वास्थ्य के लिए पान मसाला का सेवन कर कैंसर जैसी बीमारी को न्यौता दे रहे हैं। इसके बावजूद वे जानबूझकर आमजन को भ्रमित करने के लिए इसे केसरयुक्त बताकर विज्ञापन जा रहा है। अपील में गुहार की गई है कि विमल पान मसाला के उत्पादन और विज्ञापन पर तत्काल रोक लगाने के साथ ही इन कलाकारों को दिए राष्ट्रीय पुरस्कार वापस लिए जाए। वहीं इन पर पचास लाख रुपए का हर्जाना भी लगाया जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए आयोग ने तीनों अभिनेताओं सहित निर्माता कंपनी को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है।

■ **राज्य उपभोक्ता आयोग ने विमल पान मसाले का भ्रामक विज्ञापन करने के मामले में इन तीनों फिल्म अभिनेताओं और पान मासाला निर्माता जेबी इंडस्ट्रीज से 8 अक्टूबर तक जवाब तलब किया है**

शाहरुख खान और दीपिका पादुकोण को राहत

दर्ज एफ.आई.आर. पर हाईकोर्ट ने लगाई रोक

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने खराब कार की मार्केटिंग करने के मामले में भरतपुर के मथुरा गेट थाने में फिल्म अभिनेता शाहरुख खान और दीपिका पादुकोण सहित अन्य के खिलाफ इस्तगासे के जरिए दर्ज एफआईआर में कार्रवाई करने पर रोक लगा दी है। जस्टिस सुदेश बंसल की एकलपीठ ने यह आदेश शाहरुख खान और दीपिका पादुकोण सहित अन्य की ओर से दायर आपराधिक याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए। इसके साथ ही अदालत ने भरतपुर की संबंधित कोर्ट से मामले से जुडा रिकॉर्ड भी तलब किया है।

याचिकाकर्ताओं की ओर से पैरवी करते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल, विवेक राज बाजवा और अधिवक्ता माधव मित्र ने अदालत को बताया कि शिकायतकर्ता ने कार खरीदने के बाद उसे तीन साल तक करीब 67 हजार किलोमीटर चलाया और उसके बाद एफआईआर दर्ज कराई। मामले में फिल्मी कलाकार याचिकाकर्ताओं पर कोई स्पष्ट आरोप नहीं है। वे कार के ब्रांड

■ **खराब कार की मार्केटिंग करने का मामला**

एम्बेसडर हैं और उन्होंने सिर्फ कार का विज्ञापन किया था।

याचिकाकर्ता दीपिका पादुकोण तो शिकायतकर्ता के वाहन खरीदने के बाद इस ब्रांड से जुडी हैं। इसके अलावा हर वाहन की परफॉर्मेंस उसके चलाने के तरीके पर निर्भर करती है। यदि शिकायतकर्ता को कार की परफॉर्मेंस को लेकर कोई शिकायत भी थी तो इसमें कोई आपराधिक मामला नहीं बनता है। शिकायतकर्ता इसे उपभोक्ता अदालत में परिवाद दायर कर चुनौती दे सकता था।

इसके बावजूद भरतपुर की निचली अदालत के पीठासीन अधिकारी ने बिना विधिक मस्तिष्क का उपयोग किए एफआईआर दर्ज करने के आदेश दिए हैं। ऐसे में उनके खिलाफ दर्ज एफआईआर को रद्द किया जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए अदालत ने याचिकाकर्ताओं के खिलाफ दर्ज एफआईआर में आगामी कार्रवाई करने पर रोक लगा दी है।

गौरतलब है कि भरतपुर के वकील कीर्ति सिंह ने इस्तगासे के जरिए मथुरा गेट थाने में गत दिनों एफआईआर दर्ज कराई थी। जिसमें कंपनी के एमडी अनसो किम, निदेशक और सीईओ तरुण गर्ग, शाहरुख खान व दीपिका पादुकोण सहित अन्य को आरोपी बनाते हुए कहा गया था कि उसने जून, 2022 में 23 लाख 97 हजार रुपए में एक कंपनी की कार खरीदी थी।

हाईवे पर कार चलाने के दौरान ओवरटेक करते समय कार पिकअप नहीं लेती और उसका सिर्फ आरपीएम ही बढ़ता है। कार के ओडोमीटर में माल फंक्शन लिखा आने का साइन नजर आता है।

वहीं तेज चलाने पर कार वाइब्रेट होने लगती है। एफआईआर में यह भी कहा गया कि जब शिकायत दी गई तो कार एजेंसी संचालक ने इसे कार निर्माण में दोष बताया। अपराध में कंपनी के प्रतिनिधियों के साथ दोनों फिल्मी कलाकार भी बराबर के आरोपी हैं।

शिक्षा है बच्चे का मौलिक अधिकार : हाईकोर्ट

जयपुर (कासं)। राजस्थान हाईकोर्ट ने कहा है कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत शिक्षा बच्चे का मौलिक अधिकार है। उसे इस तकनीकी आधार पर इस अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता कि उसके आधार कार्ड में वार्ड का हवाला नहीं है। इसके साथ ही अदालत ने आदेश दिए हैं कि याचिकाकर्ता को पन्द्रह दिन में संबंधित स्कूल में प्रवेश दिलाया जाए। जस्टिस अनूप कुमार ढंड की एकलपीठ ने यह आदेश दिविक रंगवानी के अपने पिता के जरिए दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

अदालत ने कहा कि एक बार याचिकाकर्ता को लॉटरी ड्रॉ के जरिये निजी स्कूल में प्रवेश के लिए चुन लिया गया है तो आधार कार्ड में निवास वार्ड का हवाला नहीं होने के तकनीकी आधार पर उसे खारिज नहीं किया जा सकता। आवेदन खारिज करने के बजाए स्कूल प्रशासन याचिकाकर्ता से दस्तावेजी साक्ष्य मांग सकता था।

याचिका में अधिवक्ता एम निसार खान ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता ने आरटीई के तहत दी वर्धमान इंटरनेशनल स्कूल में प्रवेश के लिए आवेदन किया था। स्कूल प्रशासन ने गत 21 अप्रैल को उसका आवेदन यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि उसने गलत दस्तावेज पेश किए हैं। वहीं इसकी सूचना भी याचिकाकर्ता को नहीं दी। इसके बाद स्कूल ने दस्तावेज सत्यापन की अंतिम तिथि को बढ़ाकर 8 मई कर दिया। याचिका में कहा गया कि उसके आधार कार्ड में निवास वार्ड की संख्या दर्ज नहीं होने के कारण उसका आवेदन अस्वीकार किया गया है। जबकि याचिकाकर्ता ने 8 मई को ई-मेल के जरिए राजपत्रित अधिकारी से सत्यापित दस्तावेज इस संबंध में पेश कर दिया था। इसके बावजूद स्कूल प्रशासन ने उसे प्रवेश नहीं दिया। इसका विरोध करते हुए स्कूल के अधिवक्ता ने कहा कि याचिकाकर्ता के दस्तावेज में वार्ड संख्या का हवाला नहीं था। जबकि राज्य सरकार के निर्देशानुसार वार्ड विशेष में निवास करने वाले विद्यार्थी को प्रवेश में प्राथमिकता दी जाती है। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने याचिकाकर्ता को पन्द्रह दिन में स्कूल में प्रवेश देने के आदेश दिए हैं।

■ **दस्तावेज में तकनीकी खामी के कारण नहीं किया जा सकता वंचित : उच्च न्यायालय**

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने दिखाई फ्लिक्सबस को हरी झंडी

यू.के. और भारत में होगा राजस्थान पर्यटन का प्रमोशन

जयपुर (कासं)। राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक स्तर पर प्रचारित करने के उद्देश्य से उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने बुधवार को जयपुर के अल्बर्ट हॉल से फ्लिक्सबस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर राजस्थान सरकार के पर्यटन विभाग और अग्रणी इंटरसिटी मोबिलिटी कंपनी फ्लिक्सबस के बीच एक विशेष साझेदारी की शुरुआत हुई।

■ **जयपुर में भी जल्द ही लंदन की तर्ज पर हॉप-ऑन हॉप-ऑफ बस सेवा शुरू होगी : दिया कुमारी**

इस साझेदारी के तहत विरासत-थीम पर आधारित ब्रांडेड बसें भारत और यूके के प्रमुख रूट्स पर चलाई जाएंगी। ये बसें राजस्थान की धरोहर, कला और संस्कृति को देश-विदेश के यात्रियों तक पहुंचाएंगी। यूके में ये बसें लंदन से कैम्ब्रिज रूट पर और भारत में देहरादून-हरिद्वार-दिल्ली-जयपुर रूट पर संचालित होंगी।

बसों की बाहरी ब्रांडिंग पर राजस्थान के किले, महल, लोक कलाएं और ऐतिहासिक गाथाओं की झलक देखने को मिलेगी। साथ ही, प्रत्येक बस पर एक क्यूआर कोड भी प्रदर्शित होगा, जिसे स्कैन करने पर यात्री राजस्थान पर्यटन विभाग की वेबसाइट से विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने बुधवार को जयपुर के अल्बर्ट हॉल से फ्लिक्सबस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि फ्लिक्सबस के साथ यह साझेदारी राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान को वैश्विक स्तर पर प्रमोट करने की दिशा में एक अभिनव प्रयास है।

उन्होंने कहा कि यह पहल न केवल पर्यटकों को आकर्षित करेगी, बल्कि राजस्थान पर्यटन के लिए नए अवसर भी लेकर आएगी। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि इस साझेदारी का विस्तार भविष्य में और रूट्स पर किया जा सकता है।

दिया कुमारी ने यह घोषणा भी की कि जयपुर में जल्द ही लंदन की तर्ज पर हॉप-ऑन हॉप-ऑफ बस सेवा शुरू की जाएगी।

यह सेवा पीपीपी मॉडल (पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप) पर आधारित होगी और इससे पर्यटकों को एक ही टिकट पर जयपुर के प्रमुख स्थलों की यात्रा करने का अवसर मिलेगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का उद्देश्य है कि राजस्थान का हर पर्यटक अनुभव समृद्ध, सुविधाजनक और यादगार हो। हॉप-ऑन हॉप-ऑफ सेवा से जयपुर में पर्यटन गतिविधियों को नया प्रोत्साहन मिलेगा।

इस अवसर पर फ्लिक्सबस इंडिया के मैनेजिंग डायरेक्टर सूर्या खुराना और पर्यटन आयुक्त रुक्मणि रियार भी उपस्थित रहे। उन्होंने साझा किया कि इस साझेदारी को डिजिटल और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से व्यापक स्तर पर प्रचारित किया जाएगा। साथ ही, जयपुर पहुंचने वाले पहले 100 फ्लिक्सबस यात्रियों को अल्बर्ट हॉल संग्रहालय में निःशुल्क प्रवेश की सुविधा भी दी जाएगी। यह साझेदारी न केवल राजस्थान की सांस्कृतिक छवि को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मजबूत बनाएगी, बल्कि राज्य में पर्यटन और अर्थव्यवस्था को भी नई दिशा देगी।

विधानसभा का मानसून सत्र अनिश्चितकाल के लिए स्थगित

जयपुर (विसं)। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने बुधवार को सोलहवीं विधानसभा का चतुर्थ सत्र मध्यान्ह पश्चात 4:58 बजे अनिश्चितकाल के लिए स्थगित किया। सत्र का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। 1 सितम्बर से जारी यह सत्र कुल 6 बैठकों में फैला और लगभग 18 घंटे 40 मिनट तक चला।

देवनानी ने बताया कि विधानसभा ने 91 प्रतिशत से अधिक प्रश्नों के उत्तर समय पर प्राप्त किए। पहले तीन सत्रों में क्रमशः 2073/2098, 7657/7945 व 8351/9701 प्रश्नों के जवाब विधानसभा को मिले। इस सत्र में कुल 3008 प्रश्न प्राप्त हुए - जिनमें से 1237 तारांकित, 1770 अतारांकित और 1 अल्प सूचना प्रश्न शामिल था। इनमें से 120 तारांकित सूचीकृत थे, जिनमें से 53 पूछे गए और उत्तर दिए गए; 119 अतारांकित प्रश्न भी सूचीबद्ध रहे। प्रक्रिया के नियम?131 के अंतर्गत 1686 ध्यानाकर्षण प्रस्ताव प्राप्त हुए, जिनमें से 1575 के उत्तर विधानसभा को समय पर प्राप्त हुए - लगभग 78 प्रतिशत की प्रभावशाली उपलब्धि।नियम?295 के अंतर्गत 337 विशेष उल्लेख प्रस्ताव प्राप्त हुए, जिनमें से 307 के उत्तर समय पर आए - 94 प्रतिशत जवाब दर! इसके अलावा नियम?50 के अंतर्गत 134 स्थगन प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए, जिनमें से 21 प्रस्तावों पर सदन में चर्चा हुई और 17 विधायकों ने अपने विचार रखे। सदस्यों द्वारा कुल 267 पर्चियाँ प्रस्तुत की गईं, जिनमें से 20 को चयनित कर सदस्य सदन में अपनी बात रख सके।

अतिरिक्त मुख्य सचिव अपर्णा अरोड़ा ने किया जिला अधिकारियों से संवाद

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव ने वीडियो कॉफ्रेंसिंग के जरिए अधिकारियों की बैठक ली।

जयपुर (कासं)। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव अपर्णा अरोड़ा ने बुधवार को प्रदेश के सभी जिला अधिकारियों से वीसी के माध्यम से जुड़कर समीक्षा बैठक ली। मुख्यालय स्थित अंबेडकर भवन के सभागार में अतिरिक्त मुख्य सचिव की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में राज्य सरकार के महत्वाकांक्षी अभियान शहर चलो/ग्रामीण सेवा शिविर-2025, समाज कल्याण सप्ताह (1-7 अक्टूबर 2025) की पूर्व तैयारी की समीक्षा की गई।

इसके अतिरिक्त छात्रवृत्ति योजना, छात्रावासों, आवासीय विद्यालयों, नशा मुक्ति केंद्रों, वृद्धाश्रम आदि संस्थानों के नियमित निरीक्षण, मुख्यमंत्री अनुप्रति योजना के अंतर्गत वर्ष 2025-26 में नए आवेदनों सहित विभिन्न योजनाओं की प्रगति की जानकारी ली। अरोड़ा ने कहा कि अभियान के तहत सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना में शत-प्रतिशत सत्यापन करने, पात्र लोगों को जोड़ने और अपात्रों की पहचान करने, पालनहार योजना के तहत पात्र बच्चों की पहचान कर सत्र 2025-26 में नवीनीकरण करने, मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के अंतर्गत नवीन आवेदन करवाने और लंबित आवेदनों के आक्षेप का निस्तारण करवाने के निर्देश दिए।

उन्होंने विशेष योग्यजनो के प्रमाण-पत्र व कार्ड जारी करने, अंग उपकरण चिह्नीकरण करने और अंग उपकरण वितरण के लिए संभावित लाभार्थियों का चयन करने के भी निर्देश दिए। निदेशक एवं संयुक्त शासन सचिव आशीष मोदी ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे अभियान विभागीय योजनाओं से जुड़ी समस्याओं के त्वरित निस्तारण और आमजन को योजनाओं से लाभान्वित करने का बेहतर मंच साबित हो सकते हैं। उन्होंने अधिकारियों को योजनाओं के व्यापक प्रचार-प्रसार, लाभ से वंचित पात्र अभ्यर्थियों की समस्या समाधान और प्रतिदिन प्रगति रिपोर्ट भेजने के निर्देश दिए। उन्होंने समाज कल्याण सप्ताह के दौरान समाज स्वयंसेवी संस्थाओं एवं स्थानीय निकायों की सहभागिता सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए। बैठक में आयुक्त निदेशालय विशेष योग्यजन केसर लाल मीना, वित्तीय सलाहकार अंजू सिंह, अतिरिक्त निदेशक हरिसिंह मीना, उपनिदेशक दीपाली भागोतिया, अतिरिक्त निदेशक सुण्डाराम मीना, अशोक जांगिड़, रीना शर्मा, अरविंद सैनी, चंद्रशेखर चौधरी, सहित कई अधिकारी मौजूद थे।

मांडलगढ़ में किसानों ने फसल खराबे के मुआवजे की मांग को लेकर रैली निकाली

कार्यालय पर उपखण्ड अधिकारी के नहीं मिलने पर किसानों को एक घंटे तक धूप में खड़े रहना पड़ा

मांडलगढ़, (निसं)। मांडलगढ़ पंचायत समिति से हजारों किसान फसल खराबे पर मुआवजे की मांग को लेकर कस्बे में रैली निकालकर उपखण्ड कार्यालय पहुंचे और पूर्व विधायक प्रदीप कुमार सिंह, प्रधान जितेंद्र मूंदड़ा के नेतृत्व में मुख्यमंत्री के नाम एसडीएम को कार्यालय पर बुला कर ज्ञापन दिया। इस दौरान कार्यालय पर उपखण्ड अधिकारी के नदारद मिलने पर पीड़ित किसानों को करीब एक घण्टे तक धूप में खड़े होकर नारेबाजी और प्रदर्शन करना पड़ा। पूर्व विधायक प्रदीप कुमार सिंह ने ज्ञापन लेने के लिए एसडीएम को फोन कर बुलाया गया।

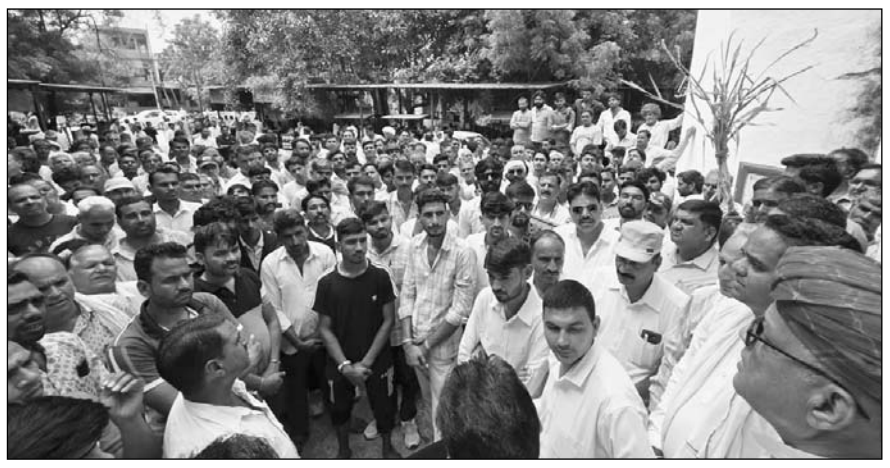

मांडलगढ़ में बारिश की अतिवृष्टि से पीड़ित किसानों ने मांगों को लेकर प्रदर्शन किया।

> ■ ''मांडलगढ़ विधानसभा क्षेत्र में लगातार बारिश और अतिवृष्टि से किसानों की खेतों में खड़ी की फसलें पूरी तरह बर्बाद हो गई हैं''

मांडलगढ़ विधानसभा क्षेत्र के पीड़ित किसानों को सम्बोधित करते हुए पूर्व विधायक प्रदीप कुमार सिंह ने कहा कि मांडलगढ़ विधानसभा क्षेत्र में लगातार बारिश और अतिवृष्टि से किसानों खेतों में खड़ी की फसलें पूरी तरह बर्बाद हो गई हैं। खेतों में खड़ी फसल नष्ट होने से किसान भारी संकट में हैं। इस मामले में सरकार और प्रशासन गम्भीर नजर नहीं आ रहा है, किसानों को दीपावली से पूर्व मुआवजा नहीं मिला तो किसानों को आंदोलन की राह पकड़ने पर मजबूर होना पड़ेगा।

पंचायत समिति प्रधान जितेंद्र मूंदड़ा ने कहा कि मांडलगढ़ विधानसभा क्षेत्र में इस वर्ष अधिक वर्षा एवं लगातार पानी भराव के कारण क्षेत्र के अधिकांश किसानों की फसलें पूरी तरह से नष्ट हो गई हैं। खरीफ की फसल में सोयाबीन, मक्का, मूंग, उड़द एवं अन्य दलहन व तिलहन फसलें खेतों में सड़ गई है। इससे किसानों को भारी आर्थिक नुकसान हुआ है और उनकी आजीविका पर संकट गहरा गया है। उन्होंने कहा कि किसान वर्ग पहले से ही कर्ज एवं आर्थिक तंगी से जूझ रहा है। इस प्राकृतिक आपदा के कारण अब स्थिति और गंभीर हो गई है। सरकार प्रभावित किसानों के लिए तत्काल सर्वे करवा कर उचित मुआवजा राशि प्रदान करने की जल्द घोषणा करें, ताकि वे अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकें और आगामी रबी सीजन की बुवाई के लिए तैयार हो सकें।

पीड़ित किसानों का आरोप है कि बार-बार गुहार लगाने के बावजूद सरकार और प्रशासन ने अब तक कोई सुध नहीं ली। नुकसान का भौतिक सर्वे तक नहीं किया गया, जिससे मुआवज़ा मिलने की उम्मीद भी धूमिल होती जा रही है। कुछ किसानों का मानना है कि समय पर राहत पैकेज न मिलने से किसान कर्ज़ और आत्महत्या जैसे हालातों की ओर धकेले जा सकते हैं। ग्रामीण अंचलों में किसान अब आंदोलन की चेतावनी दे रहे हैं। उनका कहना है कि यदि जल्द ही मुआवज़े की प्रक्रिया शुरू नहीं की गई तो वे सड़कों पर उतरने को मजबूर होंगे।

ज्ञापन देने में पूर्व प्रधान कन्हैयालाल जाट, भैरू लाल जाट, विधायक प्रत्याशी भैरूलाल गुर्जर, कांग्रेस नेता कुलदीप सिंह, भवानी शंकर शर्मा, पंचायत समिति सदस्य धनराज जाट,सरपंच रामजस दाधीच, सरपंच प्रतिनिधि मोतीलाल जाट, मुकेश खटीक सहित कई जनप्रतिनिधि और कांग्रेस संगठन के पदाधिकारी तथा किसान व सामाजिक कार्यकर्ता मौजूद थे।

व्यापारी की हत्या व जेवर लूट मामले का पर्दाफाश, पांच गिरफ्तार

घटना 27 अगस्त को उस समय हुई थी, जब व्यापारी दुकान बंद कर घर लौट रहा था

बयाना पुलिस ने सर्राफा व्यापारी से लूट की वारदात का पर्दाफाश कर आरोपियों को गिरफ्तार किया।

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर जिला पुलिस अधीक्षक दिगंत आनंद के निर्देशन में बयाना पुलिस ने सराहनीय कार्य करते हुए बयाना में सर्राफा व्यापारी से हुई लूट की सनसनीखेज वारदात का खुलासा किया है। पुलिस ने मामले में पांच जनों को गिरफ्तार किया है। वहीं आरोपियों के कब्जे से हथियार बरामद किये हैं।

> ■ बाइक सवार बदमाशों ने व्यापारी को गोली मारकर ज्वैलरी व नकदी का बैग लूट लिया था

जानकारी के अनुसार घटना 27 अगस्त को उस समय हुई थी जब व्यापारी दुकान बंद कर घर लौट रहा था। सालावाद फाटक के पास बाइक सवार बदमाशों ने व्यापारी को गोली मारकर ज्वैलरी व नकदी से भरा बैग लूट लिया था। पुलिस को इनपुट मिलने पर एएसपी बयाना हरिराम कुमावत व वृताधिकारी कृष्णराज जांगिड़ के नेतृत्व में कई टीमें गठित की गईं। गढीबाजना थानाधिकारी पृथ्वीसिंह की टीम की बदमाशों से मुठभेड़ हुई, जिसमें पांच आरोपी गिरफ्तार किए गए। आरोपियों से दो अवैध देशी कट्टे, आठ जिंदा कारतूस, सात खाली खोखे, सात मोबाइल व घटना में प्रयुक्त दो मोटरसाइकिलें जब्त की गईं। गिरफ्तार आरोपी आगरा, भरतपुर व धौलपुर क्षेत्र के निवासी हैं, जिनमें एक महिला भी शामिल है।

हाईटेंशन लाइन के संपर्क में आने से दो युवकों की झुलसने से मौत

> ■ फाल्ट ढूंढने पहुंचे बिजली कर्मचारियों को जंगल में शव पड़े मिले, पुलिस मौके पर पहुंची
>
> ■ 'जांच में सामने आया है कि दोनों युवक जंगल के बीच से गुजर रही हाईटेंशन लाइन के तार चोरी करने आए थे'

उदयपुर, (कासं)। जिले के सायरा थाना क्षेत्र के पानेर गांव 33 केवी बिजली लाइन की चपेट में आने से दो युवकों की मौत हो गई। दोनों युवकों के शव खेत में 100 मीटर की दूरी पर पड़े मिले। वहीं बिजली तार भी टूटा पड़ा मिला है।

जानकारी के अनुसार बीती रात करीब दो बजे अचानक पानेर गांव इलाके की लाइट गुल हो गई थी। सुबह 9 बजे तक जब बिजली सप्लाई सुचारू नहीं हुई तो लोगों ने इसकी सूचना बिजली विभाग को दी। इस पर बिजली विभाग के कर्मचारी 33 केवी लाइन में फाल्ट ढूंढने निकले, तब हादसे का पता चला। थानाधिकारी किशोर सिंह शक्तावत ने बताया कि फाल्ट ढूंढने निकले बिजली विभाग के कर्मचारियों को खेत में बिजली लाइन के तार टूटे पडे मिले वहां दो युवकों के शव भी पड़े हुए थे। शव बुरी तरह झुलसे हुए थे। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। जिसके बाद दोनों के शवों को सायरा हॉस्पिटल की मोर्चरी में रखवाया। थानाधिकारी के अनुसार प्राथमिक जांच में सामने आया है कि दोनों युवक जंगल के बीच से गुजर रही हाईटेंशन लाइन के तार चोरी करने आए थे। दोनों के शव कुछ दूरी पर खेत में पड़े मिले हैं। वहां लकड़ी और आंकडेनुमा सामान भी मिला। वहां चप्पल भी पड़ी मिली। संभवतया हाईटेंशन लाइन के तार तोड़ते समय यह हादसा हो गया। दोनों शवों की पहचान नहीं हो पाई है। वहीं पुलिस और बिजली विभाग की टीम जांच में जुटी है।

प्रेम प्रसंग में युवक ने खुद को गोली मारकर आत्महत्या की

> ■ आत्महत्या से पहले युवक ने पड़ौस में रहने वाली महिला के हाथ में गोली मारी, युवती का अस्पताल में उपचार जारी
>
> ■ घायल महिला ने बताया कि युवक रामबाबू उसे चार साल से परेशान कर रहा था, कई बार पुलिस में शिकायत भी की थी

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर के मथुरा गेट थाना इलाके में युवक ने लव अफेयर में खुद को गोली मारकर सुसाइड कर लिया। आत्महत्या से पहले युवक ने पड़ौस में रहने वाली महिला के हाथ में गोली मारी। महिला के परिजनों का कहना है वह एक तरफा प्यार करता था। मथुरा गेट थाना इलाके में रामबाबू (45) किराए पर रहता था। बुधवार को सुबह करीब 10 बजे महिला (42) का पति घर से बाहर चला गया था। इसके बाद रामबाबू उसके घर पहुंच गया। उसने पहले महिला को गोली मारी, इसके बाद खुद को गोली मार ली। महिला के हाथ में गोली लगी है। एसपी दिगंत आनंद ने बताया कि रामबाबू की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के कारणों का कुछ पता नहीं लग पाया है।

घायल महिला ने बताया कि रामबाबू उसे चार साल से परेशान कर रहा था। कई बार पुलिस में शिकायत भी की थी। वह पुलिस से छूट आता और फिर से परेशान करता था। उसकी देवरानी (35) घर पर अकेली थी। महिला का पति और उसका देवर मोबाइल की शॉप करते हैं। महिला के पति और देवर दुकान पर गए हुए थे। रामबाबू उनके पड़ौस में रहता था। वह पड़ौसियों के घर से कूदकर महिला के घर में घुसा। आते ही उसने महिला का गला दबाने की कोशिश की। महिला ने इसका विरोध किया। रामबाबू ने कट्टा निकालकर गोली चला दी। महिला भागते हुए नीचे आई और अपने देवरानी को घटना के बारे में बताया। देवरानी ने अपने पति को फोन कर घटना के बारे में बताया। महिला का देवर घर पहुंचा और अपनी भाभी के कमरे में जाकर देखा तो रामबाबू का शव पड़ा था। पास में हथियार भी था। महिला के देवर ने तुरंत अपने भाई को बुलाया। महिला को हॉस्पिटल पहुंचाया गया। देवर ने पुलिस को भी घटना की सूचना दी। पुलिस ने रामबाबू के शव को आरबीएम हॉस्पिटल की मॉर्च्युरी में भिजवाया। साथ ही एफएसएल की टीम बुलाकर साक्ष्य जुटाए। फिलहाल रामबाबू के शव को आरबीएम अस्पताल की मॉर्च्युरी में रखवा दिया गया है। महिला का इलाज आरबीएम हॉस्पिटल में जारी है।

रामबाबू की बहन मथुरा गेट थाना इलाके के गुलाल कुंड में रहती है। जैसे ही उन्हें घटना का पता लगा तो, वह मौके पर पहुंची। मृतक रामबाबू मूलत: डीग जिले के सीकरी का रहने वाला था, अभी मथुरा गेट थाना इलाके में रहता था। उसके तीन बच्चे हैं। पत्नी कोलकाता की रहने वाली है और वहीं रहती है।

मंदिर में दम्पती से हुई लूट का खुलासा, तीन गिरफ्तार

कपासन, (निसं)। भूपालसागर थाना क्षेत्र के फलासीया जागीर माता जी के मन्दिर में सोती हुई महिला के गले में से सोने की रामनामी व दो मादलीये एवं सोते हुए व्यक्ति के हाथों में पहने हुए चांदी के कड़े लूटकर ले जाने के मामले में भूपालसागर थाना पुलिस ने साइबर सेल की मदद से तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों से सोने की रामनामी दो व सोने के दो मादलीये व चांदी के दो कड़े बरामद किए हैं।

जिला पुलिस अधीक्षक मनीष त्रिपाठी ने बताया कि गत तीन फरवरी की मध्य रात्रि को फलासीया जागीर माता जी के मन्दिर में सोती हुई महिला के गले में से सोने की रामनामी व दो मादलीये व सोते हुए व्यक्ति के हाथों में पहने हुए चांदी के कड़े लूट कर ले जाने के मामले में फरार आरोपियों की तलाश कर गिरफ्तार करने व माल बरामद करने के लिए एएसपी सरिता सिह व वृताधिकारी कपासन हरजी लाल यादव के सुपरविजन में थानाधिकारी लादुलाल सौंलकी उ नि व जाप्ता एएसआई जमना त्रिपाठी, तेजमल, कानि. राजमल, ओमप्रकाश, राधेश्याम, पीराराम व अनिल, साइबर सेल के हैड कानि. राजकुमार, कानि. रामनरेश, राजेश, रामावतार व गणपत कानि. साइबर सैल द्वारा बंशीलाल पुत्र प्यारा कालबेलीया (जोगी) निवासी नई आबादी अम्बावली किरतपुरा थाना बड़ी सादड़ी जिला चित्तौड़गढ़, मुकेश पुत्र नानुराम कालबेलीया निवासी बनाकीया कला थाना कपासन जिला चित्तौड़गढ़ हाल खातरीया चौकड़ी थाना खातरेच जिला अहमदाबाद व नारायण कालबेलीया पुत्र परथा उर्फ पृथ्वीराज कालबेलीया निवासी पीपली गुजरान थाना भदेसर जिला चित्तौड़गढ़ को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश कर पुलिस अभिरक्षा (रिमाण्ड) प्राप्त किया जाकर आरोपी बंशीलाल, मुकेश व नारायण कालबेलीया से प्रकरण में लूट का माल बरामद किया।

पुलिस ने लूट के आरोपियों को गिरफ्तार कर सोने व चांदी के जेवरात बरामद किए।

उदयरामसर में 1.19 हेक्टेयर जमीन फर्जी तरीके से बिकी, मामला दर्ज

बीकानेर, (निसं)। मुंबई में स्टॉक मार्केट का काम करने वाले विजयरतन बी. मित्तल की उदयरामसर में 1.19 हेक्टेयर जमीन है, जो राजस्व रिकॉर्ड में उसके नाम से अंकित है। कृषि भूमि पर चारों ओर तारबंदी है और काश्तकार काश्त कर रहा है। व्यापारी ने अपनी कृषि भूमि की ऑनलाइन जमाबंदी निकलवाने के लिए सर्च किया तो वह चौंक गया। खातेदारी कृषि भूमि का इंतकाल और जमाबंदी नोखा में माडिया निवासी सुभाष बिश्नोई के नाम से दर्ज है।

जमाबंदी में आए नोट के आधार पर उप पंजीयक कार्यालय से कृषि भूमि की नकल ली तो पता चला कि कृषि भूमि का बयनामा कराया गया है। बयनामा पर व्यापारी की जगह किसी अन्य शख्स का फोटो है। आधार कार्ड और पैन नंबर भी लिखा है, जो व्यापारी के नहीं हैं। फर्जी दस्तावेज तैयार कर व्यापारी की कृषि भूमि का बयनामा तैयार कर जमीन बेच दी गई। उप पंजीयक कार्यालय में 10 जुलाई, 25 को सुभाष बिश्नोई के नाम बयनामा है, जबकि इस दिन व्यापारी मुंबई ही था। उसकी जमीन फर्जी तरीके से हड़पने के लिए सुभाष बिश्नोई, गवाह गंगाशहर में सारड़ा चौक निवासी अनुराग कुमावत, चूरू में रतनगढ़ निवासी बृजलाल तथा अज्ञात व्यक्ति जिसने बयनामा में व्यापारी की जगह फर्जी फोटो लगा रखी है। मिलीभगत कर फर्जी दस्तावेज तैयार किए और जमीन हड़पने के लिए बयनामा तैयार किया। व्यापारी को इसका पता चलने पर वह बीकानेर आया और सदर पुलिस थाने में मुकदमा दर्ज कराया है।

वैर क्षेत्र के हाथोड़ी, बल्लभगढ़ व वैर कस्बे की बावड़ियों को संरक्षण की दरकार

ये बावड़ियां वर्तमान में अपनी आभा व पहचान खो चुकी है, लेकिन इनके महराब, बरामदे, कलाकृति युक्त खंभों की पच्चीकारी आज भी दर्शनीय हैं

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर जिले में अनेक ऐसे पुरा महत्व के स्थल हैं, जिनका जीर्णोद्धार कर विकसित कर दिये जाये तो ये स्थल पर्यटन मानचित्र पर आ सकते हैं। पर्यटन से जुड़ने के बाद इन स्थलों पर रोजगार के वैकल्पिक रोजगार के संसाधन विकसित होंगे जिससे क्षेत्र के निवासियों को लाभ मिलेगा। ऐसे ही परम्परागत जल स्त्रोत एवं ऐतिहासिक विरासत की पहचान रही वैर पंचायत समिति क्षेत्र के हाथोड़ी, बल्लभगढ़ व वैर कस्बे की बावड़ियां हैं, जो वर्तमान में अपनी आभा व पहचान को खो चुकी है, लेकिन इनके निर्माण के दौरान बनाये गये महराब, बरामदे, कलाकृति युक्त खंभों की पच्चीकारी आज भी दर्शनीय है। इन बावड़ियों के संरक्षण के संबंध में समृद्ध भारत अभियान के निदेशक सीताराम गुप्ता ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर अलग से 5 करोड़ रुपये का बजट स्वीकृत करने की मांग की है।

गुप्ता द्वारा लिखे गये पत्र में कहा है कि इन बावड़ियों के जीर्णोद्धार कर विकसित करने के बाद इन पर न केवल पर्यटन गतिविधियां बढ़ेंगी बल्कि क्षेत्र के निवासियों को पेयजल व सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध हो सकेगा इसके अलावा ये बावड़ियां भविष्य की पीढ़ियों के लिए जीवित धरोहर के रूप में बनी रह सकेगी।

वैर पंचायत समिति क्षेत्र के हाथोड़ी, बल्लभगढ़ व वैर कस्बे की बावड़ियां हैं, जो वर्तमान में अपनी आभा व पहचान खो चुकी है।

पत्र में उन्होंने कहा है कि इन बावड़ियों के जीर्णोद्धार के बाद इनके नियमित संरक्षण की व्यवस्था करना भी आवश्यक है, अन्यथा कामा के चील महल, खानुआ के राणा सांगा स्मारक की तरह जीर्णोद्धार पर व्यय की गई लागत बेकार चली जायेगी। इसी प्रकार वैर कस्बे के सफेद महल जिसके जीर्णोद्धार व विकास पर पहले करोड़ों रुपये व्यय हुए, लेकिन रख-रखाव के

> ■ समृद्ध भारत अभियान के निदेशक सीताराम गुप्ता ने मुख्यमंत्री को लिखा पत्र, संरक्षण के लिए 5 करोड़ का बजट स्वीकृत करने की मांग की

अभाव यह राशि बेकार चली गई, किन्तु अब राज्य सरकार ने पुन: बजट आवंटित कर सफेद महल के सौंदर्यीकरण व विकास का कार्य शुरू कराया। पत्र में कहा है कि इसी प्रकार की बावड़ियां धौलपुर व दौसा जिले के बांदीकुई के पास थी जिनके जीर्णोद्धार व विकास के बाद ये पर्यटन गतिविधियों से जुड़ गई। इसी तरह वैर की इन तीनों बावड़ियों का विकास करा दिया जाये तो ये भी पर्यटन मानचित्र पर आकर यहां भी पर्यटन गतिविधियों शुरू हो सकती है, जिससे क्षेत्र के निवासियों को रोजगार के संसाधन मुहैया हो सकेंगे।

जनहित याचिका पर हाईकोर्ट ने सरकार से जवाब मांगा

जोधपुर, (कासं)। राजस्थान उच्च न्यायालय की खंडपीठ के वरिष्ठ न्यायाधीश डॉ. पी एस भाटी और न्यायाधीश संदीप तनेजा ने राज्य सरकार और राजस्थान सिविल सेवा अपीलेट अधिकरण के अध्यक्ष की ओर से पेश अधिवक्ताओं को निर्देश दिए कि वे आगामी पेशी 16 सितंबर तक रिपोर्ट पेश करें कि हाइकोर्ट के आदेश की पालना में पिछले छह माह में जोधपुर में अधिकरण की न्यायिक कार्रवाई कितने दिन तक कार्यरत रही।

राजस्थान हाइकोर्ट एडवोकेट्स एसोसिएशन की ओर से दायर जनहित याचिका पर बहस करते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता मनीष सिसोदिया, वरिष्ठ अधिवक्ता आनंद पुरोहित और अधिवक्ता अनिल भंडारी ने कहा कि 19 जुलाई 2022 को खंडपीठ ने अपने विस्तृत आदेश में राज्य सरकार को निर्देश दिया कि जोधपुर में अधिकरण की स्थाई पीठ गठित करें और तब तक जोधपुर में चल पीठ 8 दिन तक प्रति माह न्यायिक कार्रवाई करें। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने इस पर जोधपुर में अधिकरण की स्थाई पीठ की अधिसूचना 4 मई 2023 को जारी कर दी तथा 12 सितम्बर 2023 को आदेश जारी कर जोधपुर पीठ का क्षेत्राधिकार तय कर जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर,पाली और बांसवाड़ा संभाग के सभी जिलों को जोधपुर पीठ में शामिल कर सभी नई एवं पुरानी अपीलों और पत्रावलियों की सुनवाई जोधपुर पीठ के समक्ष करने का निर्देश दिया और इसी अनुरूप गैर न्यायिक सदस्य और स्टाफ की नियुक्ति कर दी गई, लेकिन वास्तविक रूप में जोधपुर में स्थाई पीठ कार्यरत नहीं रही। उन्होंने कहा कि खंडपीठ ने गत 29 जनवरी को राज्य सरकार और अधिकरण अध्यक्ष को निर्देश दिए कि हाइकोर्ट के 19 जुलाई 2022 के आदेश की पालना में जब राज्य सरकार ने जोधपुर में अधिकरण की स्थाई पीठ की अधिसूचना जारी कर दी है तो फिर चल पीठ ही कैसे कार्यरत है सो वास्तविक रूप में जोधपुर में अधिकरण की स्थाई पीठ में सदस्यों की नियुक्ति कर कार्यरत करें। प्रार्थी अधिवक्तागण ने कहा कि राज्य सरकार और अधिकरण अध्यक्ष को निर्देश दिया जाएं कि जोधपुर में अविलंब अधिकरण की स्थाई पीठ जोधपुर क्षेत्राधिकार के अनुरूप न्यायिक कार्रवाई प्रारंभ करें।

15 वर्षीय आरव ने 54 सेकंड में विश्व का मानचित्र बनाया

कोटा, (निसं)। शिक्षा नगरी कोटा ने एक बार फिर अपनी असाधारण प्रतिभा से देशभर का सिर गर्व से ऊंचा किया है। शहर के मात्र 15 वर्षीय युवा कलाकार आरव शर्मा ने अपने अद्भुत हुनर के दम पर इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स 2025 में अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज कराया है। आरव की यह उपलब्धि वास्तव में अविश्वसनीय है। इस प्रतिभावान बालक ने केवल 54 सेकंड की अल्प अवधि में पेंसिल की सहायता से कागज पर संपूर्ण विश्व का भौतिक मानचित्र बनाकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। यह रिकॉर्ड न केवल उसकी तीव्र बुद्धि का परिचायक है, बल्कि उसकी कलात्मक दक्षता और एकाग्रता का भी जीवंत प्रमाण है। आरव के गौरवान्वित माता-पिता अजय और अल्का शर्मा ने बताया कि पिछले 2.5 वर्षों से उनका पुत्र इस विशेष कला में निरंतर अभ्यासरत था। प्रारंभ में वह हरे बोर्ड पर चाक से मानचित्र बनाने का अभ्यास करता था। धीरे-धीरे उसकी गति और सटीकता में उल्लेखनीय सुधार आया।

वो मेरे लिए बहुत बड़ा दिन था। मैं 5 गेंदों प 5 छक्के लगा चुका था और लोग मुझे जानने लगे थे इसलिए मुझे लग रहा था कि शायद चीजें आसान हो जाएं। उस समय प्रिया के पिता को नहीं पता था कि रिंकू सिंह कौन है? और उन्हें क्रिकेट में कोई दिलचस्पी नहीं थी। – **रिंकू सिंह**

भारतीय खिलाड़ी, अपनी निजी जिन्दगी ह बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

जोफ्रा आर्चर

इंग्लैंड के स्टार गेंदबाज जोफ्रा आर्चर दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ हारी हुई श्रृंखला में शानदार प्रदर्शन के बाद आईसीसी पुरुष एकदिवसीय गेंदबाजी रैंकिंग में 16 पायदान की छलांग लगाकर करियर की सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग में तीसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की ताजा अपडेट के अनुसार आर्चर ने दूसरे और तीसरे मैच में लगातार 62 रन देकर चार और 18 रन देकर चार विकेट लिए, जिसकी बदौलत उन्हें 16 पायदान का उछाल मिला। तीसरे मैच में इंग्लैंड ने साउथम्प्टन में रिकॉर्ड 342 रनों से जीत दर्ज करके ऐतिहासिक जीत हासिल की थी।

क्या आप जानते हैं ?... भारतीय टीम ने रिकॉर्ड आठ बार एशिया कप का खिताब जीता है। तीन कप्तानों ने दो-दो बार एशिया कप खिताब जीतने में सफलता हासिल की। इसमें एमएस धोनी रोहित शर्मा और मो. अजहरुद्दीन का नाम शामिल है।

भारत ने यूएई को नौ विकेट से हराया, कुलदीप यादव का कहर

दुबई, 10 सितंबर। कुलदीप यादव सात रन देकर (चार विकेट) और शिवम दुबे चार रन देकर (तीन विकेट) की घातक गेंदबाजी के बाद अभिषेक शर्मा (30) और शुभमन गिल (नाबाद 20) के दम पर भारत ने बुधवार को एशिया कप के दूसरे मैच में संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) को 93 गेंदे शेष रहते नौ विकेट से हरा दिया। 58 रनों के मामूली लक्ष्य का पीछा करने उतरी अभिषेक शर्मा और शुभमन गिल की सलामी जोड़ी अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिए 48 रन जोड़े। चौथे ओवर में जुनैद सिद्दीकी ने अभिषेक शर्मा को आउटकर यूएई को पहली सफलता दिलाई।

अभिषेक शर्मा ने 16 गेंदों में तीन छक्के और दो चौके लगाते हुए 30 रनों की पारी खेली। शुभमन गिल ने नौ गेंदों दो चौके और एक छक्का लगाते हुए (नाबाद 20) रन बनाये। कप्तान सूर्यकुमार यादव ने दो गेंदों में एक छक्का लगाते हुए (नाबाद सात) रन बनाये। भारत ने 4.3 ओवर में एक विकेट पर 60 रन बनाकर नौ विकेट से मुकाबला जीत लिया।भारत ने न केवल बड़े अंतर से मैच जीता है बल्कि अपने इरादे भी स्पष्ट कर दिए हैं कि वह इस टूर्नामेंट में किस तरह का क्रिकेट खेलने जा रहा है। 93 गेंद रहते हुए भारत ने यह मैच अपने नाम कर लिया।

पहले गेंदबाजी करते हुए महज 57 रनों पर यूएई को रोका और फिर अभिषेक ने आते ही हल्ला बोल दिया। गिल ने भी पूरी तरह से साथ दिया और भारत को जीत हासिल करने के लिए मात्र 27 गेंदों का सामना किया। यूएई के लिए एकमात्र विकेट जुनैदी सिद्दीकी ने लिया। इससे पहले आज यहां भारत ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी यूएई के लिए आलीशान शराफ़ु और कप्तान मुहम्मद वसीम ने पहले विकेट के लिए 26 रन जोड़े। चौथे ओवर में जसप्रीत बुमराह ने आलीशान शराफू 17 गेंदों में 22 रन को आउटकर भारत को पहली सफलता दिलाई। अगले ही ओवर में वरुण चक्रवर्ती ने मोहम्मद जोहैब (दो) को आउटकर पवेलियन भेज दिया।

इसके बाद भारतीय गेंदबाजी आक्रमण के आगे यूएई का कोई भी बल्लेबाज अधिक देर तक पिच पर नहीं टिक सका। यूएई के नौ बल्लेबाज दहाई आंकड़े तक भी नहीं पहुंच सके। राहुल चोपड़ा (तीन), हर्षित कौशिक (दो), हैदर अली (एक) और मोहम्मद वसीम (19) को कुलदीप यादव ने आउट किया। आसिफ़ ख़ान (दो), ध्रुव पराशर (एक) और जुनैद सिद्दीकी (शून्य) को शिवम दुबे ने अपना शिकार बनाया। भारतीय गेंदबाजी आक्रमण के आगे यूएई की पूरी टीम 13.1 ओवर में 57 रन सिमट गई। भारत के लिए कुलदीप यादव ने 2.1 ओवर में सात रन देकर चार विकेट झटके। शिवम दुबे ने दो ओवर में चार रन देकर तीन विकेट लिये। जसप्रीत बुमराह, अक्षर पटेल और वरुण चक्रवर्ती ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

4-2 से जीत के साथ भारतीय महिला हॉकी टीम ने कोरिया पर सुपर-3 की शुरुआत की

हांगझाऊ, 10 सितंबर। भारतीय महिला हॉकी टीम ने महिला एशिया कप 2025 में अपने सुपर4 अभियान की शुरुआत कोरिया पर 4-2 की शानदार जीत के साथ की, जिसमें उन्होंने आक्रामक और अनुशासित रक्षापंक्ति का शानदार प्रदर्शन किया। यह जीत वैष्णवी विट्ठल फाल्के, संगीता कुमारी, लालरेमसियामी और रुतुजा दादासो पिसल के गोलों की बदौलत मिली, जबकि युजिन किम के दो गोलों ने कोरिया को मुकाबले में बनाए रखा। भारत ने शानदार शुरुआत की और पहले दो मिनट में ही एक पेनल्टी कॉर्नर हासिल कर लिया। सेट-पीस से, उदिता के शुरुआती शॉट को रोकने के बाद, इंजेक्टर वैष्णवी ने रिबाउंड पर गेंद को गोल में डालकर भारत को शुरुआती बढ़त दिला दी।

इस त्वरित सफलता के बाद, भारत ने गेंद पर नियंत्रण बनाए रखा और व्यवस्थित हमले किए, जिससे कोरिया रक्षात्मक स्थिति में रहा। पहले क्वार्टर में और मौके बनाने और अतिरिक्त पेनल्टी कॉर्नर हासिल करने के बावजूद, भारत पहले हाफ में 1-0 की मामूली बढ़त के साथ गया। दूसरे क्वार्टर में भारत ने अपना दबदबा जारी रखा, ज़ोरदार दबाव बनाया और तेज, उद्देश्यपूर्ण पासिंग से कोरिया के सर्कल को भेदा। कोरियाई डिफेंस और गोलकीपर सियोयोन ली क्वार्टर के अंत तक भारत की बढ़त को रोकने में कामयाब रहे, जब कोरिया को एक पेनल्टी कॉर्नर मिला। भारतीय गोलकीपर बिचु देवी खारिबाम ने एक महत्वपूर्ण बचाव करते हुए हाफटाइम तक अपनी टीम की बढ़त बरकरार रखी।

तीसरे क्वार्टर में और भी ज़्यादा सक्रियता देखी गई क्योंकि कोरिया ने शुरुआत में ही अपनी पकड़ मजबूत करने की कोशिश की, लेकिन भारत के पलटवार का फायदा मिला। रुतुजा ने कुशलता से तीन डिफेंडरों को छकाते हुए संगीता को गेंद सौंपी, जिन्होंने नजदीक से गोल करके स्कोर 2-0 कर दिया। कोरिया ने तुरंत जवाब दिया और युजिन किम ने पेनल्टी कॉर्नर को गोल में बदलकर स्कोर 2-0 कर दिया। हालांकि, भारत ने संयमित और लगातार आक्रमण जारी रखा और 40वें मिनट में लालरेम्सियामी के शानदार गोल ने दो गोल की बढ़त दिला दी, जिससे भारत अंतिम क्वार्टर में 3-1 की बढ़त के साथ मजबूती से आगे बढ़ गया। चौथे क्वार्टर में कोरिया ने लंबी हवाई गेंदों से वापसी की कोशिश की।

आर.आर. क्रिकेट अकादमी जीती

जयपुर, 10 सितम्बर। अंडर-13 पिंकसिटी कप में आर आर क्रिकेट अकादमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 38 ओवर में 175 रन 10 विकेट के नुकसान पर बनाएं! गर्वित चौधरी ने सर्वाधिक 57 रनों का योगदान दिया। केबी रॉयल्सक्रिकेट अकादमी की ओर से मयंक और मनीष ने तीन-तीन विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी केबी रॉयल्स क्रिकेट अकादमी 33 ओवर में 128 रन पर ऑल आउट हो गई! अर्णव कौशिक ने सर्वाधिक 27 रनों का योगदान दिया। आर आर क्रिकेट अकादमी की ओर से दिव्यदर्शन ने 4 और कर्मवीर चाहर ने 3 विकेट लिए। मैन ऑफ द मैच दिव्यदर्शन को चुना गया।

अरावली क्रिकेट अकादमी जीती

अंडर-13 पिंकसिटी कप में अरावली क्रिकेट अकादमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 40 ओवर में 140 रन 9 विकेट के नुकसान पर बनाएं। कुणाल ने 62 और प्रखर गुप्ता ने 34 रनों का योगदान दिया। जानकी नंदन क्रिकेट अकादमी की ओर से प्रद्युमन शर्मा और याया खान ने दो-दो विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी जानकी नंदन क्रिकेट अकादमी 34 ओवर में 96 रन पर ऑल आउट हो गई। यश कुमार सैनी ने 26 और दिलशान खान ने 22 रनों का योगदान दिया। अरावली क्रिकेट अकादमी की ओर से हर्षित ने चार और रामनिवास ने दो विकेट लिए। मैन ऑफ द मैच हर्षित को चुना गया।

सितंबर पोलो सीजन 2025 जयपुर जूनियर अंडर-21 (आउट ऑफ हैट) जयगढ़ ने नाहरगढ़ को हराया

जयपुर, 10 सितम्बर। रामबाग पोलो ग्राउंड पर आज से शुरू हुए सितम्बर पोलो सीजन 2025, जयपुर जूनियर अंडर 21 (आउट ऑफ हट) के पहले मैच में जयगढ़ ने नाहरगढ़ को 4.5 के मुकाबले 5 गोल से हराया। जयगढ़ टीम की ओर से कुलवर्धन सिंह ने 1, और दिव्यमान सिंह दूजोड ने अपनी टीम के लिए 4 गोल कर जीत पक्की की। वहीं आधे गोल का हैंडीकैंप लेकर खेल रही नाहरगढ़ टीम की ओर से विवान मेहता और संजुला मान ने 2-2 गोल किये।

जयवर्द्धन का शतक व हेमेंद्र सिंह, चिराग सुखवाल, शुभम, दिव्यांश, भव्य कारा, नावेद की शानदार गेंदबाजी

जयपुर, 10 सितम्बर। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत के अनुसार बीसीसीआई के आगामी घरेलू क्रिकेट सत्र 2025 - 26 की अंडर 19 प्रतियोगिता में में भाग लेने वाली राजस्थान टीमों के संभावितों के चयन हेतु आरसीए के तत्वाधान में खेली जा रही राज्य स्तरीय अंडर 19 प्रतियोगिता के आज जयपुर में खेल गए मैचों का परिणाम व स्कोर :-

नारायणा ग्राउंड चूरू -बीकानेर (बीकानेर 9 विकेट से जीती)

चूरू पारी 111 आल आउट, टीम के लिए सचिन 29 रन, बीकानेर की गेंदबाज रोहित 14 /3 , गुरमन , सचिन प्रत्येक 2 -2 विकेट। बीकानेर पारी 112/1, टीम के लिए सचिन लखेसर 84 व सक्षम 19 रन

के एल सैनी स्टेडियम जयपुर - भरतपुर (जयपुर 111 रन से जीती), जयपुर पारी 213 आल आउट, टीम के लिए शिफॉन कहाँ 62, अभय शर्मा 40, मनय 23 व पर्व 20 रन। भरतपुर के गेंदबाज जगदम्बिका पाल 32/3, कुश, अनुज प्रत्येक 2 -2 विकेट। भरतपुर पारी 102 आल आउट। टीम के लिए अभय राज 30 रन। जयपुर के गेंदबाज प्रखर शर्मा 16 /3 व कार्तिक 23 /3 विकेट।

सोनी ग्राउंड नागौर - झुंझनू (नागौर 35 रन से जीती) नागौर पारी 205 आल आउट, टीम के लिए साहिल 44 व धर्मेंद्र 40 रन। झुंझनू के गेंदबाज मयंक 30 /3 विकेट, झुंझनू पारी 170 आल आउट। टीम के लिए गोविन्द 36 रन। नागौर के गेंदबाज रचित 23/3 व राघव 31/3।

पी एस ग्राउंड श्रीगंगानगर - बूंदी (श्रीगंगागनगर 166 रन से जीती), श्रीगंगानगर पारी 286 आल आउट। टीम के लिए मनन सिंह 83 व ओसनिक ग्रोवर 80

रन, बूंदी के गेंदबाज भव्य कारा 57 /4 विकेट। बूंदी पारी 120 आल आउट। टीम के लिए निशांत 39 रन, श्रीगंगानगर के गेंदबाज हर्षित शर्मा 41/5 व शिवम् 14/4 विकेट।

सवाई मान सिंह स्टेडियम कोटा - सीकर (सीकर 4 विकेट से जीती), कोटा पारी 226 आल आउट। टीम के लिए अभिनन्दन 53 , भूपेंद्र 50 , ऋतिक 42 व कुंदन 29 रन। सीकर के गेंदबाज अभिषेक सूद 37/4 , भव्य राज 47/3 व देवेंद्र 40/2 विकेट। सीकर पारी 229 /6, टीम के लिए अनितराज मंडिया 96, देवांश स्वामी 44, सुनिल 9 व भव्य राज नाबाद 18 रन। कोटा के गेंदबाज दिनेश भट , आशीष व अमन प्रत्येक 2 -2 विकेट।

जी आर ग्राउंड जालोर - धौलपुर (जालोर 40 रन से जीती), जालोर पारी 208 आल आउट, टीम के लिए मनीष कुमार 54 रन। धौलपुर के गेंदबाज हर्ष 17 /3 व युवराज 35 /3 विकेट। धौलपुर पारी 168 आल आउट, टीम के लिए तरुण 51 व रजत 46 रन, जालोर के गेंदबाज यशोवर्धन, मनीष, कुर्बान, जय वैष्णव प्रत्येक 2 -2 विकेट।

अनन्तम ग्राउंड अजमेर -प्रतापगढ़ (अजमेर 163 रन से जीती), अजमेर पारी 292/7, टीम के लिए समीर 86 , वीरेंदर 78 व कृष्णेन्द्र 40 रन, प्रतापगढ़ के गेंदबाज जीतेन्द्र 43/2 व फरहान 68/2 विकेट। प्रतापगढ़ पारी 129 आल आउट। टीम के लिए सतवीर 33 , कीर्तन 29 व नविन शर्मा नाबाद 26 रन। अजमेर के गेंदबाज शुभम 8/4, राजवर्धन, पलांश चतुर्वेदी प्रत्येक 2 -2 विकेट।

सोलफील ग्राउंड राजसमंद - चित्तोड़ (राजसमंद 14 रन से जीती), राजसमंद पारी 117 आल आउट। टीम के लिए जीतेन्द्र 53 व वंश 21 रन, चित्तोड़ के गेंदबाज वंश घरवारी 0/2 विकेट। चितोड़ पारी 103 आल आउट टीम के लिए वंश 29 रन। राजसमंद के गेंदबाज आरव 8/3 व अरविन्द 14/3 विकेट।

ए आर ग्राउंड हनुमानगढ़ - बांसवाड़ा (हनुमानगढ़ 159 रन से जीती), हनुमानगढ़ पारी 326 आल आउट। टीम के लिए गगनदीप 83 , नमन 46 व हिमांशु 39 रन

बांसवाड़ा के गेंदबाज नयन 49/4 , क्रुणाल 50/3 बांसवाड़ा पारी 167/8, टीम के लिए पुखराज 33 , क्रुणाल 31 रन। हनुमानगढ़ के गेंदबाज विश्वास 19/3 विकेट।

लक्ष्य ग्राउंड सिरोही - अलवर (अलवर 7 विकेट से जीती), सिरोही पारी 175 आल आउट। टीम के लिए कीर्तन सिंह 50 रन। अलवर के गेंदबाज पियूष 18/3 , जगृत 32/2 व हैप्पी 26/2 विकेट। अलवर पारी 179 /3, टीम के लिए दीपेश 86 व मानव 53 रन।

पी एस ग्राउंड 2 बाड़मेर - झालावाड़ (बाड़मेर 107 रन से जीती), बाड़मेर पारी 238/8, टीम के लिए प्रयास पूनिया 77, कृष्णा कुमार गुप्ता 46 व दिनेश 30 रन। झालावाड़ के गेंदबाज नावेद 61/4, झालावाड़ पारी 131 आल आउट। बाड़मेर के गेंदबाज जगदीश 15/3 , प्रयास व मदन प्रत्येक 2 -2 विकेट।

संस्कार ग्राउंड सवाई माधोपुर - डूंगरपुर (सवाईमाधोपुर 88 रन से जीती), सवाईमाधोपुर पारी 224 आल आउट। टीम के लिए साहिब अभिचंदानी 78 , मयंक 58 व कृष्णा कुमार 29 रन। डूंगरपुर के गेंदबाज हेमेंद्र सिंह 38 /5 व दक्ष जैन 14 /3 विकेट। डुंगरपुर पारी 136 आल आउट। टीम के लिए दक्ष परशुराम भावसार 37, लोकेश शर्मा 19 व दक्ष जैन 16 रन। सवाईमाधोपुर के गेंदबाज कृष्ण कुमार 24/3 व साहिब 22/3 विकेट।

बरवाल ग्राउंड उदयपुर - दौसा (उदयपुर 26 रन से जीती), उदयपुर पारी 143 आल आउट। टीम के लिए कोहान कोठारी 42, राज कोठारी 37 व कुणाल मेनारिया 16 रन। दौसा के गेंदबाज शानू अवस्थी 17 /3 व सौरव 20/3 विकेट। दौसा पारी 117 आल आउट टीम के लिए लीलाधर 53 रन। उदयपुर के गेंदबाज रोहन मेनारिया 13/3 , गर्वित 25/3 , रेहान 19/2 विकेट।

एस आर ग्राउंड भीलवाड़ा - करौली (भीलवाड़ा 262 रन से जीती), भीलवाड़ा पारी 352/6, टीम के लिए जयवर्धन सिंह गहलोत 114, कुशाग्र ओझा 88 व सुर्यवद्धर्न 85 रन। करौली के गेंदबाज विकास 90/3 करौली पारी 90 आल आउट, टीम के लिए अमित भरद्वाज 26 रन। भीलवाड़ा के गेंदबाज चिराग सुखवाल 14/5 ,दिव्यांश 44/4 विकेट।

अंडर-16 ट्रायल 13 को

जयपुर, 10 सितंबर। जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा जयपुर की अंडर -16 चैलेंजर ट्रॉफी आयोजित करने के लिए चयन ट्रायल 13 सितंबर को प्रातः 9 बजे के एल सैनी स्टेडियम पर आयोजित की जाएगी।

जयपुर पिंक पैंथर्स के नितिन कुमार का गोल्डन रेड जीत के बाद बयान

दबाव की स्थिति में संयम और अपनी तैयारी पर भरोसा

जयपुर, 10 सितंबर। जयपुर पिंक पैंथर्स मंगलवार को विश्वनाथ स्पोर्ट्स क्लब में गुजरात जायंट्स को रोमांचक टाई-ब्रेकर गोल्डन रेड में हराने के बाद अब जयपुर में अपने होम लेग में जीत की लय के साथ उतरेंगे। दो बार की चैम्पियन टीम ने यह अहम जीत दर्ज की, जिसमें स्टार रेडर नितिन कुमार ने 15 अंक जुटाए और आखिरी गोल्डन रेड में जीत पक्की की। नितिन कुमारने कहा कि यह जीत दबाव की स्थिति में संयम और अपनी तैयारी पर भरोसा रखने का नतीजा है। उन्होंने कहा, कोच ने मुझे खुलकर खेलने और अपना सर्वश्रेष्ठ देने को कहा था। मैंने बस उसी पर ध्यान दिया और वही हमारे लिए निर्णायक साबित हुआ। हेड कोच नरेंद्र रेड्डू ने टीम के अनुशासन की तारीफ की, खासकर विरोधी कप्तान मोहम्मदरेज़ा शाडलुई को रोकने में। उन्होंने कहा, हमारी रणनीति साफ थी और लड़कों ने उस पर अमल किया। नितिन ने बेहतरीन प्रदर्शन किया और यही हमें इस कड़े मुकाबले में बढ़त दिला गया। रेड्डू ने टीम के युवा खिलाड़ियों को मौके देने की अहमियत पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा, कई खिलाड़ी अभी भी लीग की रफ्तार के साथ तालमेल बैठा रहे हैं, लेकिन उनका प्रयास और समर्पण शानदार रहा है। हर मैच में उन्होंने लड़ाई दिखाई है और यह आगे के लिए उत्साहजनक है।

आगामी होम लेग को लेकर नितिन ने कहा कि पिंक पैंथर्स इस लय को आगे बढ़ाना चाहते हैं। उन्होंने कहा, ऐसे करीबी मैच में जीत हमें आत्मविश्वास देती है। अब हम जयपुर लौट रहे हैं और अपने फैन्स के सामने खेलना हमें और ज्यादा जोश देगा। रेड्डू ने भी फैन्स के समर्थन को अहम करार दिया। उन्होंने कहा, यह जीत हमें जयपुर लेग के लिए सही स्थिति में लेकर जाती है। हमारे समर्थकों की ऊर्जा बेहद महत्वपूर्ण होगी और हम उन्हें गर्व महसूस कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं। दो जीत और दो हार के साथ, पिंक पैंथर्स अब अपने घरेलू मैदान के फायदे को सीजन के बाकी हिस्से के लिए एक मजबूत शुरुआत में बदलने की कोशिश करेंगे।

With deep sorrow and grief we mourn the passing away of our beloved mother

Abayam Krishnamurthy

January 4, 1935 - September 10, 2025

Last rites September 10th, 2025 at Antim Nivas, Sector 94, Noida at 1:30pm

In Grief
K.Srinivasan-Renu Mittal (Rashtradoot) | Nayantara
Mohan-Suchitra | Siddhartha-Shweta
Ravishankar-Usha | Dhruv | Gaurav

MUNICIPAL COUNCIL, NIMBAHERA DIST.- CHITTAURGARH
S. No. :- MCN/25-26/3663 Date :- 04/09/2025
Notice Inviting Bid
Bids for different works Nit No. 16 /2025-26 of Municipal Council Nimbahera are invited from interested bidders up to date 17-09-2025 on 18:00 Hours. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal **(http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in)** of the state govt. **UBN No.– DLB2526WSOB16765**
Commissioner, Municipal Council Nimbahera
Raj.Samwad/C/25/9599

अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर
अविप्रा
टोडरमल लेन, सिविल लाईन्स, अजमेर, Email :- ajmerada@gmail.com, Website :- www.rajasthan.gov.in/ada, Tel.No. :- 0145-2627748-2627749
क्रमांक :- अविप्रा/प.2/तकनीकी/2025-26/राजकाज 17574619 दिनांक :- 08/09/2025
ई-निविदा सूचना संख्या 30/2025-26
अजमेर विकास प्राधिकरण, अजमेर की ओर से कार्य कन्सलटेन्सी अनुमानित लागत राशि 640.91 लाख की ई-निविदा दिनांक 18.09.2025 सांय 06:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट (http://eproc.rajasthan.gov.in) एवं (http://sppp.raj.nic.in) http://www.urban.rajasthan.gov.in/ada पर देखा जा सकता है।
UBN No. :- AJD2526SLOB00130, AJD2526WSOB00126-129, 131, 132
राज.संवाद/सी/25/9567 **अधिशाषी अभियन्ता**

जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड
प्रभास्मि शशि सूर्ययोः
कार्यालय संभागीय मुख्य अभियंता (जयपुर संभाग) पुराना पॉवर हाऊस, बनीपार्क, जयपुर
टेलीफैक्स : 0141 - 2201489, ई-मेल: zcejz@jvvnl.org
ई-निविदा सूचना
ई-निविदा दो भागों में (तकनीकी-वाणिज्यिक), जयपुर डिस्कॉम के दक्षिण जयपुर शहर वृत्त के अधिकार क्षेत्र में एईएन (एचटीएम-VI), के अंतर्गत जयपुर में 220 केवी वाटिका जी.एस.एस से नया प्रस्तावित 33 केवी फीडर षिकारपुरा खींचने का कार्य टीएन-145 के तहत एआरसी रेट 2025 पर योग्य निविदादाताओं से श्रम दर पर आमंत्रित किये जाते है। योग्य निविदादाता सम्पूर्ण निविदा संबंधित दस्तावेज ई - प्रोक्योरमेन्ट पोर्टल **http://www.eproc.rajasthan.gov.in** पर दिनांक 12.09.2025 से डाउनलोड कर सकते है। निविदायें ऑनलाईन ई- पोर्टल पर दिनांक 23.09.2025 को सांय 05:00 बजे तक ही स्वीकार की जावेगी। निविदा संबंधी जानकारी कार्य का विवरण इत्यादि जयपुर विद्युत वितरण निगम की वेब साईट **www.energy.rajasthan.gov.in/jvvnl, http://www.sppp.rajasthan.gov.in & http://eproc.rajasthan.gov.in** से प्राप्त की जा सकती है। **UBN : VVN2526WSOB00172**
राज.संवाद/सी/25/9614 जेपीआर - 3055 (2025) संभागीय मुख्य अभियंता (जयपुर संभाग)
बिजली शिकायतों के लिए टोल फ्री नम्बर 1800 180 6507

कार्यालय नगर पालिका निवाई
क्रमांकः-न.पा.नि./निर्माण/2025-26/7325 दिनांकः- 04.09.2025
ई-बोली सूचना संख्या :- 27/2025-2026
राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से निम्न कार्य के लिए उपयुक्त श्रेणी में नगर पालिका निवाई में पंजीकृत उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों एवं विभिन्न अभियान्त्रिकी विभागो के संबंधित श्रेणी में "A" "AA" श्रेणी में पंजीकृत संवेदको एवं स्वायत्त शासन विभाग में पंजीकृत उपयुक्त श्रेणी के संवेदको से, जो कि राजस्थान सरकार के उपयुक्त श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में निविदाएं आमन्त्रित की जाती है। निविदा फार्म ऑनलाईन वेबसाईट www.sppp.rajasthan.gov.in व 'http://www.eproc.rajsthan.gov.in पर देखा जा सकता है :-

बोली का कार्य	:	NIB Code:- DLB2526A5470 (कुल 2 कार्य)
Unique Bid Number	:	DLB2526WLOB16693 DLB2526WSOB16695
बोली की कुल लागत	:	Rs 736.20 लाख (सभी कार्यो की अनुमानित लागत)
बोली जारी करने की दिनाक	:	दिनांक 05.09.2025 को 13:00 बजे से
बोली दस्तावेजो को डाउनलोड करने की शुरूआती दिनांक व समय	:	दिनांक 05.09.2025 को 13:00 बजे से
प्री बिड मिटिंग	:	दिनांक 11.09.2025 को अपराह 01:00 बजे नगर पालिका निवाई कार्यालय में
ऑन लाईन बोली जमा कराने की अन्तिम दिनांक	:	दिनांक 24.09.2025 सायं 18.00 बजे तक
ऑनलाईन तकनीकी बिड खोलने की दिनांक	:	दिनांक 25.09.2025 को अपराह 12:00 बजे
वित्तीय बिड खोलने की दिनांक व समय	:	Will be Intimated latter to the Technically qualified Bidders
बिड की वैधता समयावधि	:	120 Day

अध्यक्ष नगर पालिका निवाई **अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका निवाई**
राज.संवाद/सी/25/9488

कार्यालय नगरपालिका आकोला जिला चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)
क्रमांक/न.पा.आ./दशहरा मेला/2025-26/1432-1434 दिनांक :- 08.09.2025
प्रस्ताव आमंत्रण सूचना
नगरपालिका आकोला द्वारा दशहरा मेला-2025 दिनांक 29.09.2025 से 02.10.2025 तक आयोजित किया जा रहा है। मेले में सांस्कृतिक कार्यक्रम को आकर्षक बनाने हेतु दशहरा मेला 2025 में आयोजित किये जाने वाले निम्न कार्यक्रम हेतु सुयोग्य फर्मो/इवेन्ट कम्पनी/लोक कला मण्डलों इत्यादि से प्रस्ताव आमंत्रित किये जाते है। उक्त विज्ञप्ति एवं शर्ते पोर्टल/वेबसाईट sppp.rajasthan.gov.in के NIB CODE: DLB2526A5541 पर देखी जा सकती हैं।
आरकेस्ट्रा कार्यक्रम
उक्तानुसार प्रस्ताव नगरपालिका आकोला जिला चित्तौड़गढ़ (राज.) कार्यालय में व्यक्तिगत रुप से दिनांक 12.09.2025 से दिनांक 15.09.2025 तक प्राप्त किये जायेगें। उक्त अवधि पश्चात् प्राप्त प्रस्तावों पर विचार नही किया जायेगा।
अतः प्रस्तावक अपने प्रस्तावों के साथ अनुभव प्रमाण पत्र एवं पुर्व में धार्मिक स्थलों/मेला/उत्सव इत्यादि में प्रस्तुत किये सांस्कृतिक कार्यक्रमों की विडियों/डीवीडी/फोटो एल्बम/प्रमाण पत्र आदि सहित निर्धारित स्थल एवं समय पर व्यक्तिगत रुप से उपस्थित होवें।
शर्ते :-
1 इवेन्ट कम्पनी/कलाकार/फर्म आदि जिस नाम से प्रस्ताव प्रस्तुत करेगी उसी नाम से भुगतान आर.टी.जी.एस./नेफ्ट/ऑनलाईन द्वारा कार्यक्रम समापन उपरान्त सीधे बैंक खाते में किया जायेगा। अतः तदनानुसार प्रस्ताव बैंक खाता, आई.एफ.एस.सी. कोड़ विवरण प्रस्तुत करें।
2 इवेन्ट कम्पनी/कलाकार/फर्म द्वारा प्रस्तुत दर/राशि में सभी प्रकार के चार्जेज व कर सम्मिलित करने होगें। नगरपालिका आकोला द्वारा किसी प्रकार के अतिरिक्त कर/शुल्क/परिवहन शुल्क, ठहरने का शुल्क/भोजन चाय नाश्ता आदि का भुगतान नही किया जायेगा। अतः समस्त व्यय/करों को जोड़कर प्रस्ताव प्रस्तुत करें।
3 स्वीकृत दर/राशि में से नगरपालिका आकोला द्वारा नियमानुसार आयकर तथा अन्य कर काटकर जमा करवाया जायेगा तथा अन्य सभी करों की जिम्मेदारी स्वयं इवेन्ट कम्पनी/कलाकार/फर्म की होगी।
4 प्रस्ताव को स्वीकर/अस्वीकार करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरकर्ता के पास सुरक्षित होगा।
5 किसी प्रकार का विवाद होने पर न्यायिक क्षेत्र कपासन होगा।
6. डाक अथवा सशर्ते प्राप्त प्रस्ताव स्वीकार्य नही होगें।
राज.संवाद/सी/25/9635 **अधिशाषी अधिकारी**

कांग्रेस सस्ती लोकप्रियता के लिए सदन का समय बर्बाद कर रही है - भजन लाल

मुख्यमंत्री ने कहा, जब प्रदेश आपदा से जूझ रहा था तब कांग्रेस विधायक कहाँ थे

जयपुर, 10 सितंबर। राजस्थान विधानसभा के मानसून सत्र में सोमवार को उस वक्त भारी हंगामा हुआ, जब सदन में लगे अतिरिक्त कैमरों को लेकर विपक्ष ने सरकार पर जासूसी के आरोप लगाए। कांग्रेस नेता और नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कैमरों को जासूसी उपकरण बताया और कहा कि यह विपक्ष की निजता में दखल और लोकतंत्र का उल्लंघन है।

कैमरा विवाद पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने विपक्ष पर सीधा हमला बोलते हुए कहा कि कांग्रेस को प्रदेश की 8 करोड़ जनता की समस्याओं से कोई लेना-देना नहीं, वह सिर्फ सस्ती लोकप्रियता के लिए, सदन का समय बर्बाद कर रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा, कि विपक्ष का यह व्यवहार न केवल सदन की गरिमा

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

के खिलाफ है, बल्कि जनता के साथ विश्वासघात भी है। जब प्रदेश आपदा से

- **कांग्रेस विधायकों ने कैमरों को "निगरानी टूल" बताया और आरोप लगाया कि सत्ता पक्ष इससे विपक्ष की गतिविधियों पर नज़र रखना चाहता है।**

जूझ रहा था, तब कांग्रेस के विधायक कहां थे? न राहत कार्यों में सहयोग दिया, न पीड़ितों के पास गए। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि जब सदन जनता की समस्याओं के समाधान के लिए चल रहा है, तब विपक्ष कैमरों की संख्या गिनने में व्यस्त है। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने विपक्ष के आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए कहा कि सदन में लगे कैमरे सिर्फ वीडियो रिकॉर्डिंग के लिए हैं, उनमें ऑडियो रिकॉर्डिंग की कोई सुविधा नहीं है।

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने सवाल उठाते हुए कहा कि जब कैमरे अपडेट किए गए, तब उसकी जानकारी विपक्ष को क्यों नहीं दी गई? उन्होंने पूछा कि जब सदन स्थगित होता है, तब भी कैमरे क्यों चालू रहते हैं? और इनसे यूट्यूब पर लाइव स्ट्रीम होता है और यह किसके आदेश पर हो रहा है?

कांग्रेस विधायकों ने कैमरों को "निगरानी टूल" बताते हुए आरोप लगाया कि इससे सत्ता पक्ष, विपक्ष की गतिविधियों पर नजर रखना चाहता है, जो कि लोकतांत्रिक प्रणाली में अस्वीकार्य है।

मॉरीशस के प्र.मंत्री का वाराणसी में भव्य स्वागत

वाराणसी, 10 सितंबर। मॉरीशस के प्रधानमंत्री नवीनचंद्र रामगुलाम बुधवार शाम तीन दिवसीय यात्रा पर काशी पहुंचे। लाल बहादुर शास्त्री अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से सड़क मार्ग द्वारा वे होटल ताज पहुंचे। रास्ते में छह स्थानों पर स्वागत प्वाइंट बनाए गए थे, जहां काशीवासियों और भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने उनका भव्य स्वागत किया।

हवाई अड्डे पर उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल और प्रदेश सरकार के मंत्री सुरेश खन्ना ने उनका स्वागत किया। गिलट बाजार में मॉरीशस के प्रधानमंत्री के स्वागत में आजमगढ़ के कलाकारों लिल्ली घोड़ी धोबिया नृत्य पेश किए तो स्कूली बच्चों ने विभिन्न रूपों में दोनों देशों के फ्लैग के साथ खड़े होकर स्वागत किए।

जयपुर व उदयपुर के पर्यटक काठमांडू व पोखरा में फंसे

पोखरा शहर में पर्यटकों के सामने भीड़ ने एक होटल को फूंक दिया

उदयपुर, 10 सितम्बर। नेपाल में 8 सितंबर से हो रहे हिंसात्मक आंदोलन में 4 हजार से ज्यादा राजस्थानी फंसे हुए हैं। इन लोगों ने सरकार से भी मदद मांगी है। इनमें से अधिकतर पर्यटक हैं। इनमें 700 पर्यटक जयपुर के और 35 पर्यटक उदयपुर जिले के भी हैं।

इनमें उदयपुर के एक भाजपा नेता भी हैं, जो पोखरा शहर के एक होटल में परिवार के साथ फंसे हैं। उदयपुर के भाजपा नेता अनिल सिंघल ने बताया कि वे काठमांडू से करीब 500 किलोमीटर दूर पोखरा शहर में फंसे हैं।

- **काठमांडू में फंसे यात्रियों ने बताया कि भारतीय दूतावास के निर्देश पर वे सब होटल के अंदर ही हैं। वहां जयपुर और भीलवाड़ा के लोग भी हैं।**

हमारे सामने आगजनी की घटनाएं हुईं। एक होटल को आग के हवाले कर दिया गया। हम दूतावास के संपर्क में हैं।

इधर काठमांडू में उदयपुर से गया 31 लोगों का एक और ग्रुप फंसा हुआ है। एयरपोर्ट बंद होने से वे लोग निकल नहीं पा रहे हैं। उदयपुर से गए ग्रुप के मेंबर भगवतीलाल मेनारिया ने बताया कि वे स्थिति सामान्य होने का इंतजार कर रहे हैं। मेनारिया ने बताया कि वे भारतीय दूतावास से संपर्क में हैं और वहां से उन्हें यही निर्देश दिए गए हैं कि वे अभी जहां हैं, वहीं रुकें और इंतजार करें। ऐसे में वे सब अभी होटल के अंदर ही हैं और स्थितियों के सामान्य होने का इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि वहां पर जयपुर और भीलवाड़ा के लोग भी हैं।

सुप्रीम ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कांग्रेस नेता और वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने भी यही चिंता दोहराई। एक अलग दलील में सिंघवी ने चुनाव आयोग को चेतावनी दी कि कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा पर दोहरी वोटिंग के आरोपों को लेकर जल्दबाज़ी में कार्रवाई न करे, क्योंकि यह बनावटी मामला है।

विशेषज्ञों का कहना है कि यह पहला अवसर है, जब सुप्रीम कोर्ट ने भारत की आंतरिक संवैधानिक तनातनी को क्षेत्रीय घटनाओं से सीधे जोड़ा है। जिस समय पर यह टिप्पणी की गई है, वो समय भी अहम है। ऐसे समय पर, जबकि कई राज्य विधानसभाएँ राज्यपालों पर विधेयक रोकने की शिकायत कर रही हैं, सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी विपक्षी दलों को मज़बूत कर सकती है और केन्द्र को घेर सकती है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा नेपाल का ज़िक्र मोदी सरकार के लिए एक कड़ी चेतावनी है कि अगर संस्थागत गतिरोध पर काबू न पाया गया तो इसके, सामान्य राजनीतिक विवादों से कहीं अधिक अस्थिर करने वाले परिणाम हो सकते हैं।

पोलैण्ड ने रुस ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

"कोअलिशन ऑफ़ द विलिंग" नाम का समूह बनाया है। इसमें ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी जैसे बड़े देश शामिल हैं, जिन्होंने यूक्रेन की सुरक्षा की गारंटी के तौर पर वहाँ सैनिक तैनात करने का प्रस्ताव दिया है। इसके जवाब में रूस ने चेतावनी दी और सुनियोजित ढंग से रात के हमलों को और तेज़ कर दिया। रविवार को हुए ताज़ा हमले में पुतिन के हवाई हमलों ने सरकारी इमारतों और नागरिक ठिकानों को निशाना बनाया, जिससे आम लोगों को भारी नुक़सान हुआ।

पुतिन अमेरिकी राष्ट्रपति को भी चुनौती दे रहे हैं, जिन्होंने बार-बार पुतिन को गंभीरता से बातचीत की मेज़ पर आने और हमले कम करने की समय सीमा दी थी। तथापि, डॉनल्ड ट्रंप रुस पर और कड़े प्रतिबंध लगाने तथा बातचीत की मेज पर लाने के लिए और कड़े प्रतिबंध लगाने से बचते रहे हैं।

भारत पर सैकैण्डरी सैंक्शन्स लगाने के अलावा, ट्रंप ने कभी चीन या यूरोपीय देशों पर वैसी पाबंदियाँ लगाने की हिम्मत नहीं की, जो अब तक रूस का तेल और ऊर्जा खरीदते रहे हैं। चीन ने भी ट्रंप की धमकियों को नाकाम कर दिया और ज़रूरी सामग्रियों की आपूर्ति रोकने की धमकी दी।

अब ट्रंप यूरोपीय देशों से गुज़ारिश कर रहे हैं कि वे चीन और भारत पर खुद ही सैकेण्डरी सैंक्शन्स लगाएँ, वह भी और कठोर, क्योंकि ये दोनों रूस का तेल खरीदते रहे हैं। रूस से तेल ख़रीदने वाले कई अन्य देशों के ख़िलाफ़ ट्रंप द्वारा मज़बूत कदम नहीं उठाने से पुतिन और भी निडर हो गए हैं।

इस बीच, चीन किनारे बैठा यह पूरा संघर्ष देख रहा है और साफ़ तौर पर रूस का समर्थन कर रहा है। किनारे खड़े कुछ लोग भारत से मध्यस्थता की अपील कर रहे हैं, लेकिन अमेरिका द्वारा भारत के साथ किए गए रुखे व्यवहार को देखते हुए इसकी संभावना बहुत कम है।

अमेरिका ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अमेरिका से जुड़े माने जाते हैं। इन सब तथ्यों को देखकर ऐसा लगता है कि यह पूरा घटनाक्रम "एक सुव्यवस्थित शासन परिवर्तन की कोशिश" का हिस्सा है।

द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती में सारण को सशर्त जमानत

जयपुर, 10 सितंबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने द्वितीय श्रेणी शिक्षक भर्ती-2022 पेपर लीक मामले में उदयपुर के बेकरिया थाने में दर्ज एफआईआर में आरोपी भूपेन्द्र सारण को जमानत पर सशर्त रिहा करने के आदेश दिए हैं। जस्टिस प्रवीर भटनागर की एकलपीठ ने यह आदेश भूपेन्द्र सारण की जमानत याचिका को स्वीकार करते हुए दिए। अदालत ने आरोपी को कहा है कि वह मुकदमे की ट्रायल पूरी होने तक हर माह के दूसरे और चौथे शनिवार को संबंधित थाने में अपनी उपस्थिति दर्ज कराएगा। वहीं, संबंधित थानाधिकारी उसकी उपस्थिति का एक रजिस्टर संधारित करेंगे और उसकी उपस्थिति रिपोर्ट बिना देरी संबंधित कोर्ट में पेश करेंगे। अदालत ने संबंधित निचली अदालत को कहा है कि आरोपी को जमानत पर रिहा करने से पहले, थानाधिकारी के जरिए जमानती का पता और संपर्क नंबर का सत्यापन करेंगे।

बीकानेर में कांग्रेस नेता के घर पर लॉरेंस गैंग का हमला

कुछ दिन पहले कांग्रेस नेता से फोन पर रोहित गोदारा के नाम से 5 करोड़ रु. रंगदारी मांगी गई थी

बीकानेर, 10 सितम्बर। यहां कांग्रेस नेता धनपत चायल और व्यापारी सुखदेव चायल के घर पर बदमाशों ने सात राउंड फायरिंग की। इससे घर में लगे कांच टूट गए। दरवाजे, दीवार, खिड़कियों पर गोलियों के निशान भी मिले हैं। धनपत और सुखदेव सगे भाई हैं।

जानकारी के अनुसार, बुधवार अलसुबह चार बजे हुई इस वारदात की जिम्मेदारी लॉरेंस गैंग के गैंगस्टर हैरी बॉक्सर ने ली है। उसने घटना की जिमेवारी ली और सोशल मीडिया पर लिखा, अब सीधे सीने पर गोली मारेंगे। सादुलगंज क्षेत्र में बुधवार सुबह हुई घटना की सूचना मिलते ही एडिशनल एसपी सौरभ तिवाड़ी के नेतृत्व में पुलिस टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने गोलियों के निशान और अन्य साक्ष्य जुटाए। सीसीटीवी फुटेज में हेलमैट पहने दो युवक बाइक पर सवार दिखाई दे रहे हैं। फुटेज में फायरिंग की आवाज़ भी साफ सुनाई दे रही है। हैरी बॉक्सर ने अपने

- **लॉरेंस गैंग के हैरी बॉक्सर ने अपने सोशल मीडिया अकाउन्ट पर हमले की जिम्मेदारी ली।**

सोशल मीडिया अकाउंट पर लिखा है कि इस हमले की जिम्मेदारी मैं हैरी बॉक्सर और सुंदर हंसी, हम दोनों भाई लेते हैं। ये फायरिंग हमने करवाई है। इसको हमारे फोन की रिंग सुनाई नहीं दे रही थी, इसलिए हमने ये छोटी सी वॉर्निंग दी है। आगे टाइम रहते लाइन पर आ जाएगा ये, वर्ना आगे अब सीधे सीने में गोली मारेंगे। सुखदेव चायल के भाई और कांग्रेस नेता धनपत चायल ने बताया कि कुछ दिन पहले एक फोन आया था, जिसमें कॉलर ने खुद को रोहित गोदारा बताते हुए 5 करोड़ रुपए की रंगदारी मांगी थी। धनपत के मुताबिक, कॉलर ने धमकी दी कि उसे, उनकी और उनके भाई की हर गतिविधि की जानकारी है और रंगदारी न देने पर जान से मारने की चेतावनी दी थी। धनपत चायल बीकानेर में यूथ कांग्रेस के पूर्व शहर जिलाध्यक्ष पद पर रहे हैं।

राजस्थान ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

करेगा। इसके तहत हेल्पलाइन नंबर और व्हाट्सएप सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है। नेपाल में रह रहे भारतीय नागरिक किसी भी प्रकार की सहायता के लिए राजस्थान पुलिस मुख्यालय के कानून-व्यवस्था कार्यालय में स्थापित विशेष सेल से संपर्क कर सकते हैं। इसके लिए हेल्पलाइन नंबर 0141-2740832 और 0141-2741807 जारी किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, व्हाट्सएप नंबर 9784942702 पर भी सहायता के लिए संदेश भेजा जा सकता है।

नकल कर सुपरवाईज़र बनी महिला गिरफ्तार

जयपुर,10 सितंबर। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) की टीम ने कार्रवाई करते हुए, सुपरवाइजर (महिला अधिकारिता) भर्ती परीक्षा में ब्लूटूथ से नकल कर सुपरवाईजर बनी आरोपित महिला को गिरफ्तार किया है।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (एडीजी एसओजी) वीके सिंह ने बताया कि एसओजी की टीम ने सुपरवाईजर (महिला अधिकारिता) भर्ती परीक्षा में ब्लूटूथ से नकल कर सुपरवाइजर बनी आरोपित महिला मंजू कुमारी निवासी मुक्ता प्रसाद नगर जिला बीकानेर हाल सुपरवाइजर महिला अधिकारिता बज्जू जिला बीकानेर को गिरफ्तार किया है। आरोपित मंजू कुमारी ने सुपरवाइजर महिला अधिकारिता भर्ती 2018 की लिखित परीक्षा में ब्लूटूथ से नकल करवाने वाली गैंग की मदद ली थी और ब्लूटूथ डिवाइस से प्रश्न पत्र हल किया। आरोपित को न्यायालय में पेश कर पुलिस रिमांड प्राप्त किया गया। आरोपित महिला मंजू कुमारी से उक्त भर्ती परीक्षा में ब्लूटूथ से नकल कराने वाले गिरोह के संबंध में पूछताछ की जा रही है। एसओजी द्वारा अब तक उक्त प्रकरण में 8 आरोपितों को गिरफ्तार किया जा चुका है।

क्या नेपाल की ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कई मंत्रियों के आवासों में आग लगा दी। काठमांडू समेत कई अन्य क्षेत्रों में आगजनी और लूटपाट जैसी घटनाएं हुईं। ओली के इस्तीफे के बाद अब सबकी निगाहें इस बात पर हैं कि इस हिमालयी राष्ट्र की अंतरिम सरकार का नेतृत्व कौन करेगा।

एक एनजीओ "हामी नेपाल" से जुड़े सुदीप गुरुङ जो इस आंदोलन के नेता है, ने नेपाल की पहली महिला मुख्य न्यायाधीश रही सुशीला कार्की का नाम प्रस्तावित किया। कार्की को पहले राजनीतिक नेताओं के खिलाफ कड़ी कार्रवाई के चलते महाभियोग का सामना करना पड़ा था, लेकिन वह प्रयास बाद में छोड़ दिया गया।

हालांकि, उनके नाम पर रवि लामिछाने की पार्टी 'राष्ट्रिय स्वन्त्र पार्टी' (आरएसपी) सहित अन्य दलों की सहमति भी लेनी होगी।

सूत्रों के अनुसार, जस्टिस कार्की इस पद की सबसे प्रबल दावेदार मानी जा रही हैं, हालांकि वार्ताएं अभी चल रही हैं। भद्रकाली, काठमांडू स्थित जंगी अड्डा (सेना मुख्यालय) में बुधवार को जैनरेशन ज़ैड प्रदर्शनकारियों और उनके सहयोगियों की बैठक हुई, जिसमें अंतरिम सरकार के संभावित नेताओं पर चर्चा की गई। काठमांडू के मेयर बालेन्द्र शाह अर्थात रैपर से नेता बने 35 वर्षीय बालेन भी प्रमुख दावेदार माने जा रहे थे, लेकिन मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार

- **जैनरेशन ज़ैड आंदोलन के नेता सेना के मुख्यालय जंगी अड्डा में अतंरिम सरकार के नेतृत्व के बारे में विचार - विमर्श कर रहे हैं।**

उन्होंने जैनरेशन ज़ैड नेताओं के फोन कॉल्स का जवाब नहीं दिया।

सुमना श्रेष्ठा युवा वर्ग में लोकप्रिय नेता ने आरएसपी से अपने जुड़ाव का हवाला देते हुए यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। धरान के मेयर हर्का सम्पर्क ने भी नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए अपनी तत्परता जाहिर की।

सागर धकाल- जिन्होंने संघीय चुनावों में शेर बहादुर देउबा के खिलाफ चुनाव लड़ा था, ने भी कहा कि वह जिम्मेदारी लेने को तैयार हैं, लेकिन फिलहाल धनगड़ी में फंसे हुए हैं।

कुलमान घिसिंग- नेपाल विद्युत प्राधिकरण के पूर्व प्रबंध निदेशक, जो कल की प्रेस विज्ञिप्त में मेंटॉर के रूप में शामिल थे, एक मार्गदर्शक भूमिका निभा सकते हैं। राष्ट्र बिमोचन तिमल्सेना जो एक लोकप्रिय यूट्यूबर और पेशे से वकील हैं, उन्होंने कहा कि यदि कोई उपलब्ध नहीं हुआ, तो वह नेतृत्व करने को तैयार हैं। इस बीच, सेना ने काठमांडू में गुरुवार शाम 6 बजे तक कर्फ्यू लागू कर रखा है।

दिल्ली के पूर्व पुलिस आयुक्त नीरज कुमार पर मुकदमा दर्ज करने के आदेश

- **सुप्रीम कोर्ट ने नीरज और सीबीआई निरीक्षक विनोद कुमार पांडे पर मुकदमा चलाने के दिल्ली हाई कोर्ट के आदेश को बरकरार रखा।**
- **यह मामला उस समय का है जब नीरज सीबीआई के संयुक्त निदेशक थे। आरोप है कि उन्होंने और निरीक्षक पांडे ने एक आई आर एस के भाई को धमकाया व गाली गलौच की थी।**

नयी दिल्ली, 10 सितंबर। उच्चतम न्यायालय ने दिल्ली पुलिस आयुक्त के पद से सेवानिवृत्त नीरज कुमार और एक अन्य अधिकारी के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने के दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश को बुधवार को मुहर लगा दी।

न्यायमूर्ति पंकज मिथल और न्यायमूर्ति प्रसन्ना बी वराले की पीठ ने उच्च न्यायालय के आदेश को बरकरार रखा। यह मामला उस समय का है जअ नीरज सीबीआई संयुक्त निदेशक थे, उन पर और तत्कालीन सीबीआई निरीक्षक विनोद कुमार पांडेय पर एक आईआरएस अधिकारी के भाई विजय अग्रवाल को वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी के खिलाफ शिकायत वापस लेने के लिए मजबूर करने का का आरोप है। उन पर इसी मामले में अभद्र भाषा का इस्तेमाल करने सहित दुर्व्यवहार और धमकी देने के आरोप हैं।

शीर्ष अदालत ने दिल्ली उच्च न्यायालय के 2006 के आदेश को बरकरार रखते हुए कहा कि कथित अपराध वर्ष 2000 में किया गया था और आज तक मामले की जांच की अनुमति नहीं दी गई है। पीठ ने कहा कि मामले की जांच का आदेश देने में उच्च न्यायालय द्वारा प्रयोग किए गए विवेकाधिकार में हस्तक्षेप करने का कोई उचित कारण नहीं। यदि प्रथम दृष्टया संज्ञेय अपराध बनता है तो मुकदमा दर्ज करना पुलिस का कर्तव्य है। कुमार ने हाईकोर्ट के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी,पर सुप्रीम कोर्ट ने उनकी याचिका खारिज़ कर दी।

नेपाल में हिंसक प्रदर्शन के बाद पीलीभीत में खुफिया एजेंसियां सक्रिय

पीलीभीत, 10 सितंबर। नेपाल में हिंसक प्रदर्शन के बाद पीलीभीत जिले में पड़ोसी देश की सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। भारतीय सीमा पर सीमा सुरक्षा बल और स्थानीय पुलिस ने मंगलवार रात संयुक्त पेट्रोलिंग की।

पूरनपुर क्षेत्राधिकारी प्रतीक दहिया के नेतृत्व में सुरक्षा बलों ने नदी किनारों और ग्रामीण मार्गों की जांच की। सीमा पर तैनात जवानों को संदिग्ध गतिविधियों पर कड़ी नजर रखने के निर्देश दिए हैं। खुफिया एजेंसियों को सीमा पार से होने वाली हर गतिविधि पर विशेष नजर रखने के साथ स्थानीय लोगों को भरोसा दिलाया गया है कि स्थिति पूरी तरह नियंत्रण में है। सुरक्षा एजेंसियों ने लोगों से अफवाहों पर ध्यान न देने की अपील की है। थाना अमरिया पुलिस उत्तराखण्ड सीमा पर कानून-व्यवस्था एवं शांति बनाए रखने के दृष्टिगत सतर्क निगरानी एवं फूट पेट्रोलिंग कर रही है।

सीमा पर चौकसी बढ़ाने के साथ ही आने-जाने वाले लोगों की गहन जांच की जा रही है। पीलीभीत जिले में अफसरों के निर्देश पर माधोटांडा और हजार थाना पुलिस ने एसएसबी के साथ सीमा क्षेत्र में गश्त तेज कर दी है। सीमा पर तैनात सुरक्षाकर्मी हर गतिविधि पर पैनी नजर बनाए हुए हैं। पुलिस के साथ खुफिया तंत्र भी सक्रिय कर दिया गया है ताकि संदिग्ध गतिविधियों पर तत्काल कार्रवाई हो सके। सीमा पर प्रवेश करने वाले और बाहर जाने वाले हर व्यक्ति की जांच की जा रही है, साथ ही वाहनों की तलाशी भी ली जा रही है।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि मौजूदा हालात को देखते हुए सुरक्षा के सभी मानकों का पालन किया जा रहा है। स्थानीय लोगों को सतर्क रहने और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना तुरंत पुलिस को देने की अपील की गई है। फिलहाल सीमा क्षेत्र पूरी तरह सुरक्षित है। किसी भी तरह की अप्रिय स्थिति से निपटने के लिए पुलिस और प्रशासन पूरी तरह तैयार है।

पीलीभीत के जिलाधिकारी ज्ञानेंद्र सिंह ने बताया कि सीमा पर प्रशासन की चौकसी बराबर जारी है। पीलीभीत से जुड़ी अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर अभी तक सभी सामान्य स्थिति के समाचार मिले है। उन्होंने बताया कि नेपाल के महेंद्र नगर में प्रदर्शनकारियों के जेल तोड़ने के बाद जेल में बंद दो लोगों को एसएसबी ने पकड़कर उनके घर भेजा है। इसका विवरण अभी मिल पाया है। डीएम ने बताया कि पूरा प्रशासन सीमा पर की हर गतिविधियों पर नजर बनाए हुए है। हम पूरी तरह से तैयार भी है।

अतिरिक्त पीएसी बल भी दिया गया है। जिसकी तैनाती निर्धारित थाना क्षेत्रों में एसएसपी के सहयोग से कर दी गई है। सभी संवेदनशील सीमा से सटे स्थानों पर इंटेलिजेंस एजेंसियों को सक्रिय कर दिया गया है। दो बंदियों के संबंध में एसएसपी पीलीभीत ने बताया इस प्रकार की मिली सूचना पर संज्ञान लिया गया है। उनका पूर्ण विवरण के लिए पीलीभीत पुलिस उत्तराखंड की वनबसा पुलिस से संपर्क में है। इसी बीच तीन एनडीपीएस अपराधियों को एसएसबी ने पकड़कर पीलीभीत पुलिस को सौंपा है। एसएसपी ने कहा कि इनका पकड़ा जाना रूटीन की प्रक्रिया है। इसका नेपाल के घटना क्रम से कोई सरोकार नहीं है।

पीलीभीत के एसएसपी अभिषेक यादव ने बताया कि नेपाल में फँसे भारतीय नागरिकों की सहायता को पुलिस मुख्यालय लखनऊ में अपर पुलिस महानिदेशक कानून व्यवस्था के अधीन क़ानून व्यवस्था शाखा में एक विशेष नियंत्रण कक्ष स्थापित किया गया है। यहाँ पर तीन हेल्पलाइन नंबर तथा एक व्हाट्सएप नंबर 0522-2390257,0522-2724010,9454401674,संचालित रहेंगे, जिनके माध्यम से नागरिक सीधे मदद प्राप्त कर सकेंगे। उन्होंने बताया उत्तराखंड के वनबसा से जुड़ी सीमा और पीलीभीत के सभी सीमावर्ती थानों हजारा,पुरनपुर,माधोटांडा,न्यूरिया को सीमा पर स्थित गांवों मै जाकर निरीक्षण करने और निरंतर पेट्रोलिंग जारी रखते हुए गश्त करने के निर्देश दिए गए है।

एसएसबी के कमांडेंट शेर सिंह ने बताया कि प्रदर्शन लखीमपुर जिले से सटी नेपाल सीमा पर स्थिति धनगढ़ी नगर तक पहुंच जाने के बाद अब पीलीभीत सीमा पर नेपाल जाने आने का मूवमेंट बंद कर दिया गया है। उत्तराखंड के वनबसा और लखीमपुर के गौरी फांटा सीमा सभी की अंतरराष्ट्रीय सीमाएं सील कर दी गई है। नेपाल में यहां के कितने भारतीय फंसे है उनकी क्या स्थिति है इसका विवरण नहीं है। नेपाल से भारत में आने वाले लोगों को एसएसबी वेरिफाई करने के बाद आने की अनुमति दे रही है। उन्होंने बताया कि सीमा पूरी तरह से शांत है।

क्या मुख्यमंत्री महिला रोजगार ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

- **7 सितम्बर को घोषित मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना में हर घर की एक महिला को सरकार अपना काम शुरू करने के लिए दस हजार रु. देगी और 6 माह बाद अगर उसके काम में बेहतर संभावनाएं नज़र आती हैं तो सरकार 2 लाख रु. निवेश करेगी। इस योजना के कारण बिहार की राजनीति में खलबली सी मच गई है।**
- **सवाल यह है कि क्या यह योजना वोट अधिकार की विपक्षी मुहिम को फीका कर देगी।**

2016 में महिलाओं की मांग पर नीतीश कुमार ने बिहार में शराबबन्दी कर दी। भले ही वह नीति विवादास्पद रही हो तथा आलोचकों ने शराब के अवैध व्यापार और राजस्व की हानि के आरोप लगाये हों, लेकिन राजनैतिक रूप से नीतीश कुमार ने एक ऐसे राजनेता की प्रतिष्ठा अर्जित कर ली, जो महिलाओं की ओर विशेष ध्यान देता है।

छात्राओं के लिए साइकिल योजना, स्कूल यूनिफॉर्म, छात्रवृत्ति और स्टाइपेन्ड, और बाद में "जीविका" स्वयं सहायता समूह जैसी योजनाएं, जिनसे आज 1.4 करोड़ से अधिक महिलाएं जुड़ी हैं, ने नीतीश सरकार को ग्रामीण महिलाओं की जिंदगी का अभिन्न हिस्सा बना दिया है। हर नीति का संदेश एक ही था, राज्य आपकी बात ध्यान से सुन रहा है और नीतीश आपके मार्गदर्शक हैं।

इस रणनीति के परिणाम चुनावों में साफ दिखे हैं। 2010 से लगातार बिहार में महिलाएं पुरुषों से अधिक संख्या में मतदान कर रही हैं। 2015 के विधानसभा चुनावों में महिला-पुरुष वोटिंग का अंतर लगभग 4 तक पहुंच गया। 2020 में भी महिलाओं ने पुरुषों को पीछे छोड़ते हुए, बड़ी संख्या में मतदान कर किंगमेकर की भूमिका निभाई। ग्रामीण बिहार में मतदान के दिन महिलाओं की लंबी कतारें अब एक स्थायी तस्वीर बन गई हैं।

ये आंकड़े महिला-केन्द्रित कल्याणकारी योजनाओं के साथ नीतीश के निरन्तर जुड़ाव को दर्शाते हैं। जब अन्य राजनीतिक दल कभी जातिवाद, कभी लोकलुभावन वादों में उलझे रहे, नीतीश ने एक स्थायी महिला-आधारित समर्थन वर्ग तैयार किया, जो राजनीतिक तूफानों में भी उनके साथ खड़ा रहा। उन्होंने गठबंधन भले ही बदले हों, भाजपा का साथ छोड़कर, आर जे डी तथा कांग्रेस के गठबंधन में चले गये हों, या फिर भाजपा के साथ आ गये हों, लेकिन उनकी महिला-केन्द्रित नीतियां निरन्तर जारी रही हैं।

2005 से लेकर 2025 तक, बिहार की राजनीति नीतीश कुमार के इर्द-गिर्द घूमती रही है तथा वे एक साथ, राजनीतिक उत्तरजीवी, रणनीतिकार और स्थिरता का प्रतीक बने रहे हैं।

2005, 2010, 2015, और 2020 हर विधानसभा चुनाव में नीतीश के नेतृत्व वाली गठबंधन की ही सरकार बना है।

2009, 2019 और 2024 के लोकसभा चुनावों में भी नीतीश ने एनडीए को बड़ी जीत दिलाईं-2009 में 40 में से 32 सीटें, 2019 में 39 सीटें तथा 2024 में 30 सीटें।

2014 का चुनाव छोड़ दें, जब जे डी (यू) ने अकेले लड़कर सिर्फ 2 सीटें जीतीं, लेकिन तब भी 16.04 उसने वोट शेयर हासिल किया। 2020 में जे डी यू केवल 43 विधानसभा सीटें जीत सका था, लेकिन उसका असली जनाधार यथावत बना रहा था।

यह स्थायित्व बताता है कि नीतीश का समर्थन -आधार मुश्किल दौर में भी आसानी से कम नहीं होता। भाजपा के लिए नीतीश सिर्फ बैकअप नहीं, बल्कि एक "फोर्स मल्टीप्लायर" हैं।

नेपाल के फंसे यात्रियों को लेकर दिल्ली से रवाना हुए विशेष विमान

नयी दिल्ली, 10 सितंबर। नेपाल में पिछले तीन दिनों से जारी हिंसा के कारण यहां फंसे नेपाली नागरिकों को लेकर एयर इंडिया और इंडिगो के विशेष विमान बुधवार को काठमांडू के लिए रवाना हो गए।

नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू ने आज सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर बताया कि काठमांडू हावाई अड्डा बंद होने के कारण भारत में फंसे नेपाली नागरिकों को आज एयर इंडिया और इंडिगो के विशेष विमानों से उनके देश भेजा गया है तथा आने वाले दिनों में ऐसी और उड़ानों का संचालन किया जाएगा।

काठमांडू में आज शाम हवाई अड्डे पर फिर से सेवा बहाल कर दी गई। गुरुवार से भारतीय विमान सेवा कंपनियां दिल्ली और काठमांडू के बीच नियमित उड़ानों का संचालन करेंगी।

नेपाल में हिंसा के बीच सोनौली बॉर्डर पर हाई अलर्ट

महराजगंज, 10 सितंबर। पड़ोसी देश नेपाल में हिंसक प्रदर्शनों और उपद्रव को देखते हुए भारत-नेपाल की अंतरराष्ट्रीय सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। इसी क्रम में सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) के उप महानिरीक्षक मुन्ना सिंह ने सोनौली बॉर्डर का निरीक्षण किया और सीमा क्षेत्र की सुरक्षा का गहन जायजा लिया।

निरीक्षण के दौरान डीआईजी ने सीमा चौकियों पर तैनात जवानों को हमेशा सतर्क रहने और हर गतिविधि पर पैनी निगाह बनाए रखने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि नेपाल में अशांति के कारण भारत की सीमा पर किसी भी प्रकार की संदिग्ध गतिविधि को किसी भी हाल में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

उधर नेपाल में हालात बिगड़ने के बाद नेपाली सेना ने मोर्चा संभाल लिया है, जबकि भारत की ओर से यूपी पुलिस और एसएसबी के जवान पूरी तरह मुस्तैद हैं। सीमा से लगे इलाकों में गश्त तेज कर दी गई है और स्थानीय खुफिया एजेंसियों को भी अलर्ट मोड पर रखा गया है। गौरतलब है कि नेपाल में राजनीतिक अस्थिरता और सरकार विरोधी प्रदर्शनों ने हिंसक रूप ले लिया है। प्रदर्शनकारी कई स्थानों पर सरकारी कार्यालयों को निशाना बना चुके हैं। स्थिति को काबू में करने के लिए नेपाल सरकार ने सेना की तैनाती की है, वहीं भारतीय सुरक्षा एजेंसियां सीमा पर हर गतिविधि पर करीबी नजर बनाए हुए हैं।

डीआईजी मुन्ना सिंह ने कहा "भारत-नेपाल की खुली सीमा पर मौजूदा हालात में विशेष सतर्कता बरतने की आवश्यकता है। हमारे जवान हर परिस्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। सीमा पर शांति, सुरक्षा और कानून-व्यवस्था बनाए रखना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है।"भारत-नेपाल की मित्रता और खुले बॉर्डर की परंपरा के बीच मौजूदा हालात ने सुरक्षा एजेंसियों की जिम्मेदारी और भी बढ़ा दी है।

भारतीय दूतावास ने की नेपाल में फंसी भारतीय युवती की मदद

नयी दिल्ली, 10 सितम्बर। नेपाल में भारतीय दूतावास ने उग्र विरोध प्रदर्शनों के बीच फंसी भारतीय युवती उपासना गिल से संपर्क कर उसे जरूरी मदद पहुंचायी है। इस युवती ने एक वीडियो जारी कर कहा था कि प्रदर्शनकारियों ने उस होटल में आग लगा दी जहां वह ठहरी हुई थी। उसने कहा था कि प्रदर्शनकारी उनके पीछे लाठी तथा डंडे लेकर दौड़ रहे हैं और उन्होंने किसी तरह अपनी जान बचायी है। युवती ने वीडियो में भारत सरकार से मदद की गुहार लगायी थी। उसने बताया कि वह वॉलीबाल लीग से संबंधित एक आयोजन के सिलसिले में काठमांडू गयी थी।

इसके बाद विदेश मंत्रालय ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा कि उसे भारतीय दूतावास के माध्यम से मदद पहुंचाई गयी है।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2009/28296 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600